वीर सेवामन्दिर सस्ती ग्रन्थमाला
का
द्वितीय पुष्प

जैन महिला शिक्षासंग्रह

संपादक
पं० परमानन्द जैन शास्त्री

प्रकाशक
वीर सेवा मन्दिर
सरसावा जि० सहारनपुर

प्रथमबार
२०००

वीर नि० सं० २४७६

मूल्य
लागत मात्र
एक रुपया

प्रस्तावना

भारतीय धर्मोंमें जैनधर्मका महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसके अहिंसादि सिद्धान्त लोकोपयोगी और आत्मकल्याण करने वाले है। उन पर चलनेसे आत्मा अपना पूर्ण विकास कर सकता है इन सिद्धान्तोंके सर्व साधारणमें प्रचारका अभाव देखकर हृदयमें एक गहरी ठेस लगती है कि इन सार्वजनीन सिद्धान्तोंका प्रचार क्यों नहीं हुआ? यदि उनका प्रचार हो तो कैसे हो? आजकल जैन साहित्यके ग्रन्थोंका जो प्रकाशन हो रहा है उन ग्रन्थोंका मूल्य अधिक होनेसे सर्व साधारण उन्हें खरीद नहीं सकते, अतएव वे जैन धर्मके लाभसे वंचित ही रह जाते हैं। जैनधर्मका साहित्य उन्हें सुलभतासे मिल सके और उसका अध्ययन कर वे आत्महित साधन कर सकें इसी पवित्र भावना-को लक्ष्यमें रखते हुए श्री १०५ पूज्य क्षुल्लक चिदानन्दजीकी प्रेरणासे वीर सेवा मन्दिरके तत्त्वावधानमें 'सस्ती-ग्रन्थमाला'-की स्थापनाकी गई है जिसका उद्देश्य स्वाध्याय प्रेमी पाठकोंको लागत मूल्यमें ग्रंथोंको प्रकाशित कर देना है। ग्रथमालासे इस समय पद्मपुराण मोक्षमार्गप्रकाश रत्नकरण्डश्रावकाचार, श्रावकधर्मसंग्रह, सुखकी झलक, सरल जैनधर्म चारों भाग, जैनमहिला शिक्षासंग्रह और छहढाला इन आठ ग्रन्थोंके प्रकाशनकी योजना की गई है, जिनमें छहढाला छप गया है महिला शिक्षा संग्रह आपके हाथमें है, और शेष ग्रंथ छप रहे हैं।

जैन स्त्री समाजमें अभी तक स्त्रियोपयोगी साहित्यका प्रायः अभावसा बना हुआ है। जो कुछ थोड़ासा साहित्य लिखा गया है वहभी अपने ढंगका निराला है। पठन क्रमका साहित्य तो लिखाही नहीं गया। अतः इस सम्बन्धमें अच्छे एवं ठोस साहित्यके निर्माण करने और प्रकाशित होनेकी जरूरत है। इस सदुद्देश्यको लेकर 'जैन महिला शिक्षा संग्रह' नामकी इस पुस्तकको प्रकाशित किया गया है और यह उक्त ग्रंथ मालाका द्वितीय पुष्प है। इसके संग्रह और प्रकाशनका उद्देश्य स्त्री-शिक्षाको प्रोत्साहन देना और उन्हें अपने कर्तव्य-की दिशाका ज्ञान कराना है। इसका संग्रह पूज्य क्षुल्लक चिदानन्द-जीकी प्रेरणानुसार किया गया है। इसमें बा० सूरजभानजी वकील पं० जयदयालमलजी और पं० दीपचन्दजी वर्णी इन तीन विद्वानों-की कृतियोंका—गृहदेवी, 'श्रावक वनिता बोधिनी' और 'ससुराल जाते समय पुत्रीको माताका उपदेश' नामकी तीनों पुस्तकोंका—क्रम से संग्रह किया गया है जिसके लिए लेखक महानुभावोंका मैं बहुत आभारी हूं। दो-तीन प्रकरण पं० सुन्दरलालजी न्यायतीर्थकेभी संकलित हैं जिन्हें उन्होंने अपनी स्वरुचि अनुसार लगाए हैं। पुस्तकका प्रूफरीडिंगभी उन्होंने किया है जिसके लिये वे भी धन्यवादार्ह हैं। पुस्तकमें प्रेस आदिकी जो अशुद्धियां रह गई हों उन्हें दूसरे संस्करणमें शुद्ध कर दिया जायगा। आशा है पाठक इस महिलोपयोगी पुस्तकको पसन्द करेंगे।

—परमानन्द जैन

विषय सूची

मुद्रक—रूपवाणी प्रिंटिंग हाउस, २३ दरियागंज, दिल्ली।

जैनमहिला शिक्षासंग्रह

स्त्री-पुरुषका कर्तव्य

स्त्री और पुरुष गृहस्थरूपी गाड़ीके दो पहिये हैं। गृहस्थकी गाड़ी इन्ही दोनोंसे चलती है। पुरुषका काम है कि वह घरके बाहर जाकर और मिहनत मशक्कत उठा कर दो पैसे कमा कर लावे और स्त्रीका काम है कि वह घरमे रह कर घरका काम चलावे। बाल-बच्चोका पालन-पोषण करना, बड़े बूढ़ों और रोगियोंकी टहल सेवा करना, सारे कुटुम्बके खाने-पीने पहनने-ओढने का प्रबन्ध करना और घरको आनन्दका स्थान बनाये रखना स्त्रीके मुख्य कार्य हैं। स्त्रीके इन कामोंकी वजहसे ही उसको गृहणी या घरवाली कहते हैं। स्त्रीका यह काम है भी असलमें ठीक ही, क्योंकि घरकी सारी शोभा और घरका सारा आनन्द स्त्रीसे ही है। दिनभरकी मेहनत करके जब पुरुष हारा थका शामको अपने घर आता है, और अपनी स्त्रीका प्रसन्न मुख गुलाबके फूलकी तरह खिला हुआ देखता है, तो उसकी दिन-भरकी सारी थकान दूर हो जाती है वह अपनी सारी चिन्तायें भूलकर स्वर्गका आनन्द लेने लगता है।

अपने पतिको घर आते देख स्त्रीने अपने गोदके बच्चेके हृदयमें उसके पिताके आनेका चाव पैदा करना शुरू कर दिया है। 'आहा! पिताजी आगये, हमारे नन्हेंके लालाजी आगये। वह आये, वह आये, वह देखो आरहे हैं' यह कहती जाती है और बच्चेको गोदमें कुदा-कुदा कर उसके पिताकी तरफ लेजारही है और दरवाजे तक पहुंच गई है। बच्चेने भी अपने बापको देखकर आगूँ-आगूँ करना शुरू करदिया है, और अपने बापकी तरफ देख-देख कर प्यारभरी निगाहसे मुस्करा रहा है और पिता की गोदीमें जानेके वास्ते गिरा पड़ता है। बापने भी चट उसको गोदीमें लिया है और छातीसे लगाकर अपने कलेजेको ठण्डा किया है। दूसरा लड़का जो इससे कुछ बड़ा है बापकी टाँगोंसे लिपट गया है और तोतली बोलीमें मीठी-मीठी बातें बना रहा है। बापने उसको भी दूसरी गोदीमें उठालिया है और उसकी बातें सुनना शुरू करदिया है। तीसरा लड़का जो उससे भी बड़ा है पाठशाला में पढ़ता है वह भी बापके सामने आकर खड़ा हो गया है और बड़े चावसे अपनी पाठशालाकी बातें सुना रहा है। इससे भी बड़ी एक कन्या है जो हाथमें पंखालिये खड़ी है और पिताजी को हवा करनेके वास्ते उतावली होरही है। स्त्री भी बहुत ही चावमें आकर हँसती हुई पतिके चारों तरफ फिर रही है और खुशीकी बातें बना-बनाकर बच्चोंको हसा रही है और अपने पतिको प्रसन्न कर रही है।

इस प्रकार वह पुरुष अभी बैठनेभी नहीं पाया है कि घरमें

घुमते ही ऐसे आनन्द सागरमें मग्न होगया है जिसका कुछभी बार और पार नहीं है। आरामसे निश्चिन्त बैठकर जब वह अपनी स्त्रीकी प्रेमभरी बातें सुनेगा तबतो सचमुचही उसके हृदयकी कली खिलजायगी और उसको वह आनन्द आयगा जिसका कुछ ठिकाना नहीं होसकता है। और जब वह अपने सब बाल-बच्चों और स्त्रीके साथ बैठकर बड़े प्रेमके साथ खाना खायगा और अनेक प्रकारकी गपसप सुनेगा और सुनायेगा, तबतो उसको चारों तरफ आनन्दही आनन्द दिखाई देने लगेगा और वह अपने सबही प्रकारके रोग, शोक और चिन्ताएँ भूल जायगा।

लेकिन जब वह स्त्री कुछ दिनके वास्ते अपने बापके यहाँ चली जाती है और उसके सब बाल-बच्चेअर्थात् गरकी सारी बाग़-बाड़ीभी उसही के साथ जाती है तब पुरुषको अपने घरमें स्वर्गका समाँ नहीं दिखाई देता है जो उस स्त्रीके होतेहुए बनरहा था। हाँ, जब वह स्त्री फिर अपने बापके यहाँसे वापस आजाती है और सारे रोनेभोने (बाल-बच्चे) साथ लाती है, तब फिर वह आनन्दसे भरजाता है और हर तरफ खुशीही खुशी दिखाई देने लगती है। इस वास्ते घर असलमें स्त्रीहीसे है और वहही सच्ची घरवाली है और सिर्फ घरवालीही नहीं है बल्कि घरकी असली शोभा और घरकी साक्षात् देवीही है। घरका सारा आनन्द और सारी खुशी स्त्रीके साथ है। स्त्रीहै तो जंगलमें भी मंगल है, फूँसकी झोपड़ीमें भी स्वर्गका वास है, स्त्री नहींहै तो

शीश महलोंका रहनाभी फीका है। किसीने सचकहा है कि 'बिन घरनी घर भूतका डेरा।'

परन्तु ये सब बातें तबही हैं जबकि स्त्री तमीजदारहो, बुद्धिमानहो, पवित्रआत्मा और शान्त स्वभाववालीहो, और सुखी रहने और दूसरोंको सुखी रखनेका विचार रखतीहो, मान माया लोभ क्रोध आदि कषाय जिसके काबूमें और अपनी पाँचों इन्द्रियाँ जिसके वशमेंहों, हृदय जिसका सब जीवोंकी दयासे भराहुआ हो, जो सदा सबका भला चाहतीहो, ऊँच-नीचका जिसको विचारहो, बुरे भलेको जो अच्छीतरह समझतीहो, जरूरत और बे-जरूरत और वक्त-बेवक्तकी जिसको पहिचानहो, जो सहनशील, सन्तोषी, हरहालतमें खुश रहनेवाली, अपने कर्तव्यको अच्छी तरह जाननेवाली, अपनी हैसियतके अनुसार घरका काम चलाने वाली थोड़ेमें भी आनन्दके साथ गुजारा करनेवाली, आगेके नफे नुकसानको विचारनेवाली और घरका ऐसा इन्तजाम करनेवालीहो, जिससे सारीउम्र आनन्दमें ही व्यतीत होजावे।

लेकिन अगर स्त्री बदतमीज़ हो, नासमझ हो, बेवकूफ हो, फूहड़ हो, लड़ाका हो, कलिहारी हो, हानि लाभका कुछ ज्ञान न रखती हो, नफे नुक़सानको बिल्कुल न समझती हो, आगेका कुछ भी विचार न रखनेवाली हो, अपने भलेकी बात न सुनना चाहती हो, जिद्दी और हठीली हो, मान, माया, लोभ, क्रोधके वशमें होकर अपने आपेमें न रहती हो, और सदा अपनेआपको और दूसरोंको दुखी करनेवाली हो, तो फिर वह घर सुखका स्थान

और आनन्दका धाम बननेकी जगह महा विपत्तिका स्थान और संकटोंका धाम बन जावेगा, और उस घरमें सदा रोग, शोक और तरह तरहके क्लेशोंका ही डेरा रहने लगेगा।

ऐसी स्त्री पतिके घर आने पर उसको प्रसन्न करनेकी जगह उसके चित्तको और भी ज्यादा दुखी करती हैं, हंसी खुशीकी बातें सुनाकर और उसकी चिन्ताओंको भुलाकर उसके हृदयको प्रफुल्लित करनेकी जगह सोच-फ़िक्रका ऐसा भारी पाट उसकी छातीपर रख देती हैं कि उसका दिल टूट जाता है और वह अपनी जिन्दगीसे भी बेजार होजाता है। पतिने अभी घरमें अच्छी तरह क़दम भी नहीं रक्खा कि वह स्त्री चिल्लाना शुरू कर देती है और ताने मारमारकर कहने लगती है कि किसी दूसरेके भी जान है कि नहीं जो कि दो घण्टेसे रसोई तैयार करके भी बैठी-बैठी सूख रही हूँ, क्या घर काट खावेगा जो यहाँ आते हुए भी डर लगता है, और खैर, अगर किसी दूसरेकी फिक्र नहीं है तो क्या अपने पेटकी भी फिक्र नहीं है जो रोटी खाना भी नहीं सूझता है। इस प्रकारके ताने सुनता-सुनता जब वह दो क़दम आगे बढ़ता है तो क्या देखता है कि सात वर्षका छोटा बेटा जमीनपर पड़ा रो रहा है। यह क्यों रोया, बार-बार पूछनेपर भी इसका कुछ जवाब नहीं मिलता। आखिर बहलाने फुसलानेपर बेटी इतना बताती है कि माँने मारा। क्यों मारा, इसका जवाब देनेका साहस बेटीको किसी तरह भी नहीं होता। लाचार पतिने डरते-डरते अपनी स्त्रीसे पूछा। फिर क्या था! मानो शेरनीको

छेड़ दिया। इतनी बात सुनते ही वह एकदम अपनी बेटी पर बरस पड़ी, और खूब दिल खोलकर गालियोंकी बौछार करनी शुरू कर दी और कहने गी कि अंधी, दीदो फूटी, रांड, कोढ़न मैंने कब मारा है मैने तो इसको उँगली भी नहीं लगाई। इस तरह जो मुँहमें आया बकबकाकर फिर अपने पतिकी तरफ मुँह करके कहने लगी कि नाशगयेसे ही क्यों नहीं पूछते जो पड़ा रोरहा है। इतना लाड़ लड़ाते और करते कराते भी जिसका मन नहीं भरता है और बिगाने द्वार मांगता फिरता है। भला इस गढ़ेमें दधनेको या कोई खिलौना नहीं जुड़ता जो औरोंसे मांग-मांगकर लाता है। मैंने तो इस जल मरनेको कुछ कहा भी नहीं दूसरेको चीज वापस दे आनेको समझाया था, पर यह आग लगा क्या किसीकी कुछ कहा माने है। बस इतनीसी बातपर क्या रोहाराट मचा रक्खा है। इस प्रकारकी अनेक बातें होकर बहुत कुछ मगजपच्ची करनेके पीछे बहुत देरमें बड़ी मुश्किलसे पतिको यह मालूम हुआ कि आज दोपहरको बहूजीका अपनी जिठानीसे खूब जंग बजा है। बच्चेको इस लड़ाईका कुछ हाल मालूम नहीं था। पाठशालासे आकर रोजकी तरह अपनी ताईकी लड़कीके पास खेलनेको चला गया और वहांसे एक खिलौना ले आया, जिसको देखकर बहूजी आगबबूला होगईं। पहिले तो बच्चेको मारा कि तू अपनी ताईके यहाँ क्यों गया था और खूब डराया धमकाया कि खबरदार अगर फिर उसके घर गया तो टांग तोड़ दूंगी और जीतेको गड्ढेमें गाढ़ दूंगी। फिर उससे खिलौना

छीनकर अपनी जिठानीके घर फेंक आई। तबसे वह बेचारा कमबख्तीका मारा पड़ा रो रहा है। यह हाल मालूम करके पति बेचारा अपनी भाभीके पाससे वह खिलौना फिर ले आया और बच्चेको खिलौना देकर मनाने लगा। यह देखकर बहूरानी ऐसी तड़की और भड़की मानो रेलका इंजन ही फट गया हो और अपने पतिको एक-से-एक बढ़िया ऐसी गालियाँ सुनाईं कि पास-पड़ौसवालोंका भी कलेजा दहलने लगा। फिर जब बकती-बकती थक गई तो दोनों हाथोंसे अपने आपको पीटना शुरू कर दिया और ऐसा पीटा कि सारा बदन नीला होगया। पति बेचारा खड़ा खड़ा कांप रहा है और बाहर भाग जाना चाहता है, लेकिन डरता है कि वह कहीं बच्चोंपर ही अपना गुस्सा न उतारने लगे जिससे इन बेचारोंका कचूमर निकल जाय। इस वास्ते उसको न वहाँसे जाते बनता है और न ठहरते। पर यहाँ तो आजही यह नई बात नहीं हुई है। यहां तो सदा ऐसीही बातें होती रहतीं हैं जिससे उसको ऐसी बातोंकी सोहबतसी पड़ गई है। इस वास्ते उसने ज्यों-त्यों करके मामला निपटा ही लिया और सबने खाना खा लिया।

प्यारी बेटियो! तुम ही विचारो कि जिस घरमें ऐसी स्त्री हो वह घर स्वर्गपुरी है या नर्ककुण्ड? और वह स्त्री आंनन्दकी देवी है या डायन चुड़ैल? खैर, हम ऐसी स्त्रियोंके विषयमें ज्यादा लिखकर तुम्हारा दिल दुखाना नहीं चाहते बल्कि सिर्फ इतना ही कहते हैं कि यह बात स्त्रीके अपने अख्तियारमें है कि

चाहे वह स्वर्गकी देवी बन जावे और चाहे डायन, और यह भी उसके ही बसमें है कि वह अपने घरको आनन्दका स्थान बना दे या दुख भोगनेका कैदखाना। इतना ही नहीं, बल्कि सच पूछो तो दुनियाभरका सारा बिगाड़ सुधार स्त्रीके ही आधीन है। अंग्रेजोंकी स्त्रियोंके बुद्धिमान होनेके कारण आज अंग्रेज लोग ऐसे शक्तिमान हो रहे हैं कि वह हमारे ऊपर हुकूमत कर रहे है, और हिन्दुस्तानकी स्त्रियोंके मूर्ख हानेके सबबसे ही आज हिन्दुस्तानके लोग महामूर्ख और दुनियांभरके गुलाम बने हुए हैं।

मनचाही योग्य सन्तान उत्पन्न करने का उपाय

मेरी बहिनो ! तुम यह बात भलीभाँति जानती हो कि सबही लोग यह बात चाहते हैं कि हमारी सन्तान सबसे ज्यादा बुद्धिमान, बलवान और रूपवान पैदा हो। मगर यह बात तुममेसे शायद ही किसीको मालूम हो कि ताकतवर या कमजोर, अक्लमन्द या बेवकूफ खूबसूरत या बदसूरत, नेकचलन या बदचलन गरज हर किस्मकी बुरी भली औलाद पैदा करना स्त्रीके हाथोंमें है, क्योंकि गर्भके दिनोंमे ६ महीने तक जैसे भाव, जैसे विचार और जैसे आचरण गर्भवती स्त्रीके रहते है वैसाही स्वभाव बालकका गर्भमे बनता रहता है और पैदा होनेपर वैसे ही स्वभावका वह होता है। यह बात कोई झूठ बहकाने या उल्टी-सुलटी गप्प मारनेकी नहीं है बल्कि शास्त्रोंमे लिखी है और बड़े बड़े विद्वानों और डाक्टरोंने इसको भलीभांति आजमाकर देख लिया है और अच्छी तरहसे सिद्ध कर दिया है। सतयुगके जमानेमें बड़े-बड़े साहसी, पराक्रमी और धर्मात्मा जिनका यश आजतक दुनियाँमे गाया जारहा है अपनी माताओंके अच्छे विचारोंके ही कारण ऐसे पैदा हुए थे, और आजकल जो कमजोर आलसी, कमहिम्मत, बेहौसला, कर्महीन, कुकर्मी और दुराचारी मनुष्य दिखाई दे रहे हैं वे सब उनकी मूर्ख माताओंके बुरे विचारोंका फल है। आजकल, जापान अमरीका, और इग्लिस्तान

की स्त्रियाँ जो बुद्धिमान और उत्तम स्वभाववाली हैं, ऐसी बलवान, बुद्धिमान, साहसी और पुरुषार्थी सन्तान पैदा करती हैं कि जो दुनियाँभरमें नाम पैदा करती हैं। इनके बड़े-बड़े कामोंको देखकर सब लोग अचम्भेमें आकर यह कहने लगते हैं कि धन्य है उस कोखको जिसमेंसे यह रत्न निकला है और धन्य है उस माताको जिसने यह लाल पैदा किया।

मेरी बहिनो! गर्भके दिनोंमें माताके जैसे विचार रहते हैं उससे बालकका सिर्फ अच्छा बुरा स्वभाव ही नहीं बनता, बल्कि बालकके रंग रूपका बनाना भी माताके अख्तियारमें है। आजकल विलायतकी अनेक स्त्रियोंने दावेके साथ सन्तान पैदा की है, और जैसी औलाद पैदा करनेका दावा बांधा है, गर्भके दिनोंमें वैसाही विचार रखकर वैसीही औलाद पैदा करके दिखा दी है। इस वास्ते इस बातमें रत्तीभर भी सन्देह नहीं है कि दुनियाँभरको बुरा या भला बना देना स्त्रियोंके ही हाथ में है। इस छोटीसी किताबमें वह सारी बातें तो नहीं लिखी जा सकतीं हैं जिनके करनेसे जैसी चाहें सन्तान पैदा होसके। यहां तो मोटे रूपमें इतना ही लिख देना काफी है कि जो स्त्री गर्भके दिनोंमें हरवक्त आनन्दमें मग्न रहेगी, हंसी खुशीमें ही दिन वितावेगी, किसी बातपर भी क्रोध न लावेगी, किसी हालतमें भी क्लेश न मानेगी, चाहे कुछ भी हो जाय पर वह अपने मनमें शोक न आने देगी, सोच-फिकरको टालेगी, प्रेम और प्रीतिसे सबको अपना बनावेगी सबहीका भला चाहेगी, अपने दुश्मन तकका भी बुरा न मना-

वेगी, डाहको बिल्कुल भी अपने मनमें न आने देगी, बल्कि दूसरोंकी बढ़ती देखकर, दूसरोंको आनन्दमें मग्न पाकर अंगमें फूली न समावेगी, हरवक्त ऊंचे भाव, ऊंचे विचार, उदारचित्त और खुला दिल रक्खेगी, सबका आदर सत्कार करेगी, मनमें हौंसला रक्खेगी. हरवक्त काममें लगी रहेगी, हरवक्त उजली और साफसुथरी बनी रहेगी, और हृदयको शुद्ध और पवित्र रक्खेगी, उसकी औलाद जरूर ही खूबसूरत, सुडौल, मजबूत, गठीली, ताकतवर, बहादुर, हंसमुख, सबको प्यारी लगनेवाली, बड़े हौसले रखनेवाली, बाप-दादाका नाम रोशन करनेवाली, कुछ करके दिखानेवाली नेक और धर्मात्मा पैदा होगी।

परन्तु जो स्त्री गर्भके दिन लड़ने-भिड़ने, रोने-धोने, सोच-फिकर, सुस्ती और काहिलीमें बितावेगी, मैली-कुचैली रहेगी, मनमें खोटे भाव रक्खेगी और दूसरोंका बुरा मनावेगी उसकी औलाद भौंडी. बेढंगी, बदसूरत, लचर-पचर, रोगी, कमहिम्मत, कम हौसला, चिड़चिड़े मिजाजवाली, बदचलन, बदनीयत, पापी और दुराचारी पैदा होगी, और मां बापको सदा दुःखही देती रहेगी और उनका नाम भी डुबायेगी।

इसमें सन्देह नहीं है कि अच्छी सन्तान पैदा करनेकी यह आसान तरकीब मालूम करके सबही स्त्रियोंके मनमें यह चाव पैदा होगा कि हमभी गर्भके दिनोंमें अपने उत्तम-उत्तम भाव बनाकर और हंसीखुशीमें समय बिताकर अच्छी सन्तान पैदा करनेकी कोशिश करे। लेकिन मेरी बहिनो, यह बात याद रक्खो

कि जो स्त्री पहलेहीसे अपने भाव उत्तम रखनेकी आदत डालेगी और सदा आनन्दमें ही आयु बितानेका अभ्यास रक्खेगी वही गर्भके दिनोंमें भी अपने भाव अच्छे रख सकेगी और नौ महीने सुख-चैनसे बिता सकेगी। परन्तु जो स्त्री सदा तो रखती है कलह और क्लेश, हमेशा तो विचारती रहेगी सबकी खोटी, और सदा अपने भाव रक्खेगी घटिया, और गर्भके दिनोंमें चाहेगी अपने भाव ऊचे रखना और नौ महीने तक प्रसन्नचित्त रहना जिससे उसके भी उत्तम सन्तान पैदा हो तो वह हर्गिज भी ऐसा न कर सकेगी। इस कारण उत्तम सन्तान पैदा करनेकी इच्छा रखनेवाली स्त्रियोंको चाहिये कि वे सदाही ऊंचे विचार रखने और हँसी-खुशीमें आयु बितानेका अभ्यास रक्खें, और सबसेही प्यार मुहब्बतका बर्ताव करने और सच्चा प्रेम रखनेका अभ्यास डालें, जिससे हर वक्त ही उनका चेहरा गुलाबके फूलकी तरह खिला रहे और जो कोई एक पलभरको भी उनके पास बैठे, वह उनके उत्तम स्वभावसे ऐसा प्रसन्न होजावे जैसा गुलाबके फूलकी सुगंधिसे, और उनकी बातें भी सदा हरएकके साथ ऐसी मीठी-मीठी और सुहावनी हों मानों मुखसे फूलही झड़ रहे हों।

प्यारी बहिनों! येबातेंभी तुम अच्छी तरह जानती हो कि बच्चा जोकुछ देखता और सुनता है वही सीखता है और वैसाही बनजाता है। अंग्रेजोंके बच्चे अपने माँ-बापको अंग्रेजी बोलता हुआ सुनकर बिना सिखायेही अंग्रेजी बोलना सीखजाते हैं और हमारे बच्चे हमको हिन्दी बोलता देखकरही हिन्दी बोलने लगते

हैं। यही कारणहै कि गवारोंके लड़के गवारू बोली बोलते हैं और शहरोंके लड़के शहरी। इसी प्रकार जो बच्चे ऐसे घरोंमें पलते हैं जहाँ हरवक्त दगा, फ़िसाद और कलह रहता है, वे बच्चे भी सदा कलह करनेवालेही होते हैं। नित्यकी कलह और क्लेशोंके देखनेसे उन बच्चोंका कोमल हृदयभी सुकड़ जाता है और हृदयके सुकड़नेसे उनकी तन्दुरुस्तीभी खराब होजाती है। वे सदा रोगीही रहते हैं और कभी उभरने नहीं पाते। उनका हृदयभी ऐसा कमजोर होजाता है कि सारी उम्र उनसे कोई हौसलेका काम नहींहो सकता। बल्कि जरा-जरासी बातमें उनको घबराहट पैदा होजाती है और दिल धड़कने लगता है। लेकिन जो बच्चे ऐसे घरोंमें पलते हैं जहां हरवक्त प्रेम और प्रीतिकी ही बातें होती रहती हैं और चारों तरफ आनन्दही आनन्द दिखाई देता है हृष्ट-पुष्ट, ताकतवर, हौसलेवाले और हँसमुख होते हैं। उनका चेहरा अनारके दानेकी तरह सदा चमकताही रहता है। और वे हरहालतमें खुशही रहते हैं। इसवास्ते बच्चा पैदा होनेके बादभी बच्चेका अच्छा उठान होने और तन्दुरुस्त रहनेके वास्ते माताको आनन्दमें रहना और घरके सबही लोगोंको प्रसन्न रखना बहुतही जरूरी और लाजमी है।

मेरी बहिनो ! ऊपरकी बातोंसे तुमने अच्छी तरह जान लिया है कि दुनियाँ भरको बुरा-भला बनाना, संसार भरमें सुख शांति या दंगा-फिसाद फैलाना, लोगोंको नेक या बद बनाना, धर्म या पाप फैलाना, यह सब स्त्रियोंकेही अख्तियारमें है।

क्योंकि नौ महीने तक बच्चेको गर्भमें रहते समय और पैदा होने परभी चार-पाँच वर्षोंतक माताकाही प्रभाव बच्चों पर पड़ता है और उनका अच्छा या बुरा उठान माताकेही हाथमें होता है। फिर वेही बच्चे बड़े होकर संसारको चलाते हैं। इसवास्ते स्त्रियों की जिम्मेदारी बड़ी भारी है और उनका कर्त्तव्य बहुतही महान् है, जिसको पूरा करनेके लिए उनको बहुत होशियार, समझदार, सहनशील और बड़े ऊँचे भाववाली होना और सदा प्रसन्नचित्त रहना बहुतही जरूरी है। मर्द अगर मूर्ख है, बदतमीज है, नासमझ और दंगई है तो वह अपनी इन बुराइयोंके कारण खुदही धक्के खायगा और तकलीफ उठायेगा। वह तो दिनभर घरसे बाहर ही रहता है। इस वास्ते उसकी बुराइयोंका असर बच्चों पर नहीं पड़ सकेगा लेकिन अगर स्त्री मूर्ख और नासमझ है तो उससे सिर्फ स्त्रीकाही नुकसान नहीं होगा, बल्कि उससे आगेकी संतानका सत्यानाश होजायगा और सबही स्त्रियोंके मूर्ख होनेसे देशका देश नाश होजायगा। देखो अगर मर्द कोई कच्ची-पक्की चीज खाले तो उससे सिर्फ उसकेही शरीरमें रोग होगा सिर्फ उसकेही बदनमें दर्द उठेगा, लेकिन अगर स्त्री कोई कच्ची पक्की चीज खालेतो उससे उस स्त्रीके रोगी होनेके सिवाय उस बच्चेकोभी नुकसान पहुँचेगा जो उसके गर्भमें हो या उसका दूध पीताहो। इसी प्रकार अगर मर्द किसीसे लड़ता है वा दिन-भर कलह करता है तो वह खुदही क्लेश उठावेगा, लेकिन अगर स्त्री क्रोध करती है या लड़ती है और क्लेश मानती है तो

उससे उसके बच्चेको भी बड़ाभारी नुकसान होता है जो गर्भमेंहो या दूध पीताहो। जिसरोज माताको क्रोध आयाहो, किसीसे लड़ीहो, या उसने किसी प्रकारकी चिन्ता या क्लेश मानाहो, उस दिनतो बच्चेको दूध पिलाना बिलकुलही मना लिखा है। उस दिनका उसका दूध जहरके समानहो जाता है, जो बच्चेको अनेक प्रकारके रोग पैदा करता है। परन्तु जिसदिन माताका हृदय कमलके फूलकी तरह खिलरहाहो चित्त प्रसन्नहो उसदिनका दूध बच्चेके वास्ते अमृतके समान है, जो पुराने रोगोंको दूर करके बच्चेको हृष्ट-पुष्ट बनानेवाला है।

इन सब बातोंसे यह साफ सिद्ध होताहै कि स्त्रीको सदा प्रसन्न रहना बहुतही जरूरी है, जिसका अभ्यास उसको बचपनसे ही करना चाहिए। अर्थात् प्रसन्नमन, शांतचित्त और प्रफुल्ल वदन रहने और उदारहृदय तथा ऊँचेविचार रखनेकी शिक्षा कन्याओंको खासतौर पर देनी चाहिए। उनको सदा मीठीबोली बोलने और ऐसी बातें करनेकी आदत डालनी चाहिए जिससे अपनाभी मन प्रसन्नहो दूसरोंका भी, जिससे अपनीभी भलाईहो दूसरोंकी भी। जिन स्त्रियोंको पहलेसे ऐसा अभ्यास नहीं कराया गया है उनको सोचना चाहिये कि अबतक जो हुआ सो हुआ पर अबतो अपनी आदत सँभाल लेनी चाहिए। ऐसा विचार करके उनको अपने स्वभावको ठीककर लेनेका पक्का इरादा करलेना चाहिए और कुछ दिनोंतक अपने मनको जाँचते रहना चाहिए कि कोई खोटा विचारतो उसमें नहीं आता है, चित्तकी सुख-

शांतिमें कभी कोई गड़बड़तो नहीं पड़ती है, हृदयके आनन्दमें कभी कोई फर्कतो नहीं आता है। जिसवक्त भी वह अपने दिलमें जरासाभी कोई बिगाड़ आता देखे तबही उसको सँभल जाना चाहिए? अपने मनसे उन बुरी बातोंको हटाते रहना चाहिए, और अपने साथके स्त्री-पुरुषोंसे भी कह देना चाहिए कि जब कभी तुम मुझमें जराभी क्रोध आता देखो या मुझको किसी प्रकारका क्लेश करती पाओ तो उसही दम मुझको चेतादिया करो जिससे सावधान होकर मैं अपने मनसे उन बुरे भावोंको निकालदिया करूँ और अच्छे-अच्छे भाव मनमें भरकर और खुशीकी बातें याद करके अपने चित्तको शात और प्रफुल्लित बना लिया करूँ। इस प्रकार कुछ दिनोंके अभ्याससे क्रोध करने और अपने आपको दुखी रहनेकी आदत छूट जावेगी और तुम हरवक्त खुश रहने लगोगी, और दूसरोंको भी खुश रख सकोगी। अपने घरको स्वर्गपुरी बनादोगी, और घरकी सच्ची देवी बन जाओगी।

दाम्पत्य-प्रेम और स्वास्थ्य

गृहस्थ सुख भोगने और घरका पूरा आनन्द उठानेके लिये स्त्री और पुरुषको चाहिए कि वे दोनों अपना हृदय एक बनालें और आपसमें अपने मनको ऐसा साफ रक्खें कि स्त्रीके दिलकी सब बातें पुरुषको और पुरुषकी सब बातें स्त्रीको इस प्रकार दिखाई देती रहें जिसप्रकार शीशेमें अपना मुँह दिखाई देता है। जब हम शीशेमें अपना मुँह देखते हैं तो हमारे मुखकी सुन्दरताके साथ-साथ हमारे मुखका दाग धब्बा या टेढ़ापन तिर्छापनभी दिखाई दिये बिना नहीं रह सकता। इसीप्रकार अगर स्त्री और पुरुषका हृदय आपसमें साफ होगा तो स्त्रीको पुरुषके और पुरुषको स्त्रीके सब गुण-दोष साफ-साफ मालूम होते रहेंगे। लेकिन अगर उनके मन में फरक है और दोनोंका हृदय एक नहीं है तो वे अपने दोषोंको छिपाने और मायाचार करनेकी कोशिश करेंगे, जिससे उनमें आपसमें वह प्रसन्नता नहीं रहेगी, जो दोनोंका हृदय एक होनेकी अवस्थामें रहती। ऐसी हालतमें विवाहकी असली गरज नष्ट होकर अनेक प्रकारकी खराबियां पैदा हो जावेंगी। इस वास्ते स्त्री और पुरुषको उचित है कि वे अपनी बुरी भली कोईभी बात आपसमें न छिपावें और दोनों अपना हृदय एकही बनाये रखनेकी कोशिश रक्खें। मेरी बहिनो! तुमको सोचना चाहिए कि जिस प्रकार तुम्हारी बुराइयां तुमसे छिपी नहीं रहती हैं और अपनी बुराई मालूम होजाने

पर तुम अपने आपको मार नहीं डालती हो बल्कि, उन बुराइयोंको दूर करनेकी कोशिशही करती हो। इसी प्रकार अगर तुम्हारी बुराइयां तुम्हारे पतिको मालूम हो जावेंगी तो वहभी तुमको मार नहीं डालेगा बल्कि तुममेंसे बुराइयां दूर होजानेकी कोशिशही करेगा और जिस प्रकार तुमको अपनीही बुराई न मालूम होनेसे वह बुराई तुममें बढ़ती ही रहेगी। इस प्रकार तुम्हारी बुराई तुम्हारे पतिको न मालूम होनेसे बढ़ेगी ही। स्त्री पुरुषको एक दूसरेकी बुराई भलाई मालूम हो जानेसे दोनोंका हृदय एक हो जाता है और इससे अनेक प्रकारकी भलाइयां पैदा होती हैं और दोनोंकी बुराइयां दूर होने लगती हैं परन्तु आज हिन्दुस्तानमें यह एक उल्टी कहावत प्रसिद्ध होरही है कि पुरुष अपना भेद स्त्री को न दे। इस कहावतकी बदौलतही हिन्दुस्तानके घर नर्क-स्थान हो रहे हैं। और गृहस्थ का सुख नष्ट-भ्रष्ट होकर हमारा जीवन पशुओंके समान होगया है। ऐसी दशामें स्त्रियोंको उचित है कि वे अपना हृदय अपने पतियोंके सामने खोल कर रख दें और उनसे कोईभी बात न छुपावें जिससे पुरुषोंमें भी सच्चा प्रेम जाग उठे, और वे भी अपनी कोई बात स्त्रियोंसे न छिपाया करें जिससे फिर हमारे घर स्वर्गके आनन्द-धाम हो जावें और स्त्री पुरुषोंकी सबही बुराइयां दूर हो जावें।

मेरी बहिनो! तुमको जानना चाहिए कि मनुष्यों और पशुओंमें इतनाही फर्क है कि पशुओं में विवाह नहीं होता। इस वास्ते उनकी विषय वासनाओंकी कोई सीमा नहीं होती और वह

दुनियां भरके सबही पशुओंके पीछे अपने मनको भटकाते फिरते हैं। लेकिन मनुष्योंमें स्त्री पुरुषोंका आपसमें विवाह करके उनको खूॅटेसे बाँध दिया जाता है, जिससे पुरुषके साथ सब प्रकारके भोग भोगकर अपनी विषय-वासनाओंको पूरा करलें और दुनियां भरके स्त्री-पुरुषों पर अपने मनको भटकानेसे रुके रहें। मेरी बेटियो और बहिनो! यह कथन जो मैंने इस समय छेड़ा है, बेशर्मीका कथन नहीं है बल्कि परम धर्मका कथन है,, क्योंकि अगर यह कथन बेशर्मीका होता तो कन्याका पिता क्यों पंचायत इकट्ठी करके अपनी बेटीका हाथ एक परदेशी आदमीको पकड़ाकर उनको आपसमें सब प्रकारके भोग भोगनेकी परवानगी दिया करता, और ऐसा करनेमें क्यों बड़ी भारी खुशी मनाया करता है? मेरी प्यारी बेटियो, यह किसी प्रकारभी शरमकी बात नहीं बल्कि धर्मकी बात है। विवाहके वक्त इसकी वजहसे तो श्रीभगवानका पूजन और हवन किया जाता है और दोनों तरफकी पंचायत बुलाई जाती है कि उस वक्त पुरुषको एक स्त्री और स्त्रीको एक पुरुष देकर उनको शीलव्रत धारण करा दिया जाता है और इस बातकी दृढ़ प्रतिज्ञा करा दी जाती है कि वे दोनों अपनी सब प्रकारकी विषय वासना आपस हीमें पूरी करते रहें और दुनियां भरके अन्य सबही स्त्री पुरुषोंको बहिन भाईके समान समझें, जिससे वे अनेक पापों से बचकर पुण्य के भागी बनें। लेकिन अत्यन्त शोककी बात है कि हिन्दुस्तान के पुरुष शील का पालन करना अपने वास्ते

जरूरी नहीं समझते बल्कि सिर्फ स्त्रियोंके वास्ते ही व्रतको जरूरी समझते हैं। कोई २ तो स्त्रियोंमें भी सिर्फ अपने घरकी स्त्रियोंके ही वास्ते इस व्रतको जरूरी मानते हैं। यही कारण है कि बहुत से लोग निर्लज्ज होकर खुल्लम-खुल्ला रण्डियोंका नाच कराते हैं और बाप, बेटा, बाबा, पोता और बिरादरीके बड़े-बड़े पच सरदार और बड़े-बड़े धर्मात्मा और पण्डित इकट्ठे होकर उसका नाच देखते, खोटे-खोटे गीत सुनते और बेधड़क हँसी मजाक करते हैं और जराभी नहीं शरमाते हैं। इसके सिवाय कोई कोई पुरुषतो ऐसे ऐसे कुकर्म करते हैं और गिद्धकी तरह दुनियां भरकी स्त्रियों पर ऐसा चीज़ झपट्टा मारना चाहते हैं। मानो वे मनुष्य ही नहीं बल्कि राक्षस या गलीमें फिरते हुए कुत्ते हैं, लेकिन ऐसा करनेसे उनकी जात-पांतमें कुई फर्क नहीं आया और बिरादरीमें वह ऐसेही ऊँचे बने रहते हैं जैसे कि और लोग। इससे साफ सिद्ध है कि मर्दोंके कुशील होनेसे लोगोंको उतनी ग्लानि नहीं है जितनी कि होनी चाहिए थी। यही कारण है कि हिन्दुस्तानमें आजकल घोर अन्धकार फैला हुआ है और लोगोंका चाल-चलन खराब होकर सब धर्म-कर्म नष्ट-भ्रष्ट हो गया है और बहुत नीच अवस्था होगई है। हिन्दुस्तानकी इस नीच अवस्थाका साक्षात् सबूत यह है कि छोटे छोटे बालक भी गलियोंमें खेलते हुए आपसमें गन्दी गालियां देते रहते हैं और बहुत बेशर्मी की बातें बकते रहते हैं। इससे ज्यादा नीच अवस्था की बात यह है कि वे उन बच्चोंके मां बाप और भाई

बहिन बराबर यह बात देखते और सुनते रहते हैं कि हमारे बच्चे आपस में खेलते हुए दिन भर सड़ी-सड़ी गालियाँ बकते हैं। परन्तु वे लोग इस बातकी कुछभी परवाह नहीं करते। बल्कि कोई कोई बच्चेतो अपने घरमें भी बेहूदा गालियां बकते रहते हैं और उनके घरके स्त्री पुरुष कुछ भी ख्याल नहीं करते, यहाँ तक कि कोई-कोई लाड़ला बच्चा तो अपनी मां बहिन तकको बेशर्मी की गालियां दे बैठता है और वे हँस कर टाल देती हैं बल्कि अगर कोई उस बालकको झिड़के तो बुरा मानती हैं।

प्यारी बहिनों! हिन्दुस्तानके मर्दो के दिलमें यह बात बिठा देना कि शीलवान होना उनके वास्ते भी उतना ही जरूरी और लाजमी है जितना स्त्रियोंके वास्ते। आजकल ऐसा कठिन होरहा है कि निरे उपदेशसे वे हरगिजभी माननेवाले नहीं हैं, क्योंकि सब ही धर्म ग्रन्थोंमें शीलका उपदेश मर्दोंके वास्ते भी उसही प्रकार दिया गया जैसाकि स्त्रियोंके वास्ते। लेकिन मर्दोंपर शास्त्रके इस कथनका कुछभी असर नहीं होता। इस कारण मेरी धर्मात्मा बहिनों और प्यारी बेटियो! अब यह सिर्फ तुम्हारेही अख्तियार में रह गया है कि तुम अपने पुरुषों को परम शीलवान और सच्चा धर्मात्मा बनाकर अपने अपने घर को पुण्यधाम बना लो, और इस तरह सब ही घर सुधर कर यह हिन्दुस्तान सचमुच ही पवित्र भूमि और धर्म-स्थान बन जावे। तुम घरकी देवी हो और शीलवती हो। इस वास्ते अगर तुम कोशिश करो तो कुछ मुश्किल नहीं है कि तुम्हारे पुण्य प्रताप से तुम्हारे पति भी

शीलवान होजावें, और यदि पहलेसे शीलवान हों तो आगामीको बिगड़ने से बचे रहें और इस भारतकी पवित्र भूमिके पुरुषोंके माथेसे कुशीलका कलंक दूर हो जावे। इसके सिवाय तुम्हारे वास्तेभी तो बहुत ही लज्जा और बेइज्जतीकी बात है कि तुम्हारी जैसी शीलवती स्त्रीका पति शीलसे ऐसा गिरा हो कि जिन बेशरम, बदमाश और हरामजादी स्त्रियोंकी शकलभी नहीं देखनी चाहिए उनही स्त्रियोंका नाच देखने, गाना सुनने और रुपये देनेमें उसको घृणा न आतीहो और पराई स्त्रियोंका ख्याल मनमें लाने और चार दोस्तोंमें बैठकर बेहूदा बातें करने को बुरा न समझता हो। इस वास्ते मेरी बेटियो! मैं धर्म की दुहाई देकर तुमसे पुकार पुकारकर कहता हूं कि तुम अपने अपने पतिको परम शीलवान और पाक साफ बनानेको अपना सबसे बड़ा जरूरी और सबसे बड़ा काम समझो। अपनी चतुराईसे अपने पतिको अपने ऊपर ऐसा रिझाओ और अपने प्रेमसे उसका हृदय ऐसा भरपूर करदो कि फिर उसके मनमें किसी दूसरेके प्रेमका ख्याल आनेको जगह ही न रहे। अगर तुमको देखकर उसका चित्त ऐसा प्रसन्न हो जाया करे फिर उसको किसी प्रकारकी अभिलाषा ही न रहे और तुमसे हंस बोलकर उसका मन ऐसा भर जाया करे कि फिर दुनियांकी सब ही शोभा उसका फीकी लगने लगे, तो उसके परम शीलवान होने और उसका मन शुद्ध रहनेमें कोईभी संदेह नहीं हो सकता है। यही विवाहकी असली गरज है। इस ही एक

गरजके वास्ते तुम अपने मां बाप और भाई बहिनोंको छोड़कर पराये लोगों में लाकर रक्खी गई हो। यही तुम्हारा धर्म और यही तुम्हारा परम कर्त्तव्य है। अगर तुम अपने पतिको पूरी तरह नहीं रिझा सकी हो उसके मन को अच्छी तरह नहीं बहला सकी हो तो निश्चय मानो कि तुम्हारा विवाह होना, अपने बापका घर छोड़ना और माँ बहिनोंसे जुदा होना बिलकुल ही फिजूल हुआ।

मेरी बहिनो ! सबसे खराबीकी बात इस मामलेमें यह होरही है कि तुम्हारी मां तुम्हारे विवाहसे पहिले तुमको रोटी बनाना और घरके कामकाज करना तो जरूर सिखा देती है। यह सब काम सिखाना वह अपना परम कर्त्तव्य समझती है लेकिन अपने पतिका दिल बहलाना जो तुम्हारा खास जरूरी काम है वह तुमको कोई नहीं सिखाता। माताएं अपनी बेटियोंको ऐसी बातें सिखाना शर्मकी बात समझती हैं। लेकिन यह बड़ी भारी भूल है, क्योंकि अगर यह शरम होता तो माताएं अपनी बेटियोंका विवाह ही न किया करती और अपनी बेटियोंको शरमका कोथला बनाकर अपने घरही रक्खा करतीं।

मेरी बहिनो ! पतिके दिल बहलानेकी सारी तरकीबें तो इस छोटीसी पुस्तकमें नहीं लिखी जासकतीं इस कारण कुछ मोटी-मोटी बातें यहां लिखे देते हैं जिनको पढ़कर तुम अपनी बुद्धिसे और भी सैकड़ों तरकीबें निकाल सकोगी।

सबसे पहिले तो तुमको यह चाहिये कि तुम अपने घरको

सदा साफसुथरा और लिपापुता रक्खो जिसमें घुसतेही आदमीका चित्त प्रसन्न होजावे और वहांसे जानेको जी न चाहे। इससे मेरा यह मतलब नहीं है कि तुम शीशमहल बनवाओ या कली चूनेके मकान चिनवाकर उसमें बेलबूटे खिचवाओ। नहीं, बल्कि मेरा मतलब यह है कि मिट्टीके कच्चे मकानों और फूंसकी झोंपड़ियों को ही ऐसी सुथरी बनाकर दिखाओ कि जिसमें बैठनेको सबका जी चाहे और किसी तरह भी जी न उकतावे। इसके लिये बड़ी-बड़ी तस्वीर टांगने और जरीके परदे लटकाने या कीमती असवाब मंगानेकी जरूरत नहीं है। बल्कि जरूरत है घरकी पूरी-पूरी सफाईकी और घरके सारे असबाबको तरतीबके साथ लगाने की। अगर किसी फूहड़ स्त्रीको किसी शीशमहलमें भी रख दिया जावे तो वहाँ भी वह अपने तमाम असबाबको इधर-उधर बखेर कर उस शीशमहलकी सारी शोभाको बिगाड़ देगी। परन्तु सुघड़ स्त्री अपने असबाबको तरतीबके साथ रखकर फूंसकी झोंपड़ीको भी शोभायमान बना देगी। स्त्रीको चाहिए कि वह हरएक चीजके रखनेके वास्ते अलग अलग स्थान कायम करले और हमेशा उस चीजको वहीं रख दिया करे, मैले-कुचैले कपड़ोंको कभी इधर-उधर न पड़ा रहने दे बल्कि उनको लपेट और बांधकर अलग रख दिया करे, मैले या झूठे बरतन हर्गिज बिखरे न पड़े रहने दें बल्कि तुरन्त ही उनको उठा उठाकर उनके अलग-अलग स्थान-पर रख दिया करे, साग-सब्जी या मेवाके छिलके या इसही किस्मका कोई और कूड़ा जमीनपर न पड़न दे बल्कि एक टोकरी

में डालती रहे और अगर कुछ जमीनपर पड़ भी जावे तो उसी वक्त कूंचीसे साफ करदे, इसमें कभी जरा-सा भी बिलम्ब न करे। घरकी सब चारपाइयां बहुत हल्की और बहुत थोड़ी कीमतकी, लेकिन हमेशा खूब कसी हुई रहनी चाहिए। कोईभी चारपाई कभी ढीली न पड़ी रहनी चाहिये। न उनमें कभी कोई खटमल होने देना चाहिये। जब कभी खटमलका जरा भी सन्देह हो तबही उनको झाड़ देना चाहिये। वैसे भी कभी-कभी उनको झाड़ते रहना चाहिये। सुबहही सब चारपाइयां अलहदा खड़ी कर देनी चाहियें और जो बिछी रहें वह बैठनेके लिये खाली रहनी चाहिये। उनपर अटकलपच्चू कपड़े नहीं लादते रहना चाहिये। कपड़ोंके वास्ते खूंटियां, अलगनियां और बिलंग होनी चाहिये जिनपर सबके कपड़े अलग-अलग टंगे हुए खूबसूरत मालूम हों। कपड़े कभी मैले-कुचैले नहीं पहिनने चाहिये और न बच्चोंको पहिनाने चाहिये। लेकिन कभीभी बारीक, कीमती और ऐसे कपड़े नहीं बनाने चाहिये जिनके धुलवानेमें दिक्कत हो। कपड़े हमेशा मोटे, मजबूत और बहुत सस्ते होने चाहिए और जल्दी-जल्दी धुलवाते रहना चाहिए।

दूध पीते बच्चे माताके बिछोनेपर मलमूत्र कर देते हैं इस वास्ते माताके बिछौनेमें हमेशा बदबू होजाया करती है ऐसी स्त्री को चाहिये कि वह अपने बिछौने—बेनागा—रोजमर्रा—साबुनसे धोती रहे और सस्ते-सस्ते कपड़ोंके कई बिछौने बनाले, उनको रोजमर्रा बदलती रहे और जल्दी-जल्दी धोबीसे धुलवाती रहे।

बच्चोंवाली स्त्रीको चाहिए कि वह और सौ चीजोंमें कमी करदे, लेकिन अपने बिछौनोंके ज्यादा बनवाने और जल्दी-जल्दी धुलवानेमें हर्गिज कमी न करे। वह चाहे सौ कामोंमें गफलत करदे, लेकिन अपना बिछौना और बच्चोंके कपड़ोंको धोने-सुखाने, बदलने और उन्हें पूरा-पूरा साफ रखनेमें कभी गफलत न करे—गरज चाहे जो इन्तजाम करना पड़े पर बच्चेवाली स्त्रीके बिछौने और बच्चोंके पोतड़े और अन्य कपड़ोंमें कभी एक रत्तीभर भी बू नहीं आनी चाहिये। आजकलकी बहुतसी स्त्रियां रेशमके चमकदार कपड़े बनानेमें और उनपर जरी गोटा लगानेमें बहुत कुछ रुपया खर्च कर देती हैं लेकिन सफाई रखने और बदबूके दूरकरनेका खयाल नहीं करतीं। जितना रुपया वे आजकल कपड़ोंमें लगाती हैं उनको चाहिए कि उससे आधा रुपया लगाया करें; लेकिन रेशमजरीकी जगह मोटे और सस्ते कई-कई कपड़े बनाया करें, जिससे वे जल्दी-जल्दी धुलकर साफसुथरे रहें और बदबू भी दूर होती रहे। ऐसा करनेसे सिर्फ घरकी शोभाही नहीं बढ़ेगी बल्कि घरके सबही छोटेबड़े तन्दुरुस्त रहेंगे और कोई किसीभी किस्मकी बीमारी घरमें न फटकने पावेगी।

प्यारी बहिनो! तुम समझ सकती हो कि घरकी इस तरह सफाई रखनेसे घर कैसा सुहावना और मनभावना होजावेगा और उसमें बैठकर तुम्हारे पतिको कैसा आनन्द आवेगा और अगर उसको आध घण्टा बैठनाहो तो घण्टा भर बैठकर जावेगा, बल्कि वहांसे उठनेको भी जी न चाहेगा। परन्तु यदि घर मैला कुचैला

होगा, उसमें सब असबाब बेतरतीब पडा होगा तो एक पलभी वहा बैठनेको जी न चाहेगा और आतेही चटपट रोटी खाकर बाहर भागनाही सूझेगा। इसवास्ते घरकी सफाई, खूबसूरती और असबावकी तर्तीब पर तुमको बहुत ध्यान देना चाहिए। मकानकी सबही नालिया, खस्सी और बदररौ हररोज पानी डालकर खूब साफ होनी चाहिए जिससे उनमेभी जराभी मैला या बदबू न रहे। टट्टीकोभी हररोज धुलवाना चाहिए और टट्टीका फर्श और पानी निकलनेका रास्ता सब कली चूनेसे बहुत पक्का बनवाये रखना चाहिए और इसीके फर्शके जराभी उखडजाने पर तुरन्तही उसकी मरम्मत होजानी चाहिए। टट्टीकी सफाईकी तरफ हिन्दुस्तानियोंका बहुतही कम ध्यान है। इसी वास्ते उनके मकानमे सदा बदबू रहती है जो बीमारी पैदा करनेका कारण होती है। बच्चोंके टट्टी जानेके वास्तेभी अलग कोई जगह कायम कर देनी चाहिए। दहलीज (दोबारीमे), आगनमे, या छज्जे पर बच्चोंको टट्टी करनेके लिए नहीं बिठाना चाहिए। परन्तु यदि किसी लाचारीसे ऐसीही जगह बिठाना पडेतो तुरन्त उनकी टट्टी उठाकर पाखानेमे फेंक आनी चाहिए अगर किसी दिन यह न होसके तो तुरन्त उसपर इतनी राख मिट्टी डालदेनी चाहिये जिससे यह न मालूमहो कि यहा टट्टी पडी हुई है। गरज दहलीज, आगन और छज्जाभी ऐसाही साफ रहना चाहिये, जिससे किसीको भी घृणा न आवे और साराही मकान सुन्दर और सुहावना मालूम हो।

रसोई के मकानको भी बहुत साफ रखनेकी ज्यादा जरूरत

है। रसोईकी दीवारें धुएंके कारण बहुत जल्द काली होजाती हैं, इस वास्ते उनको दूसरे-तीसरे दिन लीपते रहना चाहिये और रसोईका फर्श पक्का चूनेका होना चाहिये। खाना जहांतक होसके रसोईसे अलग किसी दूसरेही मकानमें खाना चाहिये, क्योंकि कितनीभी सफाई रक्खी जाय, तोभी धुएंके भरे रहने और पानीकी पेपाबसे किचपिच होनेसे रसोईमें बैठकर इत्मीनानसे नहीं खाया जाता है, बल्कि जल्दी मुँहमें टुकड़े ठूँस ठूँस करही पेट भरना होता है। विचारनेकी बात है कि जब आदमीको इत्मीनानके साथ खानाभी नसीब न हुआ तो, घरमें औरही क्या सुख मिलेगा। इसवास्ते मुनासिब यहीहै कि रसोईसे अलग किसी साफ सुथरे मकानमें ही खाना खाया जावे और सब बाल-बच्चोंके साथ मिलकर खूब हसी खुशीके साथ बड़े इत्मीनानसे खाया जावे। स्त्रीभी अपने पुरुषके साथ खानेमें जरूर शरीकहो और दोनों मिल-जुलकर बहुत प्यार मुहब्बतके साथ बहुत धीरे-धीरे खाना खावें, जिससे अच्छी तरह हजम होकर खानाभी अंग को लगे और स्त्री-पुरुषको गृहस्थका परमानन्द प्राप्त होकर दिनभर उनका मनभी प्रसन्न रहे। यद्यपि आजकलकी स्त्रियोंको हमारी यह बात अनोखी मालूम होगी लेकिन हम यह निश्चय रूपसे कहते हैं कि बिना ऐसा किये पुरुषोंको परम शीलवान बनाना और उनका मन इधर-उधर भटकने से बचाना बहुत मुश्किल है, क्योंकि रातको आकर सो रहनेके सिवाय दिनमें तो पुरुषका घर पर आना बहुत करके खाना खानेके वास्तेही होता

है। इस कारण उस समयही अगर उसको घरमें पूरा आनन्द न मिले, तो फिर यही मानना पडेगा कि घर आनन्दका स्थानही नहीं है। घरमें खानेका पूरा आनन्द न मिलनेके कारणही अक्सर लोग शामका पका खाना खाने घर नहीं आते हैं, बल्कि बाहर अपनी दुकान या बैठक परही मंगालेते हैं और दोपहरको रोटी खानेके वास्तेभी बहुत लाचारीसे आते हैं और वे खाकर तुरन्त ही बाहर भाग जाते हैं, एक पलभर भी घर ठहरना नहीं चाहते। अगर घर खाना खानेमें पुरुषोंको भी पूरा आनन्द मिलने लगे तो फिर वह हर्गिजभी अपना खाना बाहर न मँगाया करें और खाना खानेके बहानेसे आकर घरपर बहुत देरतक ठहरा करे और घरको पवित्र बनाया करें।

स्त्रीको उचित है कि जबतक पुरुष घरमें रहे, तबतक वह घरका कोईभी कामधन्धा न करे, बल्कि हरतरहसे अपने पुरुषके चित्तको प्रसन्न करनेमे ही लगीरहे। पुरुषके घरपर आनेके कुछ समय पहलेसे घरका सब कामधन्धा छोड़कर और घरको बिल्कुल साफ सुथरा बनाकर खुदभी साफसुथरे कपड़े पहिनकर बैठजावे और बच्चोंका भी हाथ मुँह धोकर उनको साफ सुथरे कपड़े पहिनादे, जिससे पुरुषको सारे घरमे बागबाड़ी ही खिली हुई दिखाई दे और वह अपने घरमे आना ऐसा समझे, मानो किसी सुगन्धित फूलोंके हरेभरे बगीचेमे ही पहुँच गयाहो। स्त्रीको यहभी उचित है जितनी देरतक पुरुष घरमें रहे उतनी देरतक जहांतक उससे होसके किसी प्रकारके रन्ज, क्लेश या सोच

फिक्रकी बात न करे और न किसी दूसरेको करनेदे, बल्कि वह सारा समय खूब हँसी खुशीमें ही बितावे। लेकिन अगर कोई बहुत ही चिन्ताकी बातहो जिसको पुरुषसे कहे बिना या पुरुषसे उसमें सलाह लिए बिना किसी तरहभी न सरताहो तो उसको किसी बहुतही फुर्सत और इत्मीनानके समयमें कहे, और इस तरह थामकर कहे, जिससे पुरुषपर उस चिन्ताका बोझ न पड़ने पावे और वह उसको बहुत ही मामूली बात समझे।

स्त्रियोंको उचित है कि पराया पुरुष चाहे अपना नजदीकी रिश्तेदार ही क्यों न हो तो भी उसके सामने आने और उससे बातचीत करने से जहाँतक होसके बचती ही रहे और कभी भी कोई अश्लील बात मुँहसे न निकाले। लेकिन आजकल कुछ ऐसा उल्टा मामला हो रहा है कि स्त्रियां अपनी सास ननद या अन्य स्त्री-पुरुषोंके सामने अपने पतिके सामने तो नहीं आती हैं और अगर सामने आती भी हैं तो घूँघट निकाल कर ऐसी सकुचीं सकुचाई सी आती हैं मानो उनको किसी बिल्कुल अनजान पुरुषके सामने आना पड़ गया है। लेकिन वे ही स्त्रियाँ बेधड़क अपने बराबरके देवर- ननदोई और बहनोईके सामने आकर उनसे बेधड़क-बिल्कुल खुल्लमखुल्ला-हँसी ठट्ठा करती हैं और जराभी नहीं लज्जातीं। विवाह शादियों में तो बहू बेटियाँ सब इकट्ठी होकर बाजारोंमें गन्दे गन्दे सीठने देती फिरती हैं और जरा भी नहीं शरमाती, जिससे साफ सिद्ध होता है कि स्त्रियांभी शीलके असली स्वरूपको नहीं जानतीं और कुशीलसे

इतनी घृणा नहीं करतीं जितनी कि होनी चाहिए। स्त्रियोंका यह व्यवहार बहुतही धिक्कार देनेके लायक है और ऐसी हालतमें वह किसी तरहभी अपने पुरुषोंको शीलवान बनानेके योग्य नहीं हो सकती हैं। अपने पतिसे पर्दा करने और पराये पुरुषोंसे पर्दा न करनेका स्त्रियोंका यह अनोखा स्वांग बहुतही आश्चर्य जनक और हँसीके योग्य हो रहा है मर्दोंमें इस बातकी चर्चा उठाकर स्त्रियोंकी खूब हँसी उड़ाई जाती है। तमाशा यह है कि बड़े घरोंकी स्त्रियां अपना यह स्वांग औरभी अच्छी तरह बनाती हैं, क्योंकि वह अपने पतिके सामने आती हुई तो बहुत ही शरमाती है और उसके लिये बहुत बड़ा घूँघट निकालती है, लेकिन नौकर-चाकर, ब्राह्मण, धोवर, रसोइया और कहार हर वक्त उनके घरों में घुसे रहते हैं जिनसे न उनको किसी प्रकार का पर्दा होता है और न लज्जा। बड़े घरोंकी स्त्रियां अपने अनोखे तरीकेको ही अपने घरकी बड़ाई और हया शरमका पूरापूरा पालन समझती हैं, और इसके खिलाफ चलना वह अपने बड़प्पनको बट्टा लग जाना मानती हैं। लेकिन मेरी शीलवती बहिनो किसी नौकर या रसोइया और ब्राह्मणको अपने घरके अन्दर न घुसने दो, जनानेमें पराये मर्दका आना बड़े शर्म और लज्जाकी बात है। इसके सिवाय घरके सब काम स्त्रियोंको अपने हाथसे करना जरूरी भी तो है। सारे काम अपने हाथसे न करें तो कमजोर और बीमार होजावें और उनकी सन्तान भी कमजोर ही पैदा होगी। मर्द तो दिनभर

घरसे बाहर रहते हैं, इस वास्ते इधर-उधर चलने फिरने ही से उनका खाना हज़म हो जाता है और शरीर बलवान रहता है। लेकिन स्त्रियां घरके ही अन्दर रहती हैं, इस वास्ते अगर वह घरका कामकाज नहीं करेंगी तो अपना खाना किसी तरह भी हज़म न कर सकेंगी। आजकल अमीर घरकी स्त्रियोंको चक्कर आना, शरीरमें बाय आजाना, बदन गिरा रहना और अनेक तरहके रोग लगे रहना इस कारणसे होता है कि वह अपने शरीरसे मिहनत नहीं करती हैं। हमारी समझसे तो जबतक हिन्दुस्तानकी स्त्रियां चक्की पीसना, धान कूटना और गाय-भैंस आदिकी टहल करना, रोटी बनाना, वर्तन साफ करना, लीपना-पोतना और घरके छोटे बड़े सब ही काम-काज अपने हाथसे न करने लगगी, तबतक हिन्दुस्तानके लोग रोज-रोज ज्यादा कम-जोर, सुस्त और कम हिम्मत हो होते रहेंगे और नई-नई किस्म के रोगोंमें ही फंसे रहेंगे।

खैर—अगर किसी अमीर घरकी स्त्रियां बिना नौकरके रहना बिल्कुल ही अपनी शानके खिलाफ समझती हों तो उनको चाहिए कि वह जितनी चाहें स्त्रियां नौकर रखलें, लेकिन गैर मर्दोंको किसी तरह भी घरके अन्दर न फटकने दें। वे अपने देवर, नन-दोई और बहनोईके सामने इस प्रकार ही घूंघट निकालकर आवें जिस प्रकार कि वह आजकल अपने पतिके सामने घूंघट निकालकर आती हैं और उनसे इसही प्रकार बहुत सकुचाकर बात करें जिस प्रकार वे आजकल अपने पतिसे करती हैं।

लेकिन सबही स्त्रियोंको चाहिये कि वह अपने मां-बाप और सास-ससुरके सामने भी अपने पतिसे घूंघट न निकालें और उसही प्रकार खुले मुँह उसके सामने आवें जिस प्रकार पतिकी माँ-बहिन आती हैं। बेशक सबके सामने स्त्रीको अपने पतिके साथ बहुत शोखी वा हसी मजाककी बात नहीं करनी चाहिए। लेकिन जिस प्रकार पतिकी मां-बहिन खुले मुँह उसके सामने आकर उससे हसी-खुशीकी बातें करती हैं, उस तरह स्त्रीका भी अपने पतिके सामने न आना और हँसी-खुशीकी बात न करना बेहूदा स्वांग और बहुत खराबी पैदा करनेवाला है।

जरा विचार करो कि मर्दोंको दिन भर बाहर ही रहना पड़ता है और खाना खाने या और किसी जरूरी कामके लिये घड़ी दो घड़ीको जो वह घरमें आते हैं उसमें उनको यह आशा रहती है कि कमलकी तरह खिले हुए अपनी स्त्रीके मुखको देखकर और उसकी प्रेम-भरी निगाहको परखकर अपने मनको ठण्डा करेंगे और उसकी चाव भरी बातोंको सुनकर चित्तको शान्त करेंगे। लेकिन घर आने पर मामला बिल्कुल ही उल्टा नजर आता है। यहां तो बहूजी अपने पतिसे पर्दा करती हैं और अगर सामनेभी आती हैं तो बहुत लम्बा घूँघट निकाल कर ऐसी दबी-मिची और डरी-सहमी हुई आती हैं कि मानो उसको किसी ऐसे बिल्कुल गैर और अनजान पुरुषके सामने आना पड़ गया है जिसके सामने आना वह किसी तरहभी पसन्द नहीं करती हैं। फल इस बेहूदा स्वांगका यह हो रहा है कि मर्द बहुत

कम घर आते हैं और आतेभी हैंतो बहुत कम ठहरते हैं। मर्दोंमें ही बेहूदा गपशप उड़ाकर और अपने मनको इधर उधर भटका कर और बहुत कुछ अनहोने काम करके ही अपनी दिल्लगी पूरी कर लेते हैं। वे घरकी फिक्र भूल जाते हैं जिससे बड़े नुकसान पैदा हो जाते हैं और घरका ठीक रीति पर चलना मुश्किल हो जाता है। अगर स्त्रियाँ पतिके घर आनेपर यह अनोखा स्वांग न कियाकरें और पतिके दिलको बहलानेकी पूरी पूरी कोशिश किया करे, तो जरूर उनके पति अपने घर पर ज्यादा देर तक ठहरा करें, घरकी खबर लिया करें, सब प्रकारसे घरका इन्तजाम किया करें और खोटे आदमियोंमे बैठना छाड़कर बुरी-बुरी विषय-वासनाओंसे बचे रहा करें, और सच्चे गृहस्थी बनकर अपनी गृहस्थी को चलाया करे।

प्यारी बहिनो! तुमने बच्चोंको देखा होगा कि वे खेलते समय आपसमे तरह तरहकी छेड-छाड़ करते है, एक दूसरेको चिढ़ाते है झपट्टा मारकर हाथसे चीज छीन लते हैं, अनेक झूठी-सच्ची बातें बनाकर मजाक उड़ाते हैं, एक दूसरेको धक्का देकर गिराते है और खूब हँसते और प्रसन्न होते रहते हैं उनके इस खेलके कारणही उनका वदन प्रफुल्लित रहता है, ताक़त आती है और मन बढता है। तुम यह भी अच्छी तरह जानती हो कि जिस प्रकार बच्चे आपसमे छेड़-छाड़, हँसी-दिल्लगी और दंगा-मुश्ती करके अपना चित्त प्रसन्न करते हैं, उसी प्रकार बड़े भी अपना चित्त प्रसन्न करना चाहते हैं। इसही कारण जब

बराबरकी चार स्त्रियां इकट्ठी होती हैं तो वह भी आपसमें खूब हंसी-मजाक करती हैं, फबतियां सुनाती हैं, तरह तरहकी बातें बनाती हैं, हँस-हँस कर झूठे इलजाम लगाती हैं और झूठमूठ चिढ़ाने की कोशिश करती हैं। यही नहीं, बल्कि चुटकियां लेकर, सुई चुभोकर, एक दूसरेका पल्ला सींकर, गांठ बाँधकर, एकको एकपर धक्का देकर, छीना-झपटी और दंगामुश्ती करके आपसमें बहुत खुश होती हैं और बहुत खिलखिला कर हँसती हैं। स्त्रियोंको अपनी इन तमाम शोखियों और दंगोंका यहां तक चाव होता है कि वह अपने ननदोई या बहनोईको भी यह सब दंगे दिखाती हैं और उनकोभी इन दंगोंमें शामिल करना चाहती हैं। लेकिन वह बेचारा शरमा कर चुपचाप ही अपनी सुसरालकी स्त्रियोंकी यह सब शोखियां देखता रहता है और सिवाय हँस देनेके और कुछ जबाव नही देता, जिससे उन निलज्ज स्त्रियोंको फीका मन करके जल्दी ही वहाँसे हट जाना होता है। हां, अगर कोई उनका ननदोई या बहनोई बेहया होता है और उनके मजाक का पूरा जबाब देता है तो फिर वह स्त्रियां टाले नहीं टलतीं और जबतक उनकी कोई बड़ी बूढ़ी आकर उनको न हटावे तब तक वह वहां से नही हटतीं।

मर्द भी जब दो चार बराबर के इकट्ठे होते हैं तो वह भी आपसमें इसी तरहकी छेड़छाड़ और दंगामुश्ती करके अपना दिल बहलाते हैं लेकिन असलमें पुरुष इस तरहकी छेड़छाड़ अपनी स्त्री ही से करना चाहता है और उसही से छेड़छाड़ करके उसका

मन भर सकता है और उसहीसे दिल्लगी करनेका उसका हक है। लेकिन हिन्दुस्तानकी स्त्रियां बिल्कुल एकान्तमें भी जब अपने पतिके सामने आती हैं, तो वह बिल्कुल ही भोली सूरत बनाकर इस तरह उनके सामने आकर खडी हो जाती हैं मानो नौकरानी या बांदी हो। इसी कारण वह अपने पतिकी छेडछाड और हँसीका कुछभी जबाब नहीं देतीं और चुपचापही सुनती रहती हैं, बहुत किया तो मम्करा देती है या चिडकर रूठ जाती है और कहने लगती हैं कि हमे यह मजाक अच्छा नहीं लगता। इसका फल यह होता है कि मर्दकी दिल्लगी कुछ भी नहीं होती और उसको अपनी दिल्लगी पूरी करनेके लिये चार दोस्तोंमे बैठना पडता है और उन्हींमें अट्टसट्ट बककर या इधर-उधर घूम फिरकर ही वह अपनी दिल्लगी पूरीकरता है। इस दिल्लगीकी भटक मे मर्द बिगडते हैं और तरह तरह के ऐबोंमे फस जाते है।

मेरी बहनो ! यह बात तुम अच्छी तरह जानती हो कि घर में किसी ऐसी स्त्रीके आने पर जिससे बच्चे अनजान हों कोई बच्चा तो उस स्त्रीके सामने शरमा जाता है और गोदमें उठा लेने पर ऐसा चुप चाप और साढला सा बन जाता है मानो बोलना भी नहीं जानता और उस स्त्रीके बराबर पूछने टोकने पर भी कुछ जवाब नहीं देता, बल्कि ज्यादा छेड़नेपर रोनी सूरत बना लेता है। फल इसका यह होता है कि उस स्त्री का मन उस बालक से खुश नहा होता और वह उसको गोदसे उतारकर छोड़

देती है। परन्तु कोई बच्चा ऐसा होता है जो बिल्कुल नहीं शरमाता और बात करने पर पटापट जवाब देता है और जो कोई उसके साथ दंगा करता है वह भी उसके साथ बेधड़क दंगामुश्ती करने लगता है। ऐसे बालकसे सबहीका मन प्रसन्न होता है, सबही उसको प्यार करते है और बहुत देर तक उससे खेलते और दंगा करते है। इसही प्रकार तुमने यह देखा होगा कि जब बच्चे खेलनेके वास्ते इकट्ठे होते हैं तो वह ऐसे बालकको अपने खेलमे शामिल करना नहीं चाहते जो उसके साथ वैसा ही दगा न करना चाहता हो जैसा वे उसके साथ करते हैं। क्योंकि एकतर्फा दंगेसे कभी मन वहलावा नही हुआ करता है। इस प्रकार तुम इस बातको भी निश्चय जानो कि उस स्त्रीका पति भी अपनी स्त्री से हसी-मजाक करके कभो खुश नहीं हो सकता है जो बदले मे बराबर का हँसी मजाक नहीं करती।

मेरी प्यारी बहिनो और बेटियो! मैं ये बाते बहुत हो ज्यादा जरूरी समझकर इस पुस्तकमे लिख रहा हूँ और बुड्ढा होकर वह काम कर रहा हूँ जो तुम्हारी मां को करना चाहिये था घर की स्त्रियोंका अपने पतिके साथ यह अनोखा व्यवहार होने और बिल्ली की तरह भोली नादान बन जानेके कारण ही हिन्दुस्तानके पुरुषोंमें अनेक ऐब आगये हैं और घरके घर बर्बाद होगए हैं। इस वास्ते अगर तुम यह चाहतो हो कि तुम्हारा घर चले, तुम्हारे पति में कोई ऐब न लगे और वह परम शीलवान बना रहे, तो तुम ध्यान देकर मेरी बात सुनो और अपने

पतिके मनको हर तरहसे खुश करने और उसके दिलको बहलाने की तरकीब सीखो और वह एक यही तरकीब है कि अपने बहनोई या ननदोई या किसी गैर मर्दसे किसी तरहका हँसी मजाक मत करो, न उनको किसी तरहकी शोखी दिखाओ, न उनके सामने किसी तरहका दंगा करो, बल्कि उनको बड़ा भारी पाप और बड़ी बेशर्मीकी बात समझो और अपने पतिके सामने खूब दिल खोलकर दंगामुश्ती करो और उसकी हंसी-मजाक छेड़छेड़ा का पूरा-पूरा जवाब दो और जरा भी मत दबो। तुम अपने पतिकी दासी या मोल ली हुई बाँदी नहीं हो, जो उससे भिचो, बल्कि उसकी अर्धांगिनी अर्थात उसका आधा अंग और बराबरकी दावेदार हो। इस वास्ते उसके सामने शरमाने वा झेंपनेकी तुमको जरूरत नहीं है, बल्कि जरूरत है इस बातकी है कि हर तरह दिल खोलकर तुम अपनी सहेलियोंसे छेड़छाड़ हंसी-मजाक और दंगामुश्ती करती हो या करना चाहती हो, उस ही तरह बल्कि उससे भी ज्यादा दिल खोलकर तुम ये सब बातें अपने पतिके साथ करके उसके मनको ऐसा प्रसन्न करो कि फिर उसके मनमें किसीके साथ हंसी-मजाक करनेकी जगह ही बाकी न रहे। ऐसा करने से तुम बहुत ही धर्म कमाओगी और अपनी गृहस्थीको भी अच्छी तरह चलाओगी।

मेरी बहिनो! इस विषयमें अब मैं सिर्फ एक और बात कहकर इस अध्यायको समाप्त करता हूँ। वह यह है कि विवाह शादी और तीज त्यौहार में तुम खूब शृंगार करती हो और

स्त्रियों को इकट्ठा करके दिल खोलकर ऐसी गाती-बजाती हो कि दूर-दूर तक मुहल्लेवाले भी तुम्हारा गाना सुनते हैं। लेकिन अपने पतिके सामने गाने और बजानेमें सिर्फ शरमाती ही नहीं हो बल्कि बुरा भी मानती हो। इस बातकी ज्यादा बहस न उठाकर मैं केवल इतना ही कहना ठीक समझता हूँ कि पतिके सामने जो बात शर्म और लज्जाको है वह दुनियाभरके सामने जरूर शर्म लज्जाकी बात है। पतिका और स्त्रीका ऐसा खुला हुआ नाता है कि न तो स्त्रीकी कोई बात उसके पतिसे छिपी हुई है और न पतिकी कोई बात अपनी स्त्रीसे छिपी हुई है। इस वास्ते कोई बात हो ही नहीं सकती है जो पतिके सामने तो लज्जा और शर्मकी हो और दूसरोंके सामने न हो। इस वास्ते अगर भले घरोंकी गृहस्थिन स्त्रियोंके वास्ते गाना-बजाना और नाचना ऐबकी बात है तो उनको यह काम छोड़ देना चाहिए और अगर यह ऐबकी बात नहीं है तो पतिके सामने भी गाने और बजानेमें नहीं शरमाना चाहिए। अगर पति चाहे और ऐसी जरूरत पड़े तो उसको इन बातोंसे प्रसन्न करनेकी कोशिश करनी चाहिए। गरज स्त्रियोंको यह बात निश्चय रखनी चाहिए कि उनका सारा शृंगार, सारी दिल्लगी और सब तरहका हाव-भाव सिर्फ अपने-अपने पतिको खुश करनेके वास्ते है, न कि अकेली आपही खुश होने या दूसरी स्त्रियोंको खुश करनेके वास्ते। अपने पतिको प्रसन्न करनेके वास्ते ही स्त्रियोंके माता-पिता ब्याह करके उनको पराये घर सौंपते हैं, और यह ही स्त्रियोंका धर्म और असली कर्त्तव्य

है। इस ही बातसे वे सच्ची घर-गृहस्थिन हैं, और अगर यह बात नहीं है तो स्त्रीके सबही गुण निरर्थक हैं और वह निन्दाके योग्य है।

—x—

सास-बहूका नैतिक-कर्तव्य

मेरी बहिनो ? जिस घरमें तुम पैदा हुई, जिस मांकी गोदमें तुम पाली पोसी गई, जिन बाप-दादा और चाचा-ताऊने तुमको लाड़ लड़ाया, जिन भाई-बहिनोंके साथ तुम खेली खाली, उन सबको छोड़कर और सारी उमरके लिये उनसे नाता तोड़कर अब तुमने अपने पतिके साथ गाढ़े प्रेमका एक बहुत अनोखा नाता जोड़ा है जिससे तुम्हारा और तुम्हारे पतिका हृदय दूध-मलाईकी तरह आपसमें घुलमिलकर एक होगया है। अब यद्यपि देखनेमें तुम और तुम्हारे पति दो अलग-अलग नजर आते हैं, लेकिन असलमें तुम दोनों एक हो। अब तुम्हारे पतिका घर ही तुम्हारा घर, पतिका धन तुम्हारा धन, पतिकी कमाई तुम्हारी कमाई, पतिका हानि लाभ तुम्हारा हानि - लाभ, पतिकी इज्जत आबरू तुम्हारी इज्जत आबरू और पतिकी बदनामी ही तुम्हारी बदनामी है। इसही कारण पतिके मां-बाप और भाई-बहिन अब तुम्हारे मां-बाप और भाई-बहिन हैं। इनहीमें अब सारी उम्र तुमको रहना है और सदा दुख-सुखमें इनहीसे काम लेना है और इनहीके काम आना है। इस वास्ते अब तुमको उचित है कि तुम अपने पतिके मां-बाप, भाई-बहिन, कुटुम्बी, पड़ौसी और

गली मुहल्लेके लोगोंको ही अपना समझो, सदा सच्चे हृदयसे उनकी भलाई और बढ़वारीकी कोशिश रक्खो, जिससे वे भी तुम्हारी भलाईकी कोशिश करते रहें।

आदमीका काम आदमीसे ही चलता है। बिना आपसके मेल-जोल और एक दूसरेकी मददके मनुष्यका निर्वाह किसी तरह नहीं हो सकता है इस वास्ते जिन लोगोंमें मनुष्यको रहना पड़े उनको अपनाये रखना बहुत ही जरूरी है और यह तबही हो सकता है, जब हम उनके काम आवें और सच्चे दिलसे उनकी भलाई चाहें। लेकिन इस अभागे हिन्दुस्तान में आजकलकी स्त्रियां अपने कुटुब वालोंके तो क्या काम आवेंगी और उनसे तो क्या सच्चा मेल-मिलाप रक्खेंगी; बल्कि आजकल तो पति और पत्नीमें भी सच्ची मुहब्बत और हृदयका सच्चा मिलाप बहुत कम देखनेमें आता है और कोई दूरका हो या नजदीक का, अपना हो या बेगाना हरएकके साथ मायाचारीका ही व्यवहार और दिखावेकी ही मुहब्बत नजर आती है। इसही कारण सब कोई जरूरतकी फोकी बातें बनाती हैं और बात-बात में अपने आपको बारबार फेंककर दिखाती है लेकिन वक्तपर कोई भी काम नहीं आती हैं, जिसके कारण सबहीको हरएक काममें दिक्कत उठानी पड़ रही है और सबहीकी जिन्दगी जान-घरोंके समान महा संकटमें बीत रही है। अब हम इनही बातोंको जरा खोलकर लिखते हैं, हमारी बहिनोंको चाहिए कि इनको बहुत ध्यान देकर पढ़ें और अपने नफा-नुकसानपर विचार करके

इनही तरीकों पर चलें जिनसे सुख-शांतिकी प्राप्ति हो और सब प्रकारकी उन्नति और बढ़वारी हो।

प्यारी बहिनो! इस कथनमें मुझको हिन्दुस्तानकी स्त्रियोंकी महामूर्खता और नीचताको खुले शब्दोंमें दिखलानेकी जरूरत पड़ गई है। आशा है कि इस कथनसे तुम मुझपर नाराज न होगी, क्योंकि जो कुछ लिख रहा हूँ वह सब अपनी सारी उमरकी जांच-पड़तालके बाद अब अपने बुढ़ापे मे तुम्हारे ही भलेके वास्ते लिख रहा हूँ। लेकिन ऐसा भी करना कि मेरे इस कथनको बुड्ढेकी बड़बड़ समझकर इसपर कुछ भी ध्यान न दो, बल्कि तुमको चाहिए कि मेरे इस लेखको बडे बूढोंकी नसीहत समझकर पल्ले बांधो और इसके मुताबिक चलकर इससे नफा उठाओ।

हिन्दुस्तानमें एक कहावत मशहूर है कि 'धी जमाई लेगये और बहुयें लगई' पूत, कहै मनोहर भडुली रहे ऊतके ऊत।' अर्थ इसका यह है कि बेटीका तो जमाई लेगये और बेटोंको बहुओंने वशमें कर लिया, इस तरह औलाद होते हुए भी बिना औलादके बन गए। इस कहावतकी ही बदौलत हिन्दुस्तानमें बडे-बड़े अनर्थ होरहे हैं और हमारे पवित्र घर पूरे पूरे नर्क-स्थान बन गये हैं। देखो, क्या यह गजबकी बात नही है कि जिस सासने अपने बेटे के विवाहमें अपना बहुतसा जेवर उतारकर बहूको चढ़ा दिया है और सारी उमर घर भरके खाने-पीने और पहिनने ओढ़नेमें तंगी तुर्शी करके और कौड़ी-कौड़ी जोड़कर जो रुपया जमा किया

था वह सब निकालकर खर्च कर डाला है। वही सास-बहूके घर आनेपर यह चाहती रहती है कि मेरा बेटा अपनी बहूको रोज झिड़कता रहे और लात घूँसों और जूतोंसे पीटता रहे। वह सास गली मुहल्ले और बिरादरीकी औरतोंके सामने तो ऐसी बातें बनाती है मानो बहूके ऊपर वार-वारकर पानी पीती है। अगर बहूका कान भी तत्ता हो जावे ता सारे घरको सिरपर उठा लेती है, तड़पती हुई फिरने लगती है, अपना कलेजा निकाल-निकालकर दिखाने लगती है, और बहूका किसी भी काममें हाथ नहीं लगाने देती। लेकिन मनमें यही बात रखती है कि यह गैर घरकी औरत हमारे यहाँ आगई। इस वास्ते इसको जितना भी जूतीके नीचे रक्खा जाय उतना ही अच्छा है। इस वास्ते अपने बेटेको अपनी बहूसे मुहब्बत करते देखकर उसके आग लग जाती है और वह डरने लगती है कि कहीं ऐसा न हो कि बहू मेरे बेटेको मोहकर अपने वशमें कर ले और मुझसे जुदा कर दे। इस वास्ते वह जाहिरमें तो अपने बेटेसे बहूकी तारीफ ही करती रहती है और बहुत मुहब्बत दिखाती है लेकिन असलमें अपने बेटेका मन उससे फाड़ती रहती है और खूब मायाचार बनाती है। बेटा बेचारा कुछ दिनों तक तो मांकी बातोंको सच मानता है और अपनी बहूकी एक भी बातपर एतबार नहीं करता, लेकिन जब मांकी बहुतसी बातें झूँठी निकलती हैं तो वह इनकी बातोंमें दखल देना छोड़ देता है और मनमें विचार लेता है कि इन कमबख्तोंको आपस ही में कटने मरने दो। ऐसा विचारकर

वह घरमें आना और घरके कामोंमें ध्यान देना बहुत कम कर देता है।

बहूरानीभी इस मौकेपर कुछ कम मायाचारी नहीं खेलती है शुरूमें तो वह अपनी सासकी सब सख्तियाँ झेलती हैं और फिर कुछ दिनों पीछे धीरे-धीरे अपनी तकलीफें अपने पतिके सामने खोलना शुरू करदेती हैं। वह जाहिरमें तो यह दिखाती है कि वह अपनी तकलीफें बयानही नहीं करना चाहती बल्कि चुपचापही उन तकलीफोंको झेलना चाहती है। लेकिन असलमें वह राईका पर्वत बनाकर दिखाती हैं और खूबही मकर-फरेबका जाल फैलाती है। लेकिन उसके इन मकर-फरेबके कारणही पतिपर उसकी बातोंका कुछ असर नहीं होता और वह इस झगड़ेसे अलगही रहना पसन्द करता है। जब बहूजीका इस तरह काम नहीं चलता तब वह अपनीही तरकीब जो बचपनमें अपने बापके यहां काममें लातीथीं, शुरूकर देती हैं—कई-कई दिन अलग पड़ी रोती रहती है और खाना तक नहीं खाती। अब सासजी घबराती हैं कि कहीं गली मुहल्ले और बिरादरीकी औरतोंको यह बात मालूम न होजावे और यह न समझने कि सास अपनी बहू पर इतनी सख्ती करती है। इसवास्ते अब वह ऊपरी मनसे बहूको मनानेकी कोशिश करती है और उसकी सब तरहसे खुशामद करने लगती है और प्रेम सिद्ध करनेके लिए अपने बेटे परभी बारबार दबाव डालती हैकि भाई तूही किसी तरह बहूको समझा, कलसे उसनेतो खानातक नहीं खाया है।

बेटा खीझकर कहता है मरनेदो अगर नहीं खाती है, मैं क्या उसके मुँहमें टुकड़े देकर खिलाऊँ ? इसपर मॉजी सौ सौ बातें बनाती हैं और वहूसे खूब मुहब्बत जताकर यहभी डराती हैं कि भाई घर इन बातोंमें बदनाम होजावेगा, घरकी हवा उखड़ जावेगी और सब बात बिगड़ जावेगी। लाचार बेटाही अपनी वहूको मनानेके लिए मजबूर होता है और जिस तरह बन पड़ता है उसे मनाता है। लेकिन बहूके मनजाने पर माँको बेटेका यह तरीका बहुतही नापसन्द होता है और वह अलहदगीमें अपनी पड़ोसिनोंसे कानाफूँसी करके अपने बेटे और वहूकी बुराई करने लगती हैं। पड़ोसिनेंतो सदा इस बातकी तलाशहीमें रहती हैं कि कब किसीके यहाँ झगड़ाहो और हमको तमाशा देखनेका मौका मिले। इसवास्ते इस अवसरको ठीक जानकर सासको खूब भड़काती हैं और उसको अनेक घरोंकी कहानियाँ सुनाकर यह बात उसके दिलमें जमाती हैं कि दुनियाँ भरमें सबहीके बेटे और बहुएँ लायक हैं और सिर्फ तेरेही बेटे और बहू नालायक हैं। वे पड़ौसिनें उसकी बहुत-बहुत तारीफ करती हैं कि तू तो इनके वास्ते इस तरह मरती फिरती है और तूनेतो इनके वास्ते ऐसा-ऐसा काम किया है। परन्तु येनालायक तेरेसाथ ऐसा बर्ताव करते हैं। वेही फिर पड़ासिनें बहूके पास जाती हैं और उसकी अनेक प्रकार तारीफ करके और अनेक घरोंकी कहानियाँ सुनाकर उसके दिलमें यह बात जमाती हैं कि तेरी सास तेरे साथ बहुत सख्ती करती है और तुझे बहुत संकट देती है। फिर उसे

भड़काती हैं कि तूही है जो अपनी सासकी यह सब सख्तियाँ सह रही है, पर तूभी कबतक झेलती रहेगी। फलानी स्त्रीकी सासभी अपनी बहूको बहुत दिक किया करती थी। फिर आखिरको जब बहूनेभी सामना पकड़ा, दूबदू जवाब दिया, तबही उसकी सास ढीली हुई और वह बहू अपना अलग घर करके चैनसे रहती है। इस तरह वह पड़ौसिनें सास और बहू दोनोंसे भली रहकर उनमें खूब लड़ाई कराती रहती हैं। अब बहूजी सासका मुकाबला भी करने लगती हैं और अपने पतिके कानभी तरह-तरहकी शिकायतोंसे भरने लगती हैं। पति अव्वलतो उसकी बात सुनता नहीं, और यहही कहता रहता है कि तुम जानो और माँ जाने। ऐसीही तुमहो और ऐसीही माँ। इसवास्ते हमें तुम्हारे झगड़ोंसे कुछ मतलब नहीं। लेकिन जब हरवक्तके रोने और झींकनेसे उसकी जान आफतमें आजाती है। और वह तंग आजाता है, तब वह रातका सोनेके लिएभी देरसे घर आने लगता है और इस तरहभी छुटकारा न पाकर रातको आना और घरमें सोना ही छोड़देता है और दिनमेंभी सिर्फ खानाखानेही आने लगता है और वहभी दौड़ते-भागतेही।

पतिके इस तरह लापरवाह होजानेसे बहूजी औरभी ज्यादा ढीठ होजाती हैं और घरमें औरभी ज्यादा दङ्गा फिसाद रहने लगता है, यहाँ तक कि पुरुषको दोपहरकी रोटी खानेके लिए आध घड़ीके वास्तेभी घरमें ठहरना मुश्किल होजाता है और उसकी जानपर बन आती है। तब उसकी माताभी उसको यहही

कहने लगती है कि भाई बहूतो अलगही रहना चाहती है, अलग हुए बिना न तो यह हरवक्तका क्लेशही मिटेगा और न तुझेही अच्छी तरह टुकड़ा खानेको मिलेगा, मुझेतो भाई तेरी फिक्र है जो सोच ही सोचमें कांटा हुआ जाता है। ग़रज बहूसे हारमानकर अबमां अपने बेटेको समझा बुझाकर अलग कर देती है और सबके सामने अपना दुखड़ा रोती फिरने लगती है और खूब जीखोल कर बहूकी बुराई करती फिरती है। इस तरह एक घरके दो टुकड़े होजाते हैं, घरकी बँधीमुट्ठी खुल जाती है। हवा बिखरजाती है, दोहरा खर्च होने लगता है और सिवाय बर्बाद होने, मुसीबत उठाने और बदनाम होनेके और कुछ हाथ नहीं आता है,

प्यारी बहिनो! इस प्रकारके तमासे कोई अनोखे तमाशे नहीं हैं जो किसी एक आध घर में हों, बल्कि घर घर में सदा यही फ़िसाद, यही लड़ाई-दंगे रोना झीकना रहता है जिससे हमारे घर पूरे पूरे नर्कपुरी बन रहे हैं। कारण, इनसब झगड़ोंका स्त्रियों की मायाचारी, झूठा लोक दिखावा और क्लेश सहन करनेके अभ्यासके सिवाय और कुछ भी नहीं है। देखो इस ऊपरके ही कथन में अगर मांजीको झूठे लोक दिखावेका शौक न होता और उसको इस बातका डर न रहता कि ऐसा न हो कि दुनियां यह समझनें लगे कि यह अपनी बहूको अच्छी तरहसे नहीं रखती है तो वह सिर्फ दिखावेकी झूठी मुहब्बत करके अपनी बहूको न बिगाड़ती, बल्कि असली और सच्ची मुहब्बत करके बहूके दिल में अपना सच्चा प्रेमभी डालती और उसपर अपना रोबभी जमाये

रखती, और अपने बेटेसे भी कभी बहूकी झूठी बड़ाई और कभी बुराई करके अपने बेटेका विश्वास अपने ऊपरसे न हटाती, बल्कि बिल्कुल साफ हृदयसे साफ साफ बात कहती रहकर मां बेटेके सच्चे प्रेमको कायम रखती, जिससे उसका बेटाभी अपनी बहूके हृदयमें मांजीकी भक्ति और मुहब्बत जमानेकी कोशिश करता रहता और मांकी ही ताबेदारीमें रहनेका सबक पढ़ाता रहता। इसही तरह अगर बहूजी भी मायाचारीकी बातें बना बनाकर अपने पतिको अपनेसे नाराज न कर लेती, बल्कि सदा सही और सच्चाही हाल बताकर पतिके हृदयमें अपनी दुगुनी मुहब्बत और पूरा एतबार कायमकर लेती तो उसका पति अव्वल तो घर में झगड़ेही न पड़ने देता और अगर कभी कोई झगड़ा हो भी जाता तो उसको दूर करने की पूरी-पूरी कोशिश किया करता। इसी तरह अगर स्त्रियाँ पराये घर जाकर मायाचारीकी बातें न किया करें और साससे कुछ और बहूसे कुछ बातें न बनाया करें तो उनके यहां भी पड़ौसकी स्त्रियां आकर मायाचारी न खेला करें और किसीसे कुछ और किसीसे कुछ कहकर भुस में आग न लगाया कर। गरज औरतोंको यह बात निश्चय रूपसे जान लेनी चाहिये कि स्त्रियोंको मायाचारी और दिखावेनेही उनके घरका सत्यानाश और पूरी तरहसे मटियामेट कर रक्खा है, और कलह और क्लेशका ऐसा बीज बो रक्खा है कि उसकी जड़ कभी जाननेमें नहीं आती। इस वास्ते उनको चाहिये कि वह मायाचारी और लोक दिखावेको एकदम छोड़ दें और अपने घर को स्वर्गधाम बना लें।

देवरानी-जेठानी की प्रवृत्ति और कर्तव्य

ये तो रहीं सास-बहूके वर्त्ताव की बातें। इससेभी बढ़िया जब हम देवरानी जिठानीके वर्तावकी तरफ निगाह दौड़ाते हैं, तो उनमें बिल्कुलही कुत्ते बिल्लियों जैसी लड़ाई देखनेमें आती है। किसी किसी घरमें तो यहांतक तमाशा होता है कि एकही घरमें इकट्ठी रहने वाली तथा एकही चूल्हे पर रोटी खानेवाली देवरानी-जिठानी में ऐसा द्वेष होता हैकि जब देवरानी रोटी बनाती है तो जिठानी नहीं खाती, और जब जिठानी बनाती है तो देवरानी नहीं खाती। यह तो अक्सर ही घरोंमें देखनेमें आता है कि जिठानी के बीमार होजानेपर देवरानी उसके पास नहीं फटकती और देवरानीके बीमार पड़ जाने पर जिठानी उसके पास नहीं जाती और जब पड़ौस की औरतें इसका सबब पूछती हैं तो बेधड़क यह जवाब दे देती है कि जिठानी या देवरानीका मेरा एतबार नहीं है, मैं उसको दवा दारू या खाने-पीने में जहर दे दूँगी। इस वास्ते वह मेरे हाथसे कोई चीज लेना नहीं चाहती और न मुझसे कोई काम कराना चाहती है। लाचार होकर मैं उससे अलग रहती हूँ और डरती हूँ कहीं ऐसा न हो कि बीमारी बढ़ जाय और मेरा नाम होजाय। लेकिन असलमें यह बात नहीं होती बल्कि असल बात यह है कि हिन्दुस्तानकी स्त्रियोंका हृदय पत्थरसे भी ज्यादा ऐसा कठोर होगया है कि दूसरोंको तकलीफमें देखकर ही उनको आनन्द आता है। इसवास्ते तकलीफमें किसीके काम आना उनको किसी

भी तरह पसन्द नहीं है। स्त्रियोंकी यह आदत बिल्कुल ऐसी है जैसी कि शिकारियोंकी होती है जो बन्दूक हाथमें लेकर दिनभर जगलमें फिरते रहते हैं और जानवरोंको गोली मारने पर जब वह जानवर फड़फड़ाता हुआ नीचे गिरता है, तड़फता है और लोट-पोट होता है, तब उसको बड़ा आनन्द आता है और ऐसा ज्यादा आनन्द आता है कि वह इसके वास्ते जंगलमें घूमनेकी सैकड़ों मुसीबतें झेलना खुशीसे पसन्द करते हैं।

स्त्रियोंको भी अपनी देवरानी जिठानीके साथ इस दुष्ट व्यवहारके कारण अपनी बारी आने पर अपनेको भी बहुत कुछ संकट झेलना पड़ता है। लेकिन उनका दुष्ट हृदय उनको सब तरहके कष्ट झेलनेके लिये तैयार कर देता है और दूसरोंके काम आनेसे रोकता है। रही वह औरत जो बीमार पड़ी है, वहभी सौ मुसीबतें उठाना तो पसन्द करती है, लेकिन अपनी देवरानी जिठानीसे किसी किस्मकी सहायता या टहल-सेवा लेना पसन्द नहीं करती, क्योंकि वह जानती है कि मुसीबतके यह दस-पांच दिन तो ज्यों-त्यों बीत ही जावेंगे, लेकिन अगरमें अपनी देवरानी जिठानीसे कुछ काम लेना चाहूंगी तो अव्वल तो वह मेरा कुछ काम करेगी ही नहीं, कुछ न कुछ बहाना करके साफ जवाब दे देगी और अगर कुछ काम करेगी भी तो कोई असली काम नहीं करके देगी, बल्कि ऐसाही काम करेगी जिसमें चाहे आराम होवे या तकलीफ, लेकिन उसका लोक दिखावा पूरा हो जावे और ऐसा करने पर भी फिर सारी उम्र इस बातके ताने

मारती रहेगी कि मै इसकी बीमारीमे इस तरह मरी और इस तरह काम आई। ऐसा विचार करके वह सैकडों मुसीबत उठाती हुईभी इसही बातकी फिक्रमें रहती है कि मेरी देवरानी जिठानी मेरी तकलीफमे मेरे किसी भी कामको हाथ न लगावे जिससे मैं आगेका सारी उम्र उसके तानोंसे बची रहू और उसका यह भय असलमे हाताभी ठीकहा है, क्योंकि हिन्दुस्तानकी बहुत सी स्त्रिया कुछ ऐसी ओछी बन गई हैं और उनका स्वभाव कुछ ऐसा नीच हो गया है कि उनको अपना जराभी अहसान जतानेमे शरम नहीं आती। अगर वह उतना ही अहसान जता दिया करे जितना कि वह किसी पर करतीं है तबभी गनीमत हो। लेकिन स्त्रियोंका तो यह हाल हो रहा है कि अगर किसी बीमारी मे उन्होंने कभी एक कटोरी पानीभी उठाकर देदिया है तो वह इतनी ही बात पर दुनिया भरका सिर उठाये फिरने लगती हैं और ऐसे बुरे शब्दामे उसका गीत गाती रहती है कि सुनने वालोंका भी बुरा मालूम होता है। कभी कभी तो वह इतनीही जरा सी बातका यहा तक तूम्बार बाधती हैं कि हमने तो घर कुनवेकी ही टहल सेवा मे उमर बिताई, सदा उन्हीका पेट पाला, हमेशा उन्हीके दुख-दर्दमे लगे रहे और रोग-शोकमे काम आये। इस घरमे आकर तो हमे एक दिन भी ठण्डा पानी नसीब न हुआ, यहाँ तो सदा यह ही झीकना रहा आज किसीको बुखार आ रहा है, कल किसीको दस्त लग रहे है, परसों किसीका जी अच्छा नहीं है। पर हमें तो ऐसे ऐसे फरेब करने आते नहीं कि

अच्छे अच्छेभी बीमार होकर पडे रहे और दूसरोंसे टहल करावें। हमने तो सदा अपनी ही हड्डियां छेदीं और रात दिन खड़ी नलियों नाचकर सब हीकी टहल सेवा की और सारेही परिवारके काम आये, पर हमारे कोई काम आया हो तो हमे कसम दिला लो। जो हम कभी बीमार पड़ी होंगी तो किसीसे इतना भी नहीं हुआ होगा कि कोई हमारे घड़े से पानीभी ओंझकर पिलादे। गरज वे औरतें इस किस्मकी सैकड़ों और हजारों बेतुकी बातें बकती रहती है जिसकी वजहसे उनकी देवरानी और जिठानी अपनी तकलीफमे उनसे कोईभी काम नहीं लेती और साफ इन्कार कर देती है।

इसी प्रकार सैकडों बातें रात दिन छोटे बड़े सभी घरोमे होती रहती हैं। जिससे वह घर जो परम आनन्दका स्थान, सुख शान्तिका अड्डा होना चाहिये था सचमुचही दंगे फिसाद और लड़ाई झगड़ोंका अखाड़ा ओर अनेक प्रकारकी आफतो और क्लेशोंका घर बना रहता है। इस कारण घरके मर्द अपने घरमे भी कदम रखते हुए डरते हैं और लाचारीसे ही घर आते है और घरकी तरफसे बिलकुल बेपरवाह होकर घरको भी बर्बाद करते हैं और तरह तरहके अवगुणोंमे फस कर अपनाभी सत्यानाश कर डालते है।

देवरानी जिठानीमें तो आजकल यहाँ तक अविश्वास रहता है कि अगर एक दूसरेके बच्चेको भी खेल खिलानेके लिये लेजाय तो बच्चेकी माको यह डर हो जाता है कि मेरे बच्चेको कोई

बुरी-भली चीज न खिला दे, या इस पर कोई जादू-टोना न करा दे। इस वास्ते या तो इसकी गोदमे से बच्चा छीन लेती है या खुद भी उसके साथ साथ जाती है या अपनी किसी लड़कीको साथ भेजती है। इस प्रकार जब किसी स्त्रीके कोई बच्चा पैदा होनेको होता है तो सगी देवरानी-जिठानियोंके होते हुएभी वह अपनी ननदको ही उसके ससुरालसे बुलाती है और उसहीसे सूतकके दिनोंमें सब काम कराती है, लेकिन तमाशा यह है कि न तो ननदको भावजकी असली मुहब्बत होती है और न भावज को ननद की। इस वास्ते ननद ही सारे काम इसही तरह करती रहती है जिससे उसकी भावज खुश रहे, ऐसा करनेसे जच्चा-खानमें पडी हुई भावजको आराम मिले या तकलीफ वह बीमार हो जाय या तन्दुरुस्त इसकी ननदको कुछ भी परवाह नहीं होती। इस तरहकी भावजको भी ननदके आराम तकलीफकी जरा चिन्ता नही होती, उसकी बलायसे चाहे उसकी ननद मरे या जीवे, सर्दीमे रहे या गर्मीमे, बीमारहो यातन्दुरुस्त, हा इतनी बात का उसको अवश्य ध्यान रहता है कि चलते समय ननदको दो जोडे कपडे और कुछ और सामान जरूर दे दिया जावे, जिससे यहाकी और वहाकी औरतोंको यह मालूम हो जावे कि भावजने ननदको इतना इतना दिया। गरज कहाँ तक गीत गावें हमारी स्त्रियोंने तो माबाचार और लोक दिखावेमें फंसकर आप ही अपने आराममे काटे बो लिये हैं। जिससे उनको स्वयभी रात

दिन क्लेश उठाना पड़ रहा है और उनकी बदौलत उनके पुरुषों कोभी क्लेशमें ही रहना पड़ता है।

सेवा-धर्म और सदाचार

मेरी बहिनो! अपने विवाहसे पहले जब तुम अपने बापके यहाँ थीं तब तुमको याद है कि तुम अपने भाई भतीजों और बहिन भानजोंकी कितनी टहल करती थीं, यहां तक कि उनके मल-मूत्र से भी तुमको घृणा नहीं आती थी। अब भी जब तुमको अपने बापके यहाँ जाना पड़ता है तब भी उनकी और उनके बच्चोंकी कितनी टहल करती हो। लेकिन ऐसा करने से क्या तुम कभी यह समझती हो कि हम उन पर अहसान करती हैं और क्या तुम अपने भाई भतीजों की इस टहल सेवाको कभी किसीके सामने गाती हो? नहीं, तुमको तो स्वप्नमें भी यह खयाल नहीं आता कि हमने कोई अहसान किया। इस ही वास्ते तुम्हारी यह टहल-सेवा कभी तुम्हारे मुंह पर भी नहीं आती है; क्योंकि जो कुछ तुम करती हो वह सब प्रेमके कारण अपना कर्त्तव्य समझ कर करती हो। इस ही वास्ते यह टहल: सेवा तुमको किसी तरह भी दूभर मालूम नहीं होती। बल्कि इसमें तुमको आनन्द ही आता है और तुम इससे भी ज्यादा उनकी टहल-सेवा करनेकी ख्वाहिशमन्द रहती हो। इसही वास्ते तुम्हारे भाई-भतीजे भी खुशी खुशी तुमसे अपनी टहल-सेवा लेते हैं और तुम्हारा कुछ भी अहसान नहीं मानते। इसही तरह अगर तुम अपनी देवरानी-जिठानियोंको अपनी सगी बहिन और

देवर-जेठोंको अपने सगे भाई समझ लो और उनके काम आना और उनकी टहल-सेवा करना अपना परम कर्त्तव्य समझ कर सच्चे दिलसे उनकी टहल-सेवामें लगी रहा करो, और न तो तुमही अपने मनमें यह समझो कि उनके काम आकर हमने उन पर कोई अहसान किया और न वह यह समझें कि हम पर कोई अहसान किया, तो तुम्हारा भी और तुम्हारी देवरानी-जिठानीका भी जीवन बहुतही आनन्दसे व्यतीत होने लगे और तुम्हारे सारे संकट और क्लेश दूर भाग जावें और घरके मर्द भी अपने घरसे पूरा-पूरा आनन्द पाने लगें और घरकी पूरी खबरगीरी लेने लगें, जिससे सब ही तरहकी बढ़वारी हो जाय और घरको आबरू भी बँध जाय।

मेरी बहिनो! तुम इस बातका यकीन मानों और निश्चय जानों कि जितना जितना ही तुम लोक दिखावा करके बड़ी बनना चाहती हो उतना ही उतना तुम दुनियाँकी निगाहमें नीचे गिरती जाती हो और तरह तरहके संकटोंमें फँस कर अपनी जिन्दगी बर्बाद करती हो। दुनियाँकी स्त्रियाँ अपनी मायाचारीके कारण तुम्हारे सामने तो तुम्हारी बड़ाई करती हैं और तुम्हें खूब उभारती हैं, लेकिन पीठ पीछे वे तुम्हारी खूब बुराई करती हैं और तुम्हारी एक एक बातको विचार विचार कर तुम्हारा खूब ही मज़ाक उड़ाती हैं। इस वास्ते इस लोक-दिखावे के तरीके को एकदम छोड़दो और करो वह असली काम, जिसमें तुम भी सुखी रहो और तुम्हारी देवरानी जिठानी भी। तुम्हारी

तो असली तारीफ इसही बातमें है कि तुम और तुम्हारी देवरानी-जिठानी ऐसी एक हो जावें कि किसीको कानों कान भी खबर न होने पावे कि इनके घरके अन्दर क्या हो रहा है। और अगर तुम्हारी देवरानी या जिठानी इस रास्ते चलना नहीं चाहती —वह तुमसे अच्छा व्यवहार करना नहीं चाहती — तो तुम अकेली ही उसकी सच्ची महब्बत करती रहो और उसकी कोई भी शिकायत किसीसे न करो। आखिरको शर्मिन्दा होकर वे भी आपसे आप ही सीधी हो जावेंगी और तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार करने लगेंगी, और अगर वे सारी सारी उमर भी सीधी न बनें, तब भी तुम उस जैसी मत बनो बल्कि अपनी नेकी पर ही कायम रहो, जिससे आखिरको दुनियां में तुम्हारा ही यश हो। इसके सिवाय तुम यह भी तो समझो कि अगर तम्हारे भाई-बहिन या भावज तुमसे बेराही करते हैं और तुम्हारे कुछ काम नहीं आते, तब भी तुम उनका प्रेम नही छोड़ती हो। अपने बापके घर जाने पर सौ दिक्कतें उठाती हुई भी बड़ी खुशी से उनकी टहल-सेवा करती रहती हो; क्यों कि तुम उनकी सेवा टहल किसी बदलेके वास्ते नहीं करती हो बल्कि अपने हृदयकी सच्ची मुहब्बतसे करती हो। इस वास्ते चाहे तुम्हारे भाई भावज तुमको दुख भी दें, तब भी तुम उनकी टहल-सेवा में कमी नहीं करती हो और न उनके दुख देनेको किसीसे जाहिर करती हो और न इस अपनी टहल-सेवाको किसीके सामने गाती हो। इस ही तरह अब अपनी सुसरालमें आकर

तुम अपने पतिका आधा अंग बनकर बिल्कुल उसकी ही हो गई हो। इस वास्ते अब तुमको चाहिए कि अपने पतिके रिश्तेदारोंको ही अपने रिश्तेदार समझो और वह चाहे तुमसे कैसा ही बर्ताव करें, पर तुम सच्चे दिलसे उनसे प्रेम ही करती रहो, उनकी सेवा टहल में ही लगी रहो और इस प्रकार अपना कर्त्तव्य पालन करके अपना भी यश बढ़ाओ और अपने पतिका भी।

मेरी प्यारी बहिनो! इस प्रकार अपना कर्त्तव्य पालन न करनेसे और अपने पतिके रिश्तेदारोंको अपने सच्चे रिश्तेदार न समझनेसे हमारे घरोंमें जो नित्य नये तमाशे होते रहते हैं और जिन महा सकटों और क्लेशोंमें स्त्रियोंको फंसा रहना पड़ता है उन सबका वर्णन इस छोटीसी किताबमें किसी तरह भी नहीं हो सकता। सच तो यह है कि आजकल स्त्रियाँ तो साक्षात् क्लेशोंकी ही मूर्ति बन रही हैं और उनकी सारी उम्र रोने-झींकने और लड़ने-भिड़ने ही में जाती है। इस ही कारण बिरादरीके किसी काम-काजमें, रास्ते चलती गली मुहल्लेमें या किसी धर्म-स्थानमें जब कभी चार औरतें इकट्ठी होजाती हैं या कभी घड़ी दोघड़ीके वास्ते कोई किसीके घर चली जाती है तो वह अपना अपना झींकनाही झींकती है। सुननेवाली भी ऐसीही बातें बनाती है मानो उसको उसकी तकलीफ सुनकर बहुतही दुख हुआ है और वह उसको तसल्ली देने और शान्त करनेके बदले उसकी तकलीफको सौ-सौगुना करके दिखाती है और उसके हृदयको अच्छीतरह मसोसकर उसको खूबही दुखी

बनाती है और आठ-आठ आँसू रुलाती है और अगर उन औरतों को किसीके दुखका हाल पहलेसेही मालूम होता है तबतो उसके दुःखकी बात छेड़कर और उसको कई गुना बनाकर और उसके दुखके कारण अपने हृदयका बहुत-बहुत दर्द दिखाकर उसके हृदयको बहुतही ज्यादा दुखाती हैं, उसके दुखिया चित्तपर खूबही भारी चोट लगाती हैं और उसको रुलाकरही उठती हैं। इस प्रकार आज कलकी स्त्रियां नर्कके असुरोंका काम करती हैं और स्त्रियोंके क्लेशित-मनको एक पलभरभी चैन नहीं लेने देतीं। बल्कि जहांतक बन पड़ता है उनके हृदयकी आगको खब फूँक मार-मार सुलगाती रहती हैं, उनके चित्तको भस्म करती रहती है और इसही मुघड़ भलाईको अपनी बुद्धिमानी और प्यार मुहब्बत समझती हैं।

प्यारी बहिनो! दुखियाको उसका दुख याद दिलाना महा कठोरताका काम है और उसके साथ भारी जुल्म करना है। यह काम उन्हीका होता है जो दूसरोंको दुखी देखकरही खुश होते हैं। मेरी बहिनो! तुम इस उल्टी चालको एकदम छोड़दो और कभी किसीको उसका दुख याद मत दिलाओ। बल्कि अगर कोई अपने दुखका जिक्र उठावेभी तो उससेभी ज्यादा दुखियाओंका वर्णन करके उसके दुखको हलका करके दिखाओ और जहांतक होसके उसके चित्तको दूसरी तरफ बटाओ और उसको हसी-खुशीमें लगाओ।

बड़ी भारी मुश्किलतो यह है कि करीब-करीब सबही स्त्रियों

का हृदय हरवक्त क्लेशित रहनेके कारण उनको सदा दुखदर्द और क्लेशकीही बातें अच्छी लगने लगती हैं और ऐसीही बातोंमें उनका जी लगता है और हर समयके क्लेश के कारण वे कुछ ऐसी खिजीहुई और झुँझलाई हुई रहती हैं कि बातबातमें उनके मुँहसे अङ्गारही बरसते रहते हैं। इसही कारण वे अपने बच्चों कोभी सदा भयानक और हृदय-विदारक गालियां देती रहती हैं। वे प्यार करती हुईभी अपने बच्चोंको नाशजाना, जलमरना, गढ़ेमें दबना, खोजड़े आदि ऐसेही अनेक नामोंसे पुकारती रहती हैं और बातबातमें 'तेरा नाश जावे, जा मरजा, परे जाकर गढ़जा, मरताभीतो नहीं, मेरे क्यों प्राण पीरखे हैं, मेरी क्यों खाल खाई है, मेरा क्यों खून पीरक्खा है, इस औलादसे तो मैं मर जातीतो अच्छा था, खाले मुझे, रखले मुझे पेटमें' इसही प्रकारकी बातें कहती रहती हैं और जब अपनी प्यारी औलादके ही साथ उनका यह हाल है तब औरोंके साथतो उनका क्याही कुछ बर्ताव होगा।

इससेभी अधिक कुछ औरतें तो यहाँतक खिजी रहती हैं कि वे घरकी चीजोंकी चर्चाभी सदा गालीके साथ ही करती रहती हैं—जल गई सुई ही खो गई, नाशपीटी कैंची ही नहीं मिलती, नपूती आगही नहीं सुलगती, नाश गई रोटी ही नहीं फूलती, ऊती कंगीही टूट गई, खोजड़े पीटी दाल ही नहीं गलती—गरज वे किसीभी चीजका नाम बिना गालीके नहीं लेती और घरके काम-काजमें भी हर समय ऐसे ही बोलती रहती हैं कि मानो

बहुत ही खिजी हुई हैं। जैसे अगर उनको किसी चीजके लेनेसे इन्कार करना होता है तो इस तरह कहती है कि फेक परे मरीको, मैं क्या इसे फूकू गी, मुझे क्या इसमे आग देनी है। अगर कोई किसी चीजको जराभी बिगाड दे या हाथ लगादे तो अपनी जरा सी भी नाराजी दिखानेके वास्ते शोर मचाने लगेंगी कि फूँक दी, जलादी, नाश करदी, आग लगा दी।

अगर कोई काम कराना होता है जैसा कि यह कहना हो कि इस चीज को उठाकर रख दो, तो ऐसा कहेगी कि इसको उठाकर सन्दूकमें फूँक दी होती, या कहेगी कि इसे यहाँ क्यों फूँक रक्खी है, गरज हरवक्त फूंका जलाई ही मुह पर रहती है, जिससे साफ साबित है कि उनका हृदय हरवक्त ही जलता रह ा है और उनका मन हरवक्त खिजा हुआ और हद से ज्यादा क्लेशित रहता है। तब ही तो उनके मुहसे फूल झड़नेकी जगह हरवक्त अंगारे ही बरसते रहते हैं।

प्यारी बहिनो ! यह तो तुम स्वयं ही समझ सकती हो कि इस तरह बुरे-बुरे बोल बोलने से स्त्रियोंका कोईभी कार्य्य सिद्ध नहीं होता, परन्तु उनका नुकसान बड़ा भारी होता रहता है। ऐसे व्यवहार से कम से कम उनका जी तो जरूर ही जलता रहता है और उनकी जबान भी अवश्य ही गन्दी होती रहती है। ऐसे बोल सुनने वालोका भी हृदय जलता रहता है और ऐसी स्त्रियां डरावनी ही मालूप होने लगती है, जिनसे दूर ही रहना सबको अच्छा मालूम होता है। इस कारण स्त्रियोंको ऐसे जले-कटे

बोल बोलने एकदम बन्द कर देने चाहिए और उनके स्थान पर ऐसे मुलायम, नर्म, मीठे और सुहावने बोल बोलने शुरू कर देने चाहिए जो सबको ही प्यारे लगें।

अब रहा स्त्रियों का मायाचार—इसका सबूत तो इतनी ही जरा सी बातसे होता है कि जरा सी बात में तो वह हर किसीको यह कहने लगती है कि मैं तेरे ऊपर वारी जाऊँ, तू जीती रह, तेरी बड़ी उमर हो, सुहागिन हो बेटी जीती रहो, तेरे भाई-भतीजे बने रहें। फिर वे ही औरतें जरासी बात पर उसहीको कोसने लग जाती हैं और यह कहने लगती हैं कि तेरा खसम मर जाय, धी रांड हो जाय, राम जी करे कीड़े पड़ जायँ इसकी देह में, यह सड़-सड़ कर मरे, इनके घरका सत्यानाश हो जाय, घरके सब मर जायँ और कोई पानी देवा और नाम लेवा भी न रहे। इसही प्रकार प्रायः सबही स्त्रियाँ बात-बातमें अपने भगवान्‌की, बापकी, भाईकी, पूतोंकी और अपनी जवानीकी सैकड़ों कसम चट-चट खाती रहती हैं और फिरभी कोई उनकी बातका विश्वास नहीं करता। इस प्रकारके मायाचारसे स्त्रियों ने अपनी पद्धति बिल्कुल ही खोदी है। उनकी बात कहनी न कहनी बराबर ही रहती है। कोई भी उनकी बात पर ध्यान नहीं देता।

प्यारी बहिनो ! तुम अपनी दुर्दशाको सुधारो और आदमी बनने की कोशिश करो। आदमी और पशुमें यह ही एक अंतर है कि आदमी तो अपनी बात दूसरेको कहकर अपने बहुतसे

काम निकाल लेता है और पशु कोईभी बात नहीं कह सकता। इस वास्ते अगर किसी आदमीकी बात पर विश्वास न रहे, तो उसका बोलना और न बोलना बराबर ही हो जाता है और वह पशुओंमें ही गिने जानेके लायक है। इस कारण तुमको वाजिब है कि तुम कसम खाना बिल्कुल छोड़ दो, क्योंकि जिसको तुम्हारी बातका विश्वास होगा तो वह बिना कसम खाये भी तुम्हारी बात मान लेगा और जिसका विश्वास नहीं होगा तो वह सौ कसम खाने पर भी तुम्हारी बात नहीं मानेगा। इसके सिवाय तुम सदा सच बोलनेकी भी कोशिश करो और मुँह देखी बात कभी मत कहो। अगर तुमको यह ख्याल हो कि साफ और सच्ची बात कहने से दूसरा नाराज हो जावेगा तो चुप रहो और कुछ मत कहो। लेकिन उसके खुश करनेके वास्ते झूठ बात हर्गिज मत कहो। इसके सिवाय जितनी जिसकी मुहब्बत तुमको हो उतनी ही जाहिर करो। फिजूल हरएक के ऊपर मरना और वार-वार जाना छोड़ो और किसीसे नाराज होजाने पर आपेसे बाहर न होजाओ और न एकदम सारे ही सम्बन्ध तोड़कर और राक्षसी का रूप धारण करके एक तरफसे ही उसका सत्यानाश करना और उसको हड़पकर जाना शुरू करदो। बल्कि आदमीही बनो रहो और अपने होश-हवास कायम रखकर बहुतही गम्भीर शब्दों में अपनी नाराजी उस पर जाहिर करदो। ऐसा करनेसे तुम्हारे घरकी सुख-शांतिभी रहेगी और तुमभी घरकी देवी बनी रहोगी।

अनेक पत्नियों से हानिः—

मेरी बहिनो ! अब आखिरमे मैं तुमको यहभी बतादेना जरूरी समझता हूँ कि हिन्दुस्तानकी स्त्रियोंकी यह दुर्दशा क्यों हुई और क्यों वह कलह कलश और मायाचारकाही पसन्द करती हैं और हरवक्त खिजी और झुँझलाई हुई रहती हैं और सदा खोटेही बात बोलती है । प्यारी बहिनो ! तुम्हारे शहरमे अगर किसी पुरुषके दो स्त्रियां होंगी, तो तुमने उन सौतोंकी आपसकी लड़ाईके तमाशे जरूर देखे होंगे और यह नहीं तो ऐसे फकीरतो जरूरही देख होंगे जो दो सौतोका हाल गा-गाकर सुनाते फिरा करते हैं और उनकी कठपुतली हाथमे लेकर उनकी लड़ाईका खूब तमाशा दिखाया करते हैं इसके सिवाय दो सौतोंकी लड़ाईके तमाशोकी अनेक किताब भी बन गई हैं और तुम खुद भी अपने दिलमे ख्याल कर सकती हो कि उनकी कैसी दुर्दशा रहती होगी। एक पुरुषको दो स्त्रियोसे विवाह करना उन स्त्रियो पर बड़ा ही जुल्म करना है जिससे उन दोनो स्त्रियोमे हरवक्त आपसका द्वेष और हद दर्जेकी ईर्षा और डाह पैदा होजाती है, वे आपसमे एक दूसरेको आखोंमें काटे सी खटकती रहती हैं और उनमेसे हरएक दूसरीको देख देखकर जलती भुनती रहती हैं, उनके हृदयमें हरवक्त एक प्रकारकी आग सी धधकती रहती है जो किसी वक्त भी शान्त नहीं होती । वे बात बातपर लड़कर अपने हृदयका उबाल निकालती रहती हैं और अपने पतिको अपनी सौतसे नाराज करा देने और उससे पतिका मन फाड़

देनेके वास्ते एक दूसरीकी खूब बुराई करती हैं और झूठे सच्चे हर किस्मके अ राप लगाती रहती है और सिवाय इस गीतके और कुछ बात करना ही नहीं जानती ऐसी स्त्रियोंका स्वभाव हदसे ज्यादा नीच बन जाता है। हरवक्त जलना और जली कटी बातें करना, दूसरोंको दुख पहुचानेमे ही आनन्द मानना रोना, झींकना कलह करना, झूठी बात बनाना अपनी सौतकी बुराई गाना और अपनी बुराई छिपाना मायाचारी करना, कोसना पीटना और मुँहसे हरवक्त अगारे ही बरसाते रहनेकी आदत हो जाती है, उनहीको अपनी झूठी बातोंकी प्रतीत दिलानेके वास्ते बात-बातमे कसमे खानी पडती है और सब प्रकारकी मायाचारी और मक्कारी बनानी पड़ती है और फिर भी सारी उम्र महा क्लेशमें ही बितानी हाती है।

बड़े भाग्यकी बात है कि आजकल हिन्दुस्तानमे दो स्त्रियाँ रखनेका रिवाज बहुत कुछ उठ गया है और आजकल दो स्त्रियों रखना बहुत ही बुरा समझा जाता है। आजकल तो जो पिता अपनी कन्या ऐसे पुरुषके साथ विवाहता है जिसकी पहिली भी स्त्री मौजूद हो तो वह बहुत हो नीच समझा जाता है और अक्सर वह ही पिता अपनी कन्याको ऐसी जगह विवाहता है जो अपनी बेटीके बदलेमें रुपयोंकी थैलियां गिनवाता है और रुपयेके लालचमें अन्धा होकर अपनी बेटीको आगमे झोंकना चाहता है।

प्यारी बहिनो ! तुम स्वयम् विचार कर सकती हो कि जब दो ही सौतोंकी ऐसी दुर्दशा बन जाती है, जैसी ऊपर वर्णन कीगई

है, तब एक साथ एकही पुरुषके दस-दस, बीस-बीस और सैकड़ों हजारों स्त्रियोंके होजानेसे उन सौतोंका तो क्या ही बुरा हाल होता होगा। ओह! उनकी हालतका तो मनमें चितवन करके भी शरीरके रोंगटे खड़े होजाते हैं और बदन थरथर काँपने लगता है। बेशक उनका त्रास तो नारकियोंके त्राससे भी अधिक बढ़ गया होगा और उनकी पूरी-पूरी व्यथा सुनकर तो पत्थरका हृदय भी टुकड़े २ होजाता होगा, बेशक उनको तो आठ पहरकी जलन और हरवक्तकी कलहके कारण मछलीकी तरह तड़फना होगा और चिन्तारूपी अंगारोंपर ही लौटते हुए अपने दिन बिताने पड़ते होंगे। कहावत मशहूर है कि आदमीके बराबर कोई नर्म नहीं और आदमीके ही बराबर कोई सख्त नहीं। इसलिए आदमी सब कुछ झेल सकता है और मुसीबतका पहाड़ भी अपने ऊपर उठानेकी शक्ति रखता है। इसही कहावतके अनुसार उस जमानेकी स्त्रियां भी सब कुछ झेलती थी और ज्यों त्यों अपने दिन काटती थी और रो-झींककर अपनी आयु पूरी करती थी। कैसे दुखकी बात है कि सैकड़ों और हजारों वर्षों तक हिन्दुस्तानकी स्त्रियोंको वह मुसीबतकी जिन्दगी बितानी पड़ी है जिसकी वजहसे उन्होंने भी अपने आपको नाचहो मान लिया और कई पीढ़ियोंके अभ्याससे उनका स्वभाव भी असलमें नीच ही बन गया और हरवक्त कलह करने, क्लेशमें ही दिन बिताने और झूठ-फरेब और मायाचारी करनेकी ही हरवक्त जरूरत पड़नेसे उनको इन बातोंके करनेकी ऐसी पक्की आदत पड़ गई कि सन्तान-दर-सन्तान अबतक उनकी यह आदत चली आती है।

प्यारी बहिनो ! पुरुषोंने तुम्हारे साथ यह महा-अन्याय और जुल्म करके इसका फल भी पूरा पूरा पा लिया है, क्योंकि तुम जानती हो कि गर्भके दिनोंमें माताके अच्छे-बुरे जैसे भी भाव रहते हैं वैसी ही अच्छी-बुरी सन्तान पैदा होती है। इस कारण उस समयकी स्त्रियां जिस नीच अवस्थामें रक्खी गई थीं और जैसे नीच-भाव उनके रहते थे वैसी ही उनकी सन्तान पैदा हुई अर्थात् स्त्रियोंको ऐसी नीच-अवस्थामे रखनेके कारण पुरुष भी नीच ही प्रकृतिके पैदा होने लगे और होते - होते यह नतीजा हुआ कि हिन्दुस्तानके लोग किसी भी लायक़ न रहे। लाचार दूसरे देशके लोगोंने आकर उनका राज-पाट उनसे छीन लिया और हिन्दुस्तानके लोग बांदी गुलामकी तरह रहने लगे—उनकी करनी उनके आगे आगई।

प्यारी बहिनो ! स्त्रियोंकी नीच अवस्था होने, रातदिन कलह और क्लेशमे ही रहने और बात-बातमे मायाचार करने और झूठ-फरेब मिलानेका कारण तुमने भलीभाँति समझ लिया, लेकिन अब तुमको खुशहोना चाहिए, क्योकि अब कुछ दिनोंसे हिन्दुस्तानके लोगोंकी आँखे खुल गई हैं और उन्होंने कई-कई स्त्रियाँ रखकर अपने घरको नर्क-स्थान बनाना छोड़दिया है, अबतो सब लोग एकही स्त्री रखने लगे हैं और उसको अपनी बाँदी गुलाम न मानकर अपनी अर्द्धाङ्गिनी—अपने अङ्गका आधा हिस्सा—मानने लगे हैं और अपनेही बराबर समझने लगे हैं। इसवास्ते अब तुमभी होशमें आजाओ और पशु-तुल्य न रहकर

आदमी बन जाओ और आदमियों जैसेही काम करने लगो, अब तुमको मायाचार करने, हरवक्त कलह करने और क्लेशमें दिन बितानेकी जरूरत नहीं है, बल्कि अबतो तुमको जरूरत है भारी सभ्य बननेकी, सीधी सच्ची रहनेकी और हरएकसे प्यार-मुहब्बत करने और आनन्दमे दिन बितानेकी, जिससे तुमभी अपने गृहस्थके प्रबन्धमे अच्छी तरह ध्यान दे सको और तुम्हारा पति भी, जिससे तुमभी सुखसे रहसको और तुम्हारा पति भी और जिसके कारण तुम्हारी सन्तानभी सुन्दर, बलवान्, बुद्धिमान, साहसी और पराक्रमी पैदा हो और जगतमे अपना पुरुषार्थ दिखाकर तुम्हारा नाम रोशन करे।

प्यारी बहिनो! तुम्हारे घरमे हरवक्त आनन्द मङ्गल रहने और तुम्हारी सन्तानकी बढ़वारी होने, तुम्हारे पुरुषोंके परम शीलवान् बनने और उनके हृदयमे तुम्हारी सच्ची मुहब्बतके बढने, तुम्हारी पूरी कदर होने, तुम्हारे पुरुषोका ध्यान घरके कामोंको तरफ लगने और सब प्रकारकी सुख सम्पत्ति बढ़नेके वास्ते ही हमने यह छोटी किताब लिखी है। हम तुमको विश्वास दिलाते हैं कि तुम हमारे लिखे पर चलोगी और घरको आनन्द धाम और स्वर्ग-स्थान बनाओगी तो तुमभी गृह-देवी मानी जाओगी और सबसे पूजी जाओगी।

महिला-कर्त्तव्य

दोषरहित गुणगण सहित, चौवीसों जिनराज।
मन वच तनकर नमत हों, सिद्ध होनके काज॥
प्रणमूं श्रीगुरुके चरण, जे निर्ग्रन्थ सज्ञान।
पुनि बन्दौं जिनधर्मको, मिथ्या-तम हर-भान॥

इस संसारके सारे जीव सुखका लाभ और दुःखका नाश चाहते हैं, ऐसा कोईभी जीव नहीं जो दुःखसे डरकर सुखकी इच्छा न करता हो; परन्तु प्रायः सारे ही जीव सुख प्राप्त करने और दुख दूर करनेका ठीक कारण न जानने तथा विरुद्धाचरणसे नाना भांतिके शारीरिक और मानसिक दुःखोंसे दुखी होरहे हैं। फिर शास्त्रोंमें कहे हुए नर्क आदिके घोर दुःखोको तो याद करनेसे ही कलेजा कांप उठता है।

सचमुच यदि विचार करके देखा जाय तो धर्म-धर्म चिल्लाने वाले सब जीव धर्मके स्वरूपको ही नहीं जानते, जिससे अन्धोंकी नॉई भटकते और अनेकों दुःखोंसे टकराते हैं, इसी कारण श्रीगुरुने अपनी बुद्धिसे धर्मका उपदेश देकर सच्चे सुखकी प्राप्तिका उपाय बताया है, उसीके अनुसार यहां पर कुछ लिखा जाता है, आशा है हमारे भाई और बहिनें इसपर ध्यान देंगे।

आत्माके स्वभावको धर्म कहते हैं। इस धर्मको जानकर इसमें आचरण करनेसे ही दुःखका नाश होकर सच्चा स्वाधीन

सुख मिलता है, इसे सब बुद्धिमान् निर्विवाद स्वीकार करते हैं। सारांश यह कि बिना धर्मके सुखकी प्राप्ति होना असम्भव है।

आत्माका स्वभाव—धर्म (रागद्वेष रहित देखना, जानना) अनादि कालसे, हिंसा, असत्य, चोरी, कुशील और तृष्णा आदि पाप-कर्मरूप प्रवृत्तिके कारण मलिन- राग द्वेष-रूप होरहा है, इसलिये उसे शुद्ध करनेका—पाप छोड़ अहिंसा, सत्य, अचौर्य्य, ब्रह्मचर्य और सन्तोषरूप प्रवर्तनेका—उपदेश हमारे आचार्योंने जहां-तहां दिया है तथा आत्माके धर्मको घातनेवाले पांच पापोंके त्यागको धर्म कहा है क्योंकि अहिंसादि धर्मोंके धारण करनेसे ही हम ससारके दुःखोंसे छूट निजानन्द और परमात्म-दशाको प्राप्त हो सच्चे सुखी होसकते हैं। रत्नकरण्डश्रावकाचारमें कहा है कि: धर्म वही है जो नर्क एवं पशु आदि कुगतियोंके असह्य और निकृष्ट दुःखोंसे निकाल स्वर्ग मोक्षके उत्कृष्ट सुखोंको प्राप्त करावे। इसके सिवा आत्माके स्वभावको छोड़ वास्तविक और सच्चा धर्म और कुछ है ही नहीं। इसी आत्माके स्वभावकी प्राप्ति करलेना यथार्थ धर्म पालन है। जिन उपायोंके करनेसे यह जीवात्मा अनादिके कर्मरोगसे निवृत्त होकर रागद्वेष-रूप अशुद्धताको छोड़ शुद्ध परमात्मा हो, उन्हीं उपायों - कारणों—का नाम व्यवहार धर्म है। इसीके अनुसार आचरण करना ही हमारा पुरुषार्थ है। इसीलिए यहां पर व्यवहार धर्मका वर्णन किया जाता है, क्योंकि यही व्यवहार धर्म निश्चय धर्मकी उत्पत्तिका कारण है।

इन्द्रियोंकी लम्पटता द्वारा उत्पन्न हुए पंच पापोंकी प्रवृत्ति

तथा क्रोधादि चारों कषायोंकी उत्पत्तिको रोकनेवाला यह व्यवहार धर्म ही है जो मुनिव्रत तथा श्रावक व्रतके भेदसे पालन किया जाता है। मुनिधर्म चारित्र रूपमें १३ प्रकारका है। पंच महाव्रत, पच समिति और तीन गुप्ति। पुन: श्रावक-व्रत द्वादश भेदरूप है। पच अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत। ग्यारह प्रतिमारूप भी श्रावकधर्म है। इस स्थान पर श्रावक तथा मुनिव्रतका व्याख्यान करनेसे लेख बहुत बढ़नेके सिवाय इष्ट प्रयोजनकी हानि होना संभव है, इसलिए इस विषयको यहीं समाप्त कर आगे चलते हैं। जिनको इसका पूरा स्वरूप-आदि मालूम करना हो वे मूलाचार - आदि—आचार शास्त्रोंसे ज्ञात करे।

निश्चय रहे कि जो पुरुष श्रावक-व्रतकी ११ प्रतिमाओंका भलीभाँति पालन नहीं करसकता वह मुनिव्रत धारण करने योग्य कदापि नहीं है। इसी प्रकार श्रावकव्रत पालनेकी योग्यता तभी होसकती है जब पहिले मिथ्यात्व१, अन्याय२ और अभक्ष्य३ का त्याग किया जाय। जो स्त्री व पुरुष इन महान पापोंका सेवन करता हुआ भी अपनेको व्रती श्रावक कहता है, वह मानो अक्षर-शून्य पुरुषोंको पडित बताता है, अतएव जो स्त्री व पुरुष सच्चे सुखको चाहते हैं, उनको ये तीनों दोष सर्वथा त्यागने योग्य हैं।

१. कुदेवादिका पूजना। २. सप्तव्यसन सेवन करना।
३. मद्यादिकका भक्षण करना।

वर्तमान कालमें गृहस्थाश्रमकी अवस्थाको देख खेदपूर्वक कहना पड़ता है कि इस विकराल पंचम कालके पापमय समयमें, यह तीनों दोष जैन जातिमें दिन पर दिन बढ़तेही चले जारहे हैं और गृहस्थोंका क्रियाकाण्ड इतना बिगड़ता चला जारहा है कि जिसका वर्णन करते 'अपनी जांघ उघारिये, आपही मरिये लाज' की कहावत चरितार्थ होती है। यही कारण है कि आजकल मुनियोंका सद्भाव तो दूर रहा, प्रतिमाधारी त्यागी और संयमी पुरुषोंका मिलना भी दुस्तर प्रतीत होता है। शास्त्रोंके पढ़नेसे ज्ञात होता है कि प्राचीन समयमें मुनिगण स्थान-स्थानपर घूम उपदेश देतेथे जिससे धर्मकी प्रभावना और उन्नति होती थी। उस समयके क्रियाकाण्डज्ञाता गृहस्थोंके यहां उन्हें शुद्ध आहार मिलता था। गृहस्थ लोग जानतेथे कि साधु संयमीको आहार कराये बिना स्वतः आहार करना गृहस्थधर्मके विरुद्ध है। इसीलिये वे भोजन करनेके पहिले द्वाराप्रेक्षण (प्रासुकजलसे भरा हुआ पात्र हाथमें ले द्वारपर खड़ेहो पात्र (अतिथि) की राह देखना) करते और जब किसी सुपात्र सज्जन या साधुको आहार दान दे लेते तो अपना अहोभाग्य समझते थे। यदि किसी सुयोग्य श्रावक या साधुको भोजन देनेका संयोग न आता तो अपने भाग्यको बहुत ही कोषते और साधुओंके भोजनका समय निकल जानेपर आप भोजन करते थे। उन्हें यह भले प्रकार विदित था कि गृहस्थका घर षट्कर्मोंकी आरम्भी हिंसाके कारण स्मशानतुल्य है और बिना अतिथि-संविभागके कदापि सफल और शुद्ध नहीं होसकता।

वर्तमानमें जैनियोंकी खान-पानक्रिया इतनी बिगड़ गई है कि यदि कर्मयोगसे थोड़ा भी संयमधारी क्रिया-कांडी भाजन करनेवाला किसीके घर आजावे तो उसके भोजन योग्य सामग्रीका मिलना कठिन हो जाता है। यदि सामग्री भी मिल जाय तो क्रियापूर्वक बनानेवालोंकी न्यूनता कैसे पूरी हो? इस अवस्थामें यदि दो-चार कर्म-कांडी साधर्मी सज्जन किसी स्थानपर पहुँच जायँ तो उन्हें शुद्ध भोजन कैसे मिले? यही बड़ी कठिनाई है। ऐसे ही अनेक दोषोंसे इस निकृष्ट कालमें साधुव्रत धारण करना कठिन हो गया है, कोई क्षुल्लक ऐलकके व्रत धारण करनेका साहस नहीं करता। (खेद)

त्यागी महान पुरुषोंके अभाव होनेसे जैन जातिसे उपदेश उठ गया, जिससे मिथ्यात्व, अन्याय और अभक्ष्यका जोर बढ़ गया। जो पुरुष संसार और शरीरके भोगोंसे ममत्व घटाना चाहते हैं वे शुद्ध खान-पानकी योजना न देख घरहीमें रहकर श्रावक व्रत पालकर सन्तोष करते हैं, क्योंकि धर्मात्माओंको राग-द्वेष मेटनेवाली सुबुद्धिको उत्पन्न करनेवाली शुद्ध क्रिया और आहार विधिकी भी आवश्यकता है। मलिन बुद्धि होने और धर्ममें अरुचि होनेका एक कारण शुद्धाचरणकी हीनता है। निर्धनता व मूर्खता होनेका एक कारण विकृत भोजन है। दुःख-रोग आदिकी वृद्धि भी खान पानकी भ्रष्टतासे होती है, ऐसा जान जैनीमात्रको क्रिया-कांड और खान-पान पर लक्ष्य देना चाहिए

तथा हीनताएँ दूर करनी चाहियें, परन्तु समयका प्रवाह और उसकी आवश्यकता भी हमें भूलनी न चाहिये।

रसोई आदिकी क्रिया स्त्रियोंके आधीन है, यदि स्त्रियाँ शिक्षिता हों तो रसोई अवश्य ही शुद्ध तैयार हो, तब उन्हें कोई अशुद्धाचरणका उलाहना कैसे दे ? अशिक्षिता स्त्रियां अकेला खान-पानही क्या, गृहस्थीका प्रत्येक कार्य्य अविचारपूर्वक करती हैं। एक तो वे मूर्ख और उतावली हुआ ही करती हैं, फिर यदि अशिक्षिता भी हों तो कहना ही क्या ? वे गृहस्थीका प्रत्येक कार्य्य चक्की, चूल्हा, झाड़ना, बुहारना, पानी छानना और ओखली आदिको, ठीक-ठीक विधिपूर्वक नहीं करती, शुद्धता और दयाका भी विशेष विचार नहीं रखतीं।

इसमें उन अकेलीका दोष नहीं है, पुरुषोंकी मूर्खता तो उनसे भी बढ़कर है। पुरुषोंने स्त्रियोंको सन्तानोत्पत्ति करनेवाली मशीन समझ रक्खा है, उन्हें सोचना चाहिये कि स्त्रियाँ उनके गृह-संसार रचनेमें विश्वकर्मा हैं और वे तो केवल बाहरसे द्रव्य कमाकर लानेवाले हैं, स्त्रियाँ जैसा शुद्ध-अशुद्ध भोजन पकादेती हैं पुरुष उसे ही बड़ी मौजसे खा-पीकर सन्तुष्ट होते हैं फिर स्त्रियोंको क्या पड़ी है, जो नाना प्रकारसे शोध बीनकर धीरता और सावधानीसे रसोई बनायें तथा और-और कार्य्य भी सावधानी और शुद्धतापूर्वक कर ? कभी-कभी तो ऐसा देखा जाता है कि स्त्रियाँ तो शुद्ध-आचारयुक्त होती हैं और अपने रसोई आदि कार्योंको इस प्रकार करती हैं जिसमें हिंसादिक दोप टलें और संयम सधे,

क्योंकि या तो वे इसे शास्त्रोंमें पढ़कर जान लेती हैं या विद्वानोंके उपदेशोंमें सुन लेती हैं और विचारती हैं कि यदि हम प्रमाद और अज्ञानतासे हिंसादिक पंच पाप उपार्जन करेंगी तो इसका कड़ुवा फल हमें ही भोगना पड़ेगा। पति तो घरके काम देखने नहीं आते, जो कुछ पाप होगा हमारे सिर होगा। इसलिये वे कर्म-कांडकी बड़ी ही अनुकूलता रखती हैं—चूल्हे-चौकेकी शुद्धता, शरीर वस्त्रादिककी पवित्रता, रसोईकी सामग्रीकी मर्यादा तथा वर्तनादिकी स्वच्छताका ध्यान रख भोजन तैयार करती हैं, परन्तु पुरुषोंका आचार ऐसा भ्रष्ट हो रहा है कि जूता पहिने, बाजारके कपड़ोंसे, दूकानपर या चौकेके बाहिर ही अथवा हलवाईकी दूकानपर ही शुद्ध अशुद्ध मिठाई या दूसरी सामग्री बड़े प्रेमसे उदर देवकी भेंट करते हैं। फिर भी ऐसी स्त्रियां समाजमें हजार पीछे दो-चार ही होंगी जो शास्त्रानुकूल भोजन बना खिला सकती हों। इसीलिये बहिनोंसे प्रार्थना है कि वे अपनी जिम्मेदारीके कामोंको भले प्रकारसे करें और अपने पतियोंको भी उनसे प्रेम करावें, क्योंकि चूल्हा, चक्की और ओखली आदिके कार्योंमें प्रमाद या असावधानी करनेका पाप स्त्रियोंके सिर होता है।

यह तो सभी जानते हैं कि पुण्यका फल सुख और पापका फल दुःख है। पापोंसे इस जीवनमें ही नाना कष्ट भोगने पड़ते हैं। फिर भविष्यमें नारकी या तिर्यंच होना पड़ता है, जिनमें नाना प्रकारके असह्य कष्ट भोगने होते हैं।

शास्त्रोंका कथन है कि प्रथम तो स्त्रीकी पर्याय ही निन्द्य है

जो कुत्सित कर्मोंके उदयसे प्राप्त होती है। जिसने पूर्व जन्ममें मिथ्यात्वसेवन (कुगुरु, कुदेव और कुधर्मका आराधन) किया हो, अभदय-भक्षण या रात्रि भोजन किया हो, अनछना पानी पिया हो, या तीव्र मायाचार किया हो, अथवा इन्हीं जैसे खोटे-खोटे कर्म-समूह उपार्जन किये हों उन्हें स्त्री पर्याय प्राप्त होती है।

हरिवंश पुराणसे जाना जाता है कि जब नेमिनाथ भगवान् अपने विवाहकालमें बरात सहित ससुराल जा रहे थे, तब एक बाड़ेमें बहुतसे पशुओंको घिरेहुये देखकर सारथीसे उनके घेरे जानेका कारण पूछा। सारथीने बताया कि बरातमें आये हुए अनेक मांसाहारी राजाओंके भोजनार्थ ही रोके गये हैं। सारथीका उत्तर और पशुओंका क्रन्दन सुन भगवान्ने अवधि-ज्ञानके द्वारा कृष्णका प्रपंच जाना और तब सोचने लगे—धिक्कार है इस वेश्याजैसी चंचल राजलक्ष्मी को और इन रोगसे भोगोंको, जिनके कारण महान पुरुष भी निर्भय हो पापकार्योंमें दत्तचित्त हो जाते हैं।

पुनः विवाह कृत्योंको जैसेके तैसे छोड़ कंकण आदिको तोड़-मरोड़ गिरनार पर्वतपर जाकर द्वादशानुप्रेक्षाओंका चिन्तवन करने लगे। जब राजुल—राजा उग्रसेनकी पुत्री और श्रीनेमिकी अर्द्ध-परिणीता पत्नी–को यह खबर मिली, जोकि अबतक नेमि-जैसे सुयोग्य पतिकी प्राप्तिपर हर्षके मारे विह्वल होरहीं थीं—बड़ी ही खेद-खिन्न हुईं और कहने लगीं—हाय ! क्षणभरमें यह क्या का क्या होगया। भगवन् ! हायरे ! कर्मोंके विचित्र चरित्र,

बलिहारी तेरी ! एक तो स्त्री पर्याय पाई, फिर यह ठीक विवाह हीके समय पति-वियोग और सो भी थोड़े समयको नहीं, जीवन पर्यन्तको। अब क्यों न ऐसा उपाय करूं जिससे इस संसारके इन्द्रजालसे—इन मीठे-मीठे विषभरे प्रलोभनों—से छूट जाऊं, एवं ससारके जन्म-मरणसे छुटकारा पाऊं। यह विचारते ही उन्होंने आर्यिकाके व्रत धारण किये और कालावधि-अन्तमें समाधिमरण कर सोलहवे स्वर्गमें अच्युतेन्द्र हुई।

जो स्त्रियां श्रावककुल, जैन-धर्म और सब प्रकारकी सामग्री पा करके भी अपना कल्याण नही करतीं, किन्तु नित्य सांसारिक रगड़ों-झगड़ोंमें आनन्द मनाया करती है. वे मानों अमृत छोड़ विष पीती हैं, उनके लिये 'खांड भरे भुस खात हैं' की कहावत चरितार्थ होती है। जिस प्रकार मूर्ख मनुष्य काग उड़ानेके लिये चिंतामणि रत्नको पत्थर समझ फेंक देता है और फिर दुःखी होता है, ऐसे ही जो स्त्रियां कुल और धर्म आदि सारी सामग्री पाकरभी अपना हित नहीं करती उसका दुरुपयोग करती है वे उस मूर्ख मनुष्य जैसी दुःखी होती हैं. क्योंकि उक्त सामग्रीका दुरुपयोग दुर्गतिमें ले जानेवाला है, जहां छेदन-भेदन, मारन-ताड़न आदि नाना कष्ट सहने होते हैं, जिनका केवल स्मरण करनेसे ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं और छाती धड़कने लगती है।

हमारी बहिनोंको उचित है कि वे शास्त्रोंका पठन-मनन करें। सुगुरु,सुदेव और सुधर्मसे अटूट प्रीति जोड़ें जिससे उनका कल्याण हो। कुगुरु, कुदेव और कुधर्मका संसर्ग तजें, क्योंकि एक तो

पूर्वसंस्कारोंके कारण संसारी जीव यों ही मदोन्मत्त हो रहे हैं फिर कुगुरु आदिका संसर्ग तो उन्हें और भी दुर्दशामें कर देने वाला है। उनके संसर्गसे हमें अपने कल्याणकी सुधि भी होनो कठिन है।

अभक्ष्य और अन्यायको छोड़ना भी उचित है। जो स्त्रियां मिथ्यात्वको त्याग देती हैं, रसोईकी सामग्री अपने हाथसे शोध, पानी अपने आप छानकर यत्नपूर्वक रसोई करती हैं वे ही गृहस्थारम्भके पापोंसे बचती हैं।

जिस घरमें स्त्री पुरुष दोनों विवेकी हों वह घर मानों सुखागार—स्वर्ग—है। पति देव और पत्नी देवी हैं, गृह देवमंदिर और देश स्वर्गलोक है। किन्तु जहां इसके विपरीत दोनों अथवा दोनोंमेंसे कोई एक अविवेकी है वहीं नर्ककी वेदनाए हैं, कलह और अप्रेमके कारण वही नर्कस्थान है, उसमें रहनेवाले नारकी हैं और यदि नारकी नहीं तो श्वान या बिल्ली जैसे तो जरूर हैं। यदि दम्पतिमें से कोई एक मूर्ख है तो दूसरेका आवश्यक कर्तव्य है कि उसे योग्य बनावे-मार्गपर लावे, उसे शिक्षा देकर या दिलाकर अपना सहयोगी या सहयोगिनी बनावे।

गृहस्थीरूपी गाड़ीके स्त्री-पुरुषरूप दोनों पहियोंका एकसा सुदृढ़ सुन्दर और पूर्णाङ्ग होना आवश्यक है। उनमें समानता होनेपर ही गाड़ी इच्छित स्थानपर हा पहुंच सकती है। यदि उनमेंसे एक भी कमजोर या अयोग्य हुआ, तो गाड़ीका निश्चित स्थानपर पहुंचना तो दूर रहा, उसका स्थायी रहना भी कठिन

है। जो स्त्री-पुरुष पारस्परिक प्रेमसे नहीं रहते वे नर्कसे भी कठिन कष्ट उठाते हैं। वे मनुष्य कभी जीवनके आनन्द नहीं उठा सकते फिर भला परमार्थ तो कर ही कैसे सकते हैं।

इस कारण हमें यही कहना है कि बहिनो! तुम्हारे ही कारण जैन जाति बहुत ही नीची अवस्थामें जा पहुंची है, तुम्हीं उसे ऊपर उठा सकती हो। सीता, द्रौपदी, अन्जना, मंदोदरी, सत्यभामा, रुकमणी, ब्राह्मी और सुन्दरी आदि कितनी ही स्त्रियों के आदर्श तुम्हारे सामने हैं। स्वतः पवित्र बनो, दूसरोंको पवित्र बनाओ, अपने खानपानका विचार रक्खो, दूसरोंसे खानपानका विचार करवाओ, अभक्ष्य, अन्याय, मिथ्यात्व आदिका त्याग करो क्योंकि इनसे तुम्हारा लौकिक और पारलौकिक बिगाड़ हो रहा है। कितने खेदकी बात है कि जिन बातोंसे तुम्हारा बिगाड़ होता है उन्हींको तुम आनन्दपूर्वक किये जा रही हो, यदि तुम पढ़ी लिखी होतीं, शास्त्रोंका पठन-मनन करती होतीं, तो जान लेती कि वे स्त्रियां जिनकी तुम सन्तान हो, कैसी गुणवती होती थीं। एक कैकईको ही लो और देखो कि जिसने अनेक सुन्दर और श्रीमान् राजाओंके स्वयंवरमें उपस्थित रहने पर भी दरिद्रके वेषमें बैठे हुए महाराज दशरथके कण्ठमें ही वरमाला पहिनाई थी, यह उसकी पुरुष-परीक्षा और प्रवीणता नहीं थी तो और क्या था? फिर अनेक राजाओंसे युद्ध होते हुए, अपनी रथ हांकनेकी चतुराईसे महाराज दशरथको बचा लेना उसकी युद्ध-विद्याकी विशारदताका परिचायक नहीं था तो क्या था? यदि रानी मंदोदरी

धर्मात्मा और विवेकिनी न होती तो रावणको अन्याय कार्य से बचनेकी शिक्षा कैसे देती ? यदि सती अंजना ज्ञानवती और धर्मात्मा न होती तो ठीक विवाहके समयमें ही २२ वर्ष तक अपने पति द्वारा तिरस्कार पाने पर भी उसीमें अनुरक्त कैसे रह सकती थी ?

साड़े चौबीस सौ वर्ष बीते हैं जब कि राजा श्रेणिककी रानी चेलनाने अपने बौद्ध पति राजा श्रेणिकको जैनी बनाकर उन्हें सुमार्ग पर लाई थी। यदि चेलना धर्मज्ञा और विद्यावती न होती तो कैसे इस कठिन कार्य्य को कर सकती थी ?

स्त्रियोंको शास्त्रमें कहे तथा किंचित् ऊपर कहे सद्गुणोंको धारणकर विद्यावती बनकर आर्य्याओंके मार्गपर चलकर इस लोकमें सुयश और परलोकमें शुभ-गति प्राप्त करनी चाहिए।

स्त्री-शिक्षा

जब लड़के औ लड़कियां, हो शिक्षित भरपूर।
देश जाति औ धर्मकी, रहे न उन्नति दूर॥

प्रकट रहे कि बालकोंके समान कन्याओंको भी बाल्यावस्थासे ही शिक्षा देना (पढ़ाना और गृहकार्य्योंका अभ्यास कराना)माता पिताका परम कर्तव्य है। मातृभाषाकी शिक्षा तो देनी ही चाहिए इसके सिवाय राष्ट्रभाषा हिन्दी व अन्तर्राष्ट्रीयभाषा अंग्रेजी आदि की शिक्षा देना भी आवश्यक है। राष्ट्रभाषा हिन्दी कितनी सरल है इसे बताने की आवश्यकता नहीं। पर अधिकांश जैनग्रन्थोंका अनुवाद हिन्दीमें है इसलिए ही हमारी जैन बहिनोंको इतनी

हिन्दी सीखनेकी आवश्यकता है, जितनीसे शास्त्रोंका पूरा पूरा अर्थ समझमें आजाए, कोई भाव छूटने न पाए। हिन्दीका साधारण अच्छा अभ्यास गुजराती और मराठी बहिनोंको ६ महीनेमें हो सकता है।

जो स्त्रियाँ पढ़ी लिखी होती हैं वे अपना जीवन आनन्दसे बिता सकती हैं, सन्तानको उत्तम और गुणवान बनाकर देश-जाति और धर्म की उन्नति कर सकती हैं। उसी प्रकार बालकोंके कोमल हृदय बाल्यकालमें मनमाने सांचमें ढल सकते हैं और उनके स्वभावका ढालना माताकी बुद्धिमत्ता वा शिक्षा पर अवलंबित है। बच्चोंका अधिक समय माताके पासही बीतता है। माताके स्वभाव, धर्म, कर्म, बातचीत और इच्छाएँ आदि बच्चे पर वह प्रभाव डालती हैं जो हजार गुरुओंकी शिक्षाएँभी नहीं डाल सकती। पिताकी शिक्षाभी काम करती है पर बहुत थोड़ा। गुरु वेचारेको बच्चा उस समय मिलता है जब उसमें उसके भावी जीवनकी भलाइयाँ और बुराइयाँ जड़ पकड़ लेती हैं। माताकी शिक्षाएँ बच्चेपर से उसके जीवनभर अपना प्रभाव नहीं हटाती। नैपोलियनकी माताने उसे अपनी इच्छासे ऐसा अदम्य वीर बनाया था। शिवाजीकी माताने अपनीही शिक्षासे शिवाजीको इस योग्य बनाया था कि वे एक साधारण जागीदारसे महाराजा कहलाए। अकेले शिवाजी या नैपोलियन ही की बात नहीं है, सैकड़ों और हजारों उदाहरण ऐसे हैं कि जिनमें माताने अपनी इच्छानुसार ही अपनी सन्ततिको बना दिया है। सारांश यह कि

शूर, क्रूर, विद्वान् और मूर्ख जैसा भी माता चाहे अपनी सन्तति को घड़ सकती है।

विद्याके सिवाय लड़कियोंको गृहस्थीके काम-धन्धोंकी शिक्षा बड़ी ही जरूरी है और यह शिक्षा माता बड़ी ही सरलता-पूर्वक दे सकती है। ऐसा न समझना चाहिए कि गृहस्थीके काम-धन्धोंकी शिक्षाकी क्या आवश्यकता है? वे तो अपने आप आते रहते हैं, यह बात नहीं है। स्वयं आने पर भी यदि किसी सुव्यवस्थित-पद्धतिसे सिखलाया जाता रहे तो बड़ा ही अच्छा हो, क्योंकि अशिक्षित किसीभी कार्यको शीघ्र ही बिगाड़ देते हैं। व्यवहारिक कार्योंको सावधानी-पूर्वक पापोंसे बचाते हुए करते जाना भी एक कठिन कार्य है और इसलिए उसकी शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है। जो लड़कियाँ छुटपनमें रसोई आदि गृहकार्य नहीं सीखतीं हैं वे ससुरालमें जाकर तिरस्कृत और दुखी होती हैं, कारण यह कि एक तो काम करनेका अभ्यास न होनेसे वह बोझसा प्रतीत होता है और आलस्य आता है। दूसरे—काम सीखा हुआ न होनेसे बिगड़ जाता है, तब तिरस्कार आदि सहना पड़ता है।

कई धनिकोंकी बहू-बेटियाँ सोचती होंगी और सोच सकतीं हैं कि जब हमें ये काम करनाही नहीं पड़ते अथवा करनाही न पड़ेंगे तब फिर इनके सीखनेकी क्या आवश्यकता है? पर उन्हें सोचना चाहिये कि लक्ष्मी चंचला है—बादलकी परछाँई है, आज है कल नहीं। दुर्भाग्य न करे उन्हें ऐसा दिन देखना पड़े, पर लोगोंको ऐसे दिन देखने जरूर पड़े हैं। क्या आश्चर्य

कि उन्हें भी इस दु:ख-पूर्ण भाग्यचक्रमें पड़ना पड़े, फिर उस समय वे क्या करेंगी ?

जिसने निठल्ला बैठना सीखा हो उसकी इस संकटमय अवस्थामें क्या दशा होगी ? या तो भूखों मरना पड़ेगा या भीख माँगनी पड़ेगी। इसलिए हमारा कहना है कि खूब पढ़ो और खूब गृहस्थीके काम-धाम सीखो। हमारे कहनेका कुछ यह आशय नहीं है कि धनिक होने परभी तुम्हीं मजदूरके माफिक काम करती फिरो और नौकर चाकर मत रक्खो, परन्तु जैसी तुम्हारी अवस्था हो वैसा काम करो, पर काम करनेका अभ्यास हमेशा रक्खो। यदि पुण्यकर्मके उदयसे संपत्ति पाई है तो नौकर चाकरोंसे यत्नाचारपूर्वक काम लो, उनपर अच्छी देखरेख रक्खो। अपने अवकाशके समयको स्वाध्याय या लिखने पढनेमें लगाओ। जो स्त्री आप कुछ काम नहीं करती और न करनेकी उत्तम रीति जानती है वह नौकर चाकरोंमेंसे भी भले प्रकार काम नहीं लेसकती।

नौकर चाकरोंसे बहुत कम ऐसे होंगे जो अपने मनसे पूरा और अच्छा काम करें। उन पर देखरेख रखनेकी बड़ी आवश्यकता है। जो स्त्रियाँ रसोईकी क्रियामें निपुण हैं वे कुटुम्बियोंकी प्रकृति, देश और कालके अनुसार सदा शुद्ध रसोई करती हैं, जिससे कुटुम्बके लोग सदा निरोगी और सुखी रहते हैं। जो स्त्रियाँ पाकक्रियामें प्रवीण हैं, प्रत्येक व्यञ्जन नियमानुसार बनाना जानती हैं, वे मानो भोजन नहीं, एक पुष्टकारी औषधि खिलाकर कुटुम्बका पोषण करती हैं, इसीलिए भोजनके सम्बन्धसे

कवियोंने स्त्रियोंको माता तककी उपमा देडाली है। सच है, गुण ही सर्वत्र पूजा जाता है।

माता पिताका कर्तव्य पुत्रियोंको लिखना पढ़ना सिखाकर अथवा खाना बनाना सिखाकर ही पूर्ण नहीं हो जाता, किन्तु उन्हें शिल्प औरहस्त-कला आदिके सिखानेकी भी बड़ी आवश्यकता है। जिन स्त्रियोंको सीना*-पिरौना तथा कसीदा आदि काढ़ना आता है, वे मनमाना कपड़ा तैयार करके आप पहिनतीं और अपने कुटुम्बियोंको पहिनाती हैं। प्रत्येक स्त्रीको अङ्गरखा, पायजामा, कुरता, कोट, चोगा, घाँघरा, एवं चोली आदि कपड़ोंकी छांट, सीना व कसीदा काढ़ना, बेलबूटे बनाना, इजारबन्द गूँथना, गुलूबन्द, मोजा बनाना और गोखरू मोड़ना आदि कार्य अवश्यमेव सीख लेने चाहिये।

बचपनसे इन शिल्पकार्यों× का अभ्यास हो जानेसे आगे बहुत लाभ और सुखकी प्राप्ति हो सकती है। जो स्त्रियाँ अज्ञानतावश शिल्पकारी नहीं सीखतीं उन्हें वक्त पड़ने पर पिसाई, पानी भराई व कताई करके बड़ी कठिनाईसे अपना जीवन निर्वाह करना पड़ता है। प्रत्येक स्त्री हस्तकलाके काम सीखकर रुपया आठ आनाका रोजका काम कर सकती है और अपनी गृहस्थीका निर्वाह आनन्दपूर्वक कर सकती है। इसलिये द्रव्य, क्षेत्र, काल और

---

*सूतमें पोत-मूंगा आदि पिरोकर जाखी पंखा बनाना।

×कारीगरी।

भावके अनुसार सब काम सीखलेना चाहिये ताकि वक्त पड़ने पर कोई काम रुका न रहे और पराधीनता न भोगनी पड़े।

जो सुशीला और भाग्यवती कन्याएं बाल्यावस्थामें खेल-कूद छोड़ अपने योग्य कामोंका अभ्यास करती हैं, उनके भविष्य-सुखमें कुछ कमी नहीं। अवकाश मिलते ही वे किसी न किसी काममें लग जाती हैं। काममें लगे रहनेके कारण उनका शरीर फुर्तीला और निरोग बना रहता है।

कन्याओंको लड़कोंकी भांति ही नहीं, किन्तु उनसे बहुत ज्यादा, अपने माता-पितादि गुरुजनोंकी आज्ञा पालनी चाहिये। जो पुरुष लाड़-चावमें पड़कर लड़कियोंको मूर्ख रहने देते हैं— उन्हें पढ़ाते-लिखाते नहीं और केवल खेलने देते हैं, वे तो जो कष्ट उठाते हैं सो उठाते ही हैं, पर उन बाल-बच्चोंके लिये मानो जन्म-भरको दुःखी बना देते हैं—मूर्ख, ढीठ और खिलाड़ी लड़कियां जीवनभर कभी सुखी नहीं हो सकतीं।

कन्याओंको उचित है कि वे अपने माता-पिता, सास-ससुर, पति और गुरुजनोंकी आज्ञामें चलें—उनकी इच्छाके विरुद्ध कोई काम न करें और उन कामोंसे सदा दूर रहें, जिनसे उनकी तथा गुरुजनोंकी निन्दा हो। प्यारी कन्याओ! तुम कभी बुरे आचरण-वाली, हठीली, झगड़ालू, आलसी और खराब प्रकृतिकी लड़-कियोंके साथ हेल-मेल तथा और भी किसी प्रकारका संसर्ग मत करो; क्योंकि इससे बुद्धि बिगड़ जाती है। नीतिकारों ने भी कहा है कि—

संगत कीजे साधुकी, हरै औरकी व्याधि।
संगति तजिये नीचकी, आठों पहर उपाधि ॥१॥

इसीलिये नीतिशास्त्रमें गुणवान्‌को संगति करना श्रेष्ठ कहा गया है—

जाड्यं धियो हरति सिंचति वाचि सत्यं।
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति ॥
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं।
सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम् ॥१॥

अर्थ—जिस सत्संगतिके प्रतापसे बुद्धिकी जड़ता नष्ट होजाती है, सत्य-भाषणमें रुचि होती है, सन्मानकी वृद्धि होती है, पाप दूर होकर चित्त प्रसन्न रहता है और दशों दिशाओंमें सुकीर्ति फैलती है उस सत्संगकी महिमा कहाँतक कही जाय। १॥ अतएव पुत्रियोंका चाहिये कि प्रातःकाल उठें, फिर स्नानादि क्रियाओंसे निश्चिन्त हो देवदर्शन और स्वाध्याय आदिमें संलग्न होवें, पीछे रसोई आदि करें। अवकाश मिलनेपर सुशील बहू-बेटियोंमें बैठकर वार्तालापका ढंग और चतुराईके काम सीखनेमें समय बितावें। जो स्त्रियाँ अथवा लड़कियाँ कुसंगतिमें पड़ जाती हैं, उनको पीछे बहुत कड़वे फल भोगने पड़ते हैं। जहां कहीं कुसंगतिका प्रभाव पड़ा और स्त्रियाँ निर्लज्ज हुईं फिर उन्हें क्या कुटुम्बियों और क्या सम्बन्धियों सभीकी दुतकार सहनी पड़ती हैं— पशुओं जैसा कष्टमय तथा निरादरपूर्ण जीवन बिताती हैं।

प्यारी बहिनो! तुम अपने हानि-लाभका विचार सदैव

किया करो। नित्य आगे-पीछेकी बातें सोचा करो। विचार करो कि तुम्हारे जीवनका उद्देश्य क्या है ? कभी बुरी संगतिमें मत पड़ो, और गृहस्थीके छोटे-बड़े सभी कामोंका अभ्यास करती रहो, जिससे तुम्हें कभी शोक करनेका मौका न आए।

ऊपर कही हुई बातोंके सिवाय बालिकाओंको बालकोंकी ही भाँति धर्म-शिक्षण देना आवश्यक है। उन्हें बचपनसे ही मातृ-भाषा समझनेके साथ ही साथ पंच नमस्कारमन्त्र, दर्शन, मंगल, पूजन और पद-विनती आदि अनेक पाठ तथा लोक नीतिका शिक्षा देनी उचित है, जिसके अनुसार चलकर वे दोनों कुलोंकी कीर्ति फैलावें। किसी प्रकारके कुमार्गोमें पग न बढ़ावें।

लोकोक्ति है कि 'पुत्री पराये घरका धन है' अर्थात् कन्याका पालन-पोषण तो माता-पिता करते हैं, परन्तु विवाह हो जानेपर उसे कुल-लक्ष्मी बनकर रहना पड़ता है और यह ठीक भी है— सुसरालमें ऐसा वर्ताव करना चाहिए कि जिससे माता-पिता आदि पीहरवालोंकी प्रशंसा हो।

जबतक पुत्रीका विवाह नहीं होता, माता-पिता उसके अधि-कारी है, किन्तु भांवर पड़ते ही पति और पतिके माता-पिता उस बहू नाम-धारिणी कन्याके अधिकारी होजाते हैं। माता-पिता या भाई आदिका कर्त्तव्य है कि वे किसी योग्य सुन्दर, सर्वावयव, बलवान्, विद्वान, कुलीन और समुचित वयवाले वरके ही साथ कन्याका सम्बन्ध करें। मूर्ख, वृद्ध, बाल, रोगी, व्यसनी अथवा नपुंसक आदि वरोंके साथ कन्याका सम्बन्ध कर देनेवाले

व्यक्तियोंके समान अधर्मी नर-पशु दूसरा नहीं है, फिर चाहे यह विरुद्ध सम्बन्ध पैसेकी लालचसे किया जाय अथवा किसी दूसरे कारणसे।

जो निर्बोध बच्ची तुम्हे अपना जानती है, तुम्हारी आज्ञाओं का पालन करती है, प्रत्येक कष्टमें तुमसे आश्वासन और सहायता-पूर्ण सहायता–पानेकी आशा रखती है एव तुमपर अपना सारा विश्वास रखती है, हाय ! क्या वह भोली बच्ची तुम्हारे ही द्वारा दु ख-सागरमे ढकेल दी जाएगी ? अयोग्य पतिके गले बाध दी जायगी ? हाय हाय ! यदि ऐसा हुआ तो कहना होगा कि तुममे मनुष्यत्व नहीं, तुम मनुष्य वर्गमें रहने योग्य नहीं। जाओ, जगलमे जाओ और सिंह, भालुओंके साथ रहो—मनुष्य कहलानेका तुम्हे कोई अधिकार नहीं है।

थोडे विचारकी बात है कि ऐसा आत्मा जो तुम्हारे ही जैसा सुखाभिलाषी है, तुम्हारे ही जैसा दु खोंसे भयभीत होता है, एक ऐसा व्यक्ति जो तुम्हे पिता माता, भाई आदि स्वर्गीय शब्दोंसे सम्बोधित करती है, जो तुम्हारी ही प्रतिकृति है, जो तुम्हारे ही कलेजेका टुकड़ा है, उसे हे भाइयो और बहिनो ! ह नृशंस माता-पिताओ ! एक बूढेके गले मढते हो ? तुमपर आसमान नहीं फट पड़ता ? उसे ही एक रोगी या नपुंसकके हाथ सौंपते समय तुमपर बिजली नहीं गिरती ? एक अयोग्य या मूर्खकी जीवन-सगिनी बनानेमें तुम्हें लज्जा नहीं आती ? धिक्कार है इस लोभको, धिक्कार है इन चंचल चाँदीके टुकडोंको और धिक्कार है इस पैसे

के सुखको। जातिके नेताओ! अपनी जीभको वशमें करो, लड्डुओंका मोह छोड़ो और छोड़ो इस गुड़ियोंके खेलको–इस बकरियोंकी विक्रीको बन्द करो। बहुत हुआ, ज्यादा पाप न कमाओ। कन्याएं तुम्हारे ही जैसी सैनी जीव हैं, उनके हृदय है, उन्हें सुख-दुःखका ज्ञान होता है। उन्हें आह होती है! और आहमें अचूक असर होता है।

तुलसीदासजीने एक स्थान पर कहा हैः—

तुलसी हाय गरीबकी, कबहूँ न निष्फल जाय।
मुए चामको आहतें, लाह भस्म ह्वै जाय॥

खूब स्मरण रक्खो, कि किसी दूसरेको कष्टमें डालके तुम कभी सुखी नहीं हो सकते। तुम ऊपरसे सुखी चाहे भले ही दिखो, पर तुम्हारा हृदय दुःखाग्निमें निरन्तर जलता रहेगा– कभी शांत न होगा।

योग्य धार्मिक रीतिसे विवाही हुई वधू संज्ञक- कन्या अपने पतिकी अनुगामिनी होकर रहे। सास-ससुर, जेठ-जेठानी और देवर-देवरानी आदिसे प्रेम और नम्रताका वर्ताव करे। आवश्यक सेवा सम्हाल भी करे, सबकी उचित लाज भी रक्खे जो आवश्यक है। कभी कारण होनेपर भी कलह न करे। यदि अनुचित वर्ताव भी होवे तो उसे शांतिसे सहन करे और अपनी चतुराई, नम्रता या व्यवहार-कुशलतासे उस कलहके कारणको ही मिटादे। यह थोड़ासा गृह-कलह क्या क्या खेल दिखलाता है, सो हमारे शास्त्रोंमें खूब वर्णित है। जिस घरमें लड़ाई-झगड़े हुआ करते हैं, वहांसे

सारी रिद्धि सिद्धियां चल बसती हैं। तुलसीदासजीने एक स्थानमें कहा है—'जहां सुमति तहँ संपति नाना, जहां कुमति तहँ बिपत निदाना।' इसके सैकड़ों दृष्टांत प्रत्यक्ष देखनेमें आते हैं, विशेष कहनेकी आवश्यकता नहीं है।

स्त्रियोंका पातिव्रत्य धर्म पालन करना पहिला और सर्व श्रेष्ठ कर्तव्य है। पतिव्रता स्त्रियोंकी कीर्तिसे ही आज तक भारत नैतिक आदर्शमें सबसे आगे है। जैसे मोतीका पानी- आब--के कारण मूल्य है वैसे ही स्त्रीका पतिव्रत-धर्मरूपी पानीके कारण मूल्य है। यद्यपि सती पतिव्रताओंको अपने इस उज्वल धर्मकी इस अनोखे रत्नकी रक्षाके निमित्त बड़े बड़े कष्ट सहने पड़े हैं; पर धन्य है उन देवियोंको कि जिनने सब सहा, पर अपने पतिव्रत-धर्मको नहीं छोड़ा।

सीताने अपने इसी धर्मकी रक्षाके लिए कठिन वनमें जाना स्वीकार किया, रावणके बन्दी-गृहके कष्टोंको भी कुछ न समझा और अन्तमें उसी पतिव्रत-धर्मकी परीक्षा-निमित्त अग्निकुण्डमें प्रवेश किया। पर वाहरे शीलधर्म! तू भी क्या वस्तु है कि देवोंने उस अग्निको सरोवर बनाके सीतादेवीका यश चिरकालके लिए ध्रुव कर दिया। क्या सीता जैसी सतियां संसारमें पुनः पैदा हो सकती हैं? क्या वर्तमान कालकी स्त्रियोंमें से कोई अपनी छाती पर हाथ रखके यह कह सकती है कि यदि कर्मयोगसे उस-पर सीता ही जैसी विपत्ति पड़े तो वह अपने शीलधर्मपर आंच न आने देगी?

मैनासुन्दरी जैसी परम पतिव्रता स्त्री सराहने योग्य है, जिसन अपने कोढ़ी पति श्रीपाल और उनके ७०० अंग-रक्षक योद्धाओंका अपने मनोयोग और अपनी अप्रतिम सेवा-शुश्रूषासे कुष्ट रोग दूर किया था। सती अजनाने भी २२वर्ष तक अपने पति द्वारा घार तिरस्कार और कष्ट पाया, पर अपना स्नेह और धर्म जहांका तहां अटल रक्खा। अन्तमें अपनी इस कठिन तपस्याका फल पति-प्रेमके रूपमें पाया था।

कुलवती नामक एक सतीने पतिकी आज्ञासे अपना सारा जेवर पिताके यहां रख दिया और अनेक कष्टदायक सुदूर विदेशमें अपने पतिके साथ चली गई। आज तो कुछ विचित्र ही अवस्था है। स्त्रियां सब कुछ छोड़ सकती हैं पर जेवर नहीं छोड़ सकतीं। अनेक स्त्रियां तो अपने पतियोंको गहनोंके हेतु ऐसा तंग करती हैं कि जिसकी सीमा नहीं। फिर यह भी आशा नहीं कि वे किसी भारी कठिनाई पड़ने पर उस जेवरका सदुपयोग करने देंगी। पति कैसी ही आपत्तिमें क्यों न फसा हो, उसके प्राण ही क्यों न जाते हों, परन्तु श्रीमतीजी अपना गहना न देंगा। उनकी इस मूर्खतापर हम क्या कहें ?

जो स्त्रियां पतिकी अपेक्षा जेवरसे अधिक प्रेम करती हैं उन्हें हरिश्चन्द्रकी रानी शैव्या-तारा-के जीवन-चरित्रसे शिक्षा लेनी चाहिये, जिसने अपने पतिका सत्यव्रत रखनेको राज्य छोड़ा और पराई चाकरी की। फिर आभूषणोंकी तो पूछ ही क्या थी ? पतिव्रता रानी चेलनाके समान कितनी स्त्रियाँ बुद्धिमती होंगी कि

जिसने अपने बौद्ध पति राजा श्रेणिकको जैनी बनाया और उन्हें आत्म-कल्याणके सन्मुख किया।

शीलव्रतके प्रभावसे सुखानन्दकुमारकी स्त्री मनोरमाकी देवोंने रक्षा की। इसी प्रकारकी अनेकों पतिव्रताओंके चरित्र शास्त्रोंमें लिखे हैं। सच है कि स्त्रियोंके सब धर्मोंमें-सब व्रतोंमें और सब कर्तव्योंमें—पातिव्रत्य सर्वश्रेष्ट है।

पतिके सिवाय अन्य पुरुषोंको उनकी अवस्थानुसार पिता, भाई और पुत्र-सदृश समझकर यथायोग्य वर्ताव करना चाहिये। पातिव्रत्य धर्मकी महिमा शास्त्रोंमें इस प्रकार वर्णन की गई है—

श्लोक–तोयत्यग्निरपि स्रजत्यहिरपि व्याघ्रोपि सारंगति।
व्यालोऽप्यश्वति पर्वतोऽप्युपलति क्ष्वेडोपि पीयूषति॥
विघ्नोऽप्युत्सवति प्रियत्यरिरपि क्रीड़ातड़ागत्यपाम्।
नाथोऽपि स्वगृहत्यटव्यपि नृणां शीलप्रभावाद् ध्रुवम्॥

अर्थ—शीलके प्रभावसे अग्नि-जलके समान, सांप पुष्प-मालाके समान, सिंह मृगके समान, कुटिल हाथी घोड़ेके समान, विष अमृतके समान, विघ्न उत्सवके समान, शत्रु मित्रके समान, समुद्र छोटे कुण्डके समान और भयंकर वन घरके बगीचेके समान हो जाता है।

शीलकी प्रशंसा कहांतक की जाय? जो स्त्रियाँ बाल्यकालसे ही शीलधर्मकी रक्षा करती हैं उनके गृहमें कभी कोई दुःख आदि नहीं होता; न कोई भूत-प्रेतादिक व्यन्तरोंकी बाधा होती है। पति-व्रताओंकी सन्तान रूपवान्, बलवान्, धार्मिक और आज्ञाकारिणी

होती है। धर्मके और सब अंग बिना शीलके व्यर्थ हैं। कुसंगतिमें रहनेवाली मूर्ख स्त्रियाँ धर्मकी महिमा न समझ अपनी इज्जतमें बट्टा लगाती हैं. वे व्यभिचारिणियां मुख देखने-योग्य भी नहीं हैं। जो स्त्रियाँ ऐसी स्त्रियोंसे किसी प्रकारका सम्बन्ध रखती हैं उनका चित्त मलिन और कलुषित हो जाता है। व्यभिचारीके जप, तप, तीर्थ, व्रत, पूजा और दानादि सब निष्फल हो जाते हैं, ऐसा विचारकर व्यभिचारको दूरसे ही छोड़ो और शीलव्रतको तन-मनसे निरतिचार पालो, जिससे तुम सांसारिक सुखोंके अतिरिक्त मोक्षसुखकी अधिकारिणी होओ।

शीलगुणके साथ ही-साथ स्त्रियोंका शान्तस्वभावी और विनयी होना आवश्यक है। बुद्धिमती स्त्री वही है जो अपने सुस्वभावके कारण सारे कुटुम्बको प्रिय होती है, सबसे प्रिय वचन बोलती तथा सबका आदर करती है; किसीके कटुवचन सुननेपर भी क्रोध नहीं करती और सदा काल हँसमुख रहती है जिससे उसकी ही नहीं किन्तु उसके माता-पिताकी भी प्रशंसा होती है। कोई-कोई कर्कशाएँ अपने कुटुम्बसे तथा पतिसे सदा नाराज रहती हैं, कभी भी प्रेमसे नहीं बोलतीं। यदि बोलें भी तो शेरनीकी तरह खानेको दौड़ती हैं; परन्तु अन्य जनोंसे बड़े प्रेमसे बोलती हैं, ये लक्षण कुलटा स्त्रियोंके हैं। कोई-कोई स्त्रियाँ तो ऐसी जड़बुद्धि होती हैं कि घरकी देवरानी, जेठानी, सास और ननद आदिसे बैर बांधतीं, बोलतीं तक नहीं, पर दूसरी अयोग्य स्त्रियोंसे बड़ा ही सम्बन्ध रखती हैं, ऐसी स्त्रियोंकी गृहस्थी शीघ्र बरबाद होजाती

है और वे जन्मभर दुःख भोगती हैं। उन्हें चाहिये कि ससुरको पिताके और सासको माताके समान समझें तथा अन्य कुटुम्बीजनोंको यथोचित आदर, स्नेह और विनयकी दृष्टिसे देखें, सबसे प्यारसे बोलें और उनकी उचित आज्ञाओंको भूलकर भी न टालें।

स्त्रियोंको विचारनेकी बात है कि हमारे पतिके बचपनसे ही सास-ससुर यह बात विचार कर खुश होते हैं कि बहू आकर घरका सब काम सम्हालेगी और हमारी सेवा करेगी। इससे उन्होंने तन, मन और धन सम्बन्धी नाना कष्ट भोगकर भी तुम्हारे पतिकी सेवाकी है। उन्हें यही आशा थी कि ये हमारे बुढ़ापेमें काम आवेंगे। अब उनकी गिरती अवस्थामें उनकी सेवा करनेका—उनकी की हुई सेवाका प्रतिफल देनेको अपने कर्तव्य-पालनका अवसर आया है। तुम्हारा सौभाग्य है कि सास ससुर आदि गुरुजनोंके कारण तुम्हारी गृहस्थी सुशोभित होरही है। सदा हर्षपूर्वक उनकी सेवा करो, जिससे उनका मन किंचित् भी दुःखी न होने पावे। तुमको इतना तो विचारना चाहिये कि तुम्हारे सास, ससुर अपने लड़केको—तुम्हारे पतिको—पालन-पोषण करके हृष्ट-पुष्ट और पढ़ा-लिखा करके गुणवान् न करते तो आज तुम अपने पतिका ऐसा सुख कहांसे भोगतीं? ऐसेही अनेक कारण हैं जिनसे सास ससुरका तुम्हारे ऊपर बड़ा उपकार है। जो स्त्रियां ऐसे परोपकारको भूलजाती हैं और उनकी सेवा टहल नहीं करतीं वे दुष्टाएँ कृतघ्न और निन्दनीय हैं।

जो स्त्रियां अपने दुष्ट स्वभावके कारण गुरुजनोंकी सेवा नहीं करतीं, वृद्धावस्थामें उनका निरादर करतीं, कठोर वचन कहतीं, गालियां देतीं दुतकारती, और जो देतीं भी तो रूखा-सूखा और बुरा-भला अथवा रुपये-पैसे, कपड़े-लत्ते आदि से तंग करती हैं, अति परिश्रमका काम लेतीं, पेटभर खानेको नहीं देतीं वे मूर्खाएं वृद्ध होनेपर अपनी बहू-बेटियों द्वारा ठीक इसी तरह दुखित और तिरस्कृत होती हैं। संभवतः निस्सन्तान होतीं और एक न एक आधि-व्याधिके पाले पड़ी ही रहती हैं। अतएव प्रत्येक बहू-बेटियोंको ऐसा वर्ताव करना चाहिए, जिससे कुटुम्बकी सुख सम्पत्ति बढ़े। घरमें जैसी कुछ रूढ़ि चल जाती है फिर घरके छोटे-बड़े सब उसीके अनुसार चलने लगते हैं।

इस विषयमें एक कथा इस प्रकार है कि कंचनपुर नामक नगरमें कुटुम्ब रहता था। जिसमें सेठ धनपाल, सुभद्रा सेठानी, बसुपाल पुत्र और अविनीता नामक पुत्रवधू थी। एक समय सेठ धनपालने अपनी अति वृद्धावस्था जानकर घरका सब कारोबार अपने पुत्र वसुपालको सौंपदिया और आप शेष आयु निराकुलता से धर्मध्यान-पूर्वक व्यतीत करनेको उद्यत हुए। थोड़े दिनोंके बाद पुत्रवधू अविनीता अपने पतिको सर्वस्वका स्वामी समझ अभिमानमें आगई और मूर्खतासे सास ससुरका तिरस्कार करने लगी। उन्हें रसोईमें का बचा-खुचा रूखा-सूखा भोजन देने लगी सो भी मिट्टीके ठीकरोंमें और थोड़ासा। उतनेसे भोजनमें उनका पेट भरेगा कि भूखे रहेंगे इसकी उसे चिन्ता नहीं थी। उनको

पहिनने, ओढ़ने और बिछौनेको भी फटे पुराने कपड़े देती थी और नाना प्रकारके तिरस्कार-पूर्ण वचन कहती थी इस प्रकार बेचारे सेठ-सेठानी अति दुःखित हुए। वसुपाल भी माता-पिताकी कभी सुधि न लेता क्योंकि वह पक्का स्त्री-भक्त था।

देखो तो संसारका स्वार्थ, कि जिन माता पिताने जन्म दिया, बचपनसे पाला-पोषा और पढ़ा लिखाकर योग्य बनाया, उन्हींके लिये यह व्यवहार, उन्हींकी यह दशा, खेद! कितने ही पूज्य पुरुषोंकी इसी प्रकार पत्नी-सेवक कुपूतों द्वारा अवहेलना-तिरस्कार-होचुकी है, होरही है और होगी। सेठ बेचारेने तो शांतिमय जीवन विताना चाहा था, पर यह सारे संसारकी अशान्ति मानो उसपर टूट आई। भाग्यसे वसुपालको पुत्र-प्राप्ति हुई। पुत्रका नाम रक्खा गया गुणपाल। गुणपाल जब बड़ा हुआ तो श्रीनगरके सेठ जिनदासकी पुत्री विनयसुन्दरीके साथ विवाहागया। सेठ जिनदास बड़े धर्मज्ञ और अनेक शास्त्रोंके मर्मज्ञ थे। उन्होंने अपनी पुत्री विनयसुन्दरीको लौकिक और धार्मिक दोनों प्रकारकी शिक्षाएं भलीभांति दिलाई थीं, जिससे उसके गुण अन्य पुत्र पुत्रियोंके लिये उपमा देने योग्य होगये थे। जब यह विनयसुन्दरी पतिके घर आई, तो अपनी सास अविनीताका चरित्र देख दङ्ग होगई, परन्तु करे क्या, प्रथम तो सासूकी विनयका ध्यान, दूसरे नवागता होनेके कारण प्रत्येक बातके कहने में संकोच।

परन्तु उसे अपने अजिया ससुर—पतिके दादा और अजिया सास—पतिकी दादी—का दुःख देखकर चैन न पड़ा।

यह और सभी बातोंसे चित्त हटाकर सदैव इस बातके विचार में दत्तचित्त रहने लगी कि किस उपाय से इनका दुःखदूर करूं। वह पढ़ी-लिखी और विदुषी थी उसने एक युक्ति निकाल ही ली अर्थात् वे ठीकरे जो उन वृद्ध दुखियोंके भोजन करलेने पर फेंक दिये जाते थे, जोड़ २ कर घरके एक कोने में रखने लगी। एक दिवस अवनीताने उन घड़ोंके टुकड़ोंको इकट्ठा देख विनय-सुन्दरीसे पूछा—ये तूने क्यों इकट्ठे किये है? उसने विनय पूर्वक उत्तर दिया कि सासुजी! अपने कुलकी रीति ता करनी ही पड़ेगी उसकी यह तैयारी है। आप और ससुरजी भी कभी बूढ़े होंगे तब रूखा-सूखा भोजन परोसनेके लिये इन ठीकरोंकी जरूरत पड़ेगी। इसीलिये इन्हें एकत्रित कर रही हूं। यह सुनकर अविनीताकी आखें खुलगई। उसने उसी घड़ीसे सास-ससुरके खान-पान और पहिनने ओढ़नेका उत्तम प्रबन्ध करदिया और अपने पतिको भी उनकी सेवा करनेके लिए उत्साहित किया। फिरतो सेठ सेठानी धर्म में तत्पर हुए। ये सब करतूतें विनय-सुन्दरीके सद्गुणोंकी थीं, जिनके कारण कुटुम्ब में उत्पन्न हुआ एक महा-कुलक्षण शान्त होगया। सेठ सेठानीने सन्तुष्ट होकर विनयसुन्दरीको लौकिक पारलौकिक सुखोंकी प्राप्तिके लिये आशीर्वाद दिया।

स्त्रीको अपनी पतिकी आज्ञाकारणी और उसके सुख दुखकी साथिन होना योग्य है, क्योंकि पतिके सुखी रहनेसे ही स्त्रीका जीवन सफल है। जिस प्रकार प्राणिोंके शरीरका मूलभूत जीव

है, उसी प्रकार स्त्रीका मूलभूत पति है। पतिके बिना स्त्रीका जीवन वृथा है। इस हेतु पतिको सदैव प्रसन्न रखना स्त्रीका कर्तव्य है। स्त्रीको कभी भी पतिकी आज्ञा भङ्ग नहीं करनी चाहिये। सदैव उसके योग्य सत्कार और विनयका ध्यान रखना चाहिये। कभी भी पतिसे कड़े स्वरसे नहीं बोलना चाहिये। पतिके आसनसे ऊंचे आसन परभी कभी न बैठना चाहिये। पतिकी नाराजी से स्त्रीको शांति धारण करनी चाहिये, क्योंकि स्त्रीके शांत न रहनेपर कलह बहुत बढ़ जाती है। जब पतिका क्रोध ठंडा पड़ जाय तब नम्रता-पूर्वक ठीक ठीक बात समझाये। यदि अपना अपराध निकले तो पतिसे क्षमा मांगे। जब पति दो चार मनुष्योंके पास बैठकर बातचीत करता हो, तो किसी वस्तुके लानेकी बात न कहे न कहलावे। यदि किसी वस्तुकी आवश्यकता हो तो उचित समयमें अच्छे ढंगसे कहे और प्रत्येक व्यवहार ऐसी नम्रता और सुशीलतासे करे कि पतिका चित्त प्रसन्न और संतुष्ट रहे। यदि घरमें सुयोग्य गृहिणी हो तो पति बाहिरसे कैसा ही खेद-खिन्न आवे, घरमें आते ही प्रसन्न हो जायगा।

कोईर मूर्ख स्त्रियां पतिकी भोजन-वेलामें अपने आभूषणोंका प्रस्ताव छेड़ती हैं, कोई किसी वस्त्र बनवानेके लिये कहती हैं, अथवा देवरानी-जेठानीकी घी-तेल और अनाजकी तथा न जाने कहां कहांकी जिक्र छेड़ती हैं कि जिससे पति भरपेट खा भी नहीं सकता। इससे या तो उस समय मौन रहना चाहिये अथवा कोई धार्मिक वा व्यवहारिक कथा छेड़नी चाहिये। पर खूब स्मरण रहे

कि उस कथामें शोक, दुःख, चिन्ता वा घृणा आदि बिलकुल न हो किन्तु प्रेम, धर्म, नीति और किंचित् हास्य आदिकी मात्रा हो।

साराश यह कि भोजन करते कराते समय पति पत्नी खूब प्रसन्न रहें। जो स्त्री अपने पतिके सुखमें सुखो और दुःखमें दुःखी होती है—उसे प्राणोंसे भी अधिक प्यारा समझ उसकी सेवामें तत्पर रहती है वही कुल लक्ष्मी है और बड़ी सती पतिव्रता है। यदि पतिको व्यापारमें हानि हुई हो वा कोई दैवी आपत्ति आई हो, तो स्त्री अपने वस्त्राभूषणोंका मोह छोड़ दे और यदि उनसे पति की कीर्ति रहती हो तो रक्खे-इज्जत बचावे। अपने घरकी बात भूलकर भी बाहिर न कहे। घरमेंसे न देने योग्य ऐसी कोई चीज किसीको न दे अथवा न बेचे, जिसपर पति आदि कुटुम्बियोंके रुष्ट होनेकी सभावना हो।

सदा अपने गृहस्थी सम्बन्धी हानि-लाभका विचार रखे, क्योंकि पति कैसा ही कमाऊ क्यों न हो, यदि स्त्रिया घरको सम्हालके न चलावें तो बढ़तो नहीं हो सकती। प्रत्येक स्त्रीका कर्तव्य है कि खर्च बडी ही सावधानी और चतुराईसे करे, सदैव समुचित बचत करती रहे। यदि दुर्भाग्यसे किसी स्त्रीको व्यसनी, आलसी और अधर्मी आदि पति मिले तो उसे नैतिक शिक्षा आदिसे सुमार्गपर लावे, परलोक व धर्ममें रुचि उत्पन्न करनेका उपाय करे। किसीको धर्ममार्गपर लगा देना बड़े ही पुण्य का कार्य है और फिर धर्ममार्गपर लगानेवालोंमे भी इतनी योग्यता होनी चाहिये। गरज यह कि स्त्रियोंको बचपनसे ही ज्ञान

सम्पादन करना चाहिये ताकि समय समयपर उसकी सहायतासे कठिनाइयोंपर विजय पाती रहें।

स्त्रियोंको साधारण—जितनी कि उन्हें आवश्यक है—वैद्यक विद्या सीखनेकी भी बड़ी आवश्यकता है। यदि इस विषयकी शिक्षा स्त्रियोंने नहीं पाई है तो अपने कर्तव्योंमेंसे एक सबसे बड़ा कर्तव्य-पालन, सच्ची माता होना, बालबच्चोंकी रोग-चर्य्या और औषधि आदि करना—नहीं कर सकतीं और अपना भी रोगोंसे बचाव नहीं कर सकतीं। इसलिए इस स्थान पर कुछ ध्यान देने योग्य बात लिखी जाती है।

(१) गर्मी-शरीरमें अधिक तापके लगनेसे हृदय सूख जाता है, जिससे दुर्बलता आदि नाना रोग उत्पन्न होजाते हैं। इसलिये बाल बच्चोंका और अपना भी गर्मीसे बचाव करना चाहिये।

(२) सरदी—ज्वर, बात, शरीरमें दर्द और पेटमें पीड़ा इत्यादि रोग सर्दीके दोषसे होते हैं। उष्ण देशके रहनेवालोंको बहुधा अधिक सरदी होजाया करती है। इसका कारण यह है कि वे गर्मीसे व्याकुल हो असमयमें ही शरीरको ठंड लगा देते हैं। अधिक परिश्रम करके आनेपर शीघ्र ही कपड़े उतार डालना, अथवा जल पी लेना, ओस पड़नेकी जगह सोना, सोते समय अधिक ठंड लगने देना, वर्षाकालमें शरीरके हवा लगने देना, ठंडमें कपड़ोंको कम पहिनना, और शीत ऋतुमें ठंडे जलमें देर तक नहाते रहना आदि बातोंसे सरदी हो जाया करती है। कभी

कभी इस सर्दीसे ही प्राणघातक रोग हो जाते हैं अतएव इससे बचनेका सदा ध्यान रखना चाहिए।

(३) पीनेका जल—जीवन धारण करनेके लिये जल एक मुख्य पदार्थ है। बहती हुई नदी और अधिकतर गहरे कुओंका पानी साफ होता है। जलको सदा छानकर पीना चाहिये, जिससे कूड़ा-कचरा और जीव-जन्तु आदि पीनेमें न आवें। जलके पात्रों को सदा ढके रक्खो। पाखानेसे आकर कभी पानी मत पियो। भोजन करते समय भी अपनी प्रकृतिके अनुसार पानी पीना चाहिये, जिससे कि पाचनक्रिया अच्छी हो। निराहार या खड़े खड़े पानी पीने, एवं धूपमेंसे आकर एकदम पानी पी लेने आदिसे तिल्ली (पील्हा) बढ़ जानेका डर रहता है और दूसरे संघातक रोग भी हो जानेका भय रहता है, इसलिये पानीकी अशुद्धता और दुरुपयोगसे बचना चाहिए।

(४) भोजन—यह मनुष्य के जीवन का आधार है, अतः इस पर विशेष ध्यान देनेकी आवश्यकता है। भोजनका स्थान साफ हो, छतमें कीड़े-मकोड़ोंसे बचावके लिये एक कपड़ा बंधा हो, प्रकाश और वायुके लिए पूरा पूरा प्रबंध हो। सामग्री प्रकृति और ऋतुके अनुसार ताजी हो। भोजन करनेके पीछेही नहा लेना मंदाग्निका रोग उत्पन्न करता है। भोजन करते ही काममें लग जाना भी हानिकारक है। भोजनके पीछे किंचित् विश्राम लेना—दांएँ-बांएँ करवटसे लेटना चाहिये, परन्तु यह विश्राम पन्द्रह बीस मिनिटसे अधिक न हो अथवा नींदके रूपमें

भी न हो। फिर परिश्रममें लगना चाहिए। कच्चा और बासी भोजन करनेसे पाचनशक्ति घटती और उदररोग पैदा होते हैं, बुद्धि भी न्यून होती है। भोजन उतना ही बनाना चाहिए जितना आवश्यक हो और बासी न बचे।

(५) वायु—प्रत्येक मकानमें वायु और प्रकाशका पूरा प्रबन्ध हो। पाखाना सोने और खानेके घरसे दूर हो तथा उसके झाड़ने आदिका पूरा प्रबन्ध हो। गोशाला भी हमारे शयन गृहसे जुदी हो। सोनेके गृहमें ज्यादा और व्यर्थका सामान नहीं रहना चाहिये। घरके आसपास कोई ऐसी मैली नाली या गली कूचा न होना चाहिये जो मैला रहता हो। मकान प्रतिदिन पूरा झाड़ा-पूछा जाना चाहिए। खिड़कियोंका भी यथोचित् प्रबन्ध हो।

(६) निद्रा—दिनभरके परिश्रमकी थकावटको दूर करनेके लिये विश्राम लेना आवश्यक है और यह बात निद्रासे भलीभाँति पूर्ण होजाती है। यथोचित् निद्रा आनेसे बहुतसे रोग नहीं होने पाते। रातमें बहुत जागने या भलीभांति निद्रा न लेनेसे शरीर अकड़ने लगता है, देह टूटती और आलस्य आता है तथा काम करनेमे भी जी नहीं लगता; अतः योग्य रीतिसे निद्रा लेना जरूरी है। सीले स्थानमें अथवा बिना कुछ ओढ़े सोना हानिकारक है। पौ फटनेके पहिले ही शय्या त्याग देना आरोग्यप्रद है।

(७) व्यायाम-कसरत—अंगप्रत्यंगोंको चलाये बिना शरीरमें फुर्ती नहीं आती। बच्चोंको भी भले प्रकार कुदकने और खेलने देना चाहिए; यही उनका व्यायाम है। दिन-रात उन्हें गोदीमें

लिए रहना जानबूझकर बीमार बनाना है। स्त्रियोंको पुरुषोंकी नाईं दण्ड पेलना और बैठकें लगाना आवश्यक नहीं है, किन्तु घरका झाड़ना, बुहारना, पानी भरना, कपड़े छांटना (धोना) और पीसना आदि ही उनका व्यायाम है। जो स्त्रियाँ गृहके इन कामों के करनेसे वंचित रहती हैं वे ही प्रायः अधिक रोगी हुआ करती हैं और थोड़े समय जीती हैं। काम-धाम करनेवाली स्त्रियां नीरोग रहती हैं, इसलिये उन्हें इस जीवनमें सुख मिलता है, परलोकको भी नीरोग रहनेके कारण वे सुखकी कमाई कर सकती हैं।

कुछ साधारण और शीघ्र हो जानेवाले रोग और उनकी औषधियां भी जान लेना स्त्रियोंको जरूरी है। बचपनमें बच्चों को दांत, ज्वर और खांसी आदि हो जाया करती है तथा यदि उपाय न किया तो एक बड़े रोगमें बदल जाती हैं। मूर्ख माताएँ भूत-प्रेत या नजर आदिके भ्रममें पड़, कभी-कभी अपने बच्चोंसे हाथ धो बैठती हैं। कुछ रोगोंकी पहिचान और उनकी औषधियां नीचे लिखी जाती हैं—

सांसकी पहिचान - जब सांस लेते समय बालककी नाकसे सुर जल्दी-जल्दी चलकर फैलता हो तो जान लो कि इसकी छाती में दर्द है। छातीमें दर्द होनेसे आंखें पथराने लगती हैं, सांस लेनेमें पीड़ा होती और पेट फूल जाता है। होंठ पीले पड़ जाते तथा मुँह लाल और सफेद पड़ जाता है। ऐसी अवस्थामें घबराना नहीं चाहिए, किन्तु योग्य वैद्य डाक्टर या हकीमसे इलाज कराना चाहिये।

आंखोंकी पहिचान—जब शरीरकी हालत अच्छी होती है तो आंखें साफ रहती हैं। जब चेहरा म्लान या आंखें मैली रहें तो जानना चाहिये कि बच्चेके सिरमें बीमारी होनेवाली है।

नींदका न आना—जब बालकको ठीक-ठीक नींद न आवे, तब जानना चाहिए कि उसका स्वास्थ्य बिगड़ा हुआ है। इसी प्रकार जब बालक मामूलीसे ज्यादा रोवे, तो जानना चाहिए कि बालक बीमार पड़नेवाला है।

खांसी—बालकको जब सरदी होती है तब वह बारबार खांसता है और उसकी आवाज बैठ जाती है। खांसनेसे कभी-कभी पसली भी चल निकलती है।

माता या चेचक बच्चोंको चेचक निकलनेके पहिले टीका लगवाना आवश्यक है।

जो लोग लाड़-प्यार या मूर्खतासे टीका नहीं लगवाते वे पीछे पछताते हैं। माता निकलनेके दो तीन दिन पहिलेसे ज्वर आता है, दिलपर घबराहट और बेहोशी होती है, तीसरे दिन बदन लाल पड़ जाता है और माथेपर खसखस जैसे छोटे-छोटे दाने (फुंसिया) दिखाई देते हैं। यह दशा उस चेचककी है जो टीका लगानेसे भी कभी-कभी निकलती है। यदि टीका न लगा हो तो चेचक बड़े जोरसे निकलती है। मूर्ख स्त्रियां इसका मूल कारण तो जानती नहीं; समझती हैं कि यह शीतला देवीका प्रकोप है और इसलिये शीतला देवीकी पूजा-अर्चा किया करती हैं, जिससे कोई लाभ नहीं होता। माताकी बीमारी, बच्चोंमें माताके पेटकी

गर्मीसे होती है। माताके पेटकी गर्मी ही कारण पाकर इस विकारके रूपमें निकलती है; इसीलिये इसका नाम 'माताकी बीमारी' पड़ा है। तर और शीतल भोजनादि देनेसे शीघ्र और सरलतापूर्वक यह विकार निकल जाता है—शान्त हो जाता है। बुद्धिमती स्त्रियां देवियोंके मठोंमें नहीं दौड़ी फिरतीं किन्तु समझ-बूझकर इलाज करती हैं जिससे रोग शीघ्र ही शान्त हो जाता है।

यदि बालककी डूंठी (नाभी) किसी कारण पक जाय तो दीपकका तेल लगावे या हल्दी, लोध (पंसारियोंके यहां मिलनेवाली एक औषधि) और नीमके फूल बारीक पीसकर लेप करें। यदि बालक दूध न पीता हो, तो पहिले यह जानना आवश्यक है कि किस पीड़ासे दूध पीना बन्द हुआ है? जिस अंगपर बालक बार-बार हाथ फेरता हो, उसी स्थानपर दर्द समझकर शीघ्र ही उसका योग्य इलाज करना चाहिये। यदि हसली चल गई हो तो दाईको बुलाकर मलवा देनेसे आराम होजाता है। यदि कागला बढ़ गया हो तो चूल्हेकी राख और काली मिरच पीसकर अंगुलीपर लगा चतुराईके साथ उसे दबा देवें।

कभी-कभी बालककी आंखें गर्मी, सर्दी या दांत निकलनेके सबब दुखने लगती हैं, तब रसोत (पसारियोंके यहां मिलनेवाली एक औषधि) पानीमें घिसकर आंखपर लेप करे। आंखके भीतर भी एक बूँद डाले। संभवतः इसी दवाईसे बालककी आंखें अच्छी हो जाएँगी अथवा पीली मिट्टीकी टिकियां बनाकर

घड़ेपर रखदें और रातको सोते समय आंखपर बांध दें। इस रीतिसे आंखोंका दुःखना शीघ्र आराम हो जाता है।

यदि बालकको खांसी होजाय तो सोते वक्त उसके मुँहमें अनारका छिलका दबा दे अथवा मूभलमें सिके हुए—भुने हुए—बहेड़ेके छिलकेका चूर्ण बालकको चटावे। यदि बालकको पेशाबके साथ खून आता हो तो पाषाण-भेद और सौंठा पानीमें पीसकर पिलावे। यदि दस्तमें आंव आती हों तो बायविडंग, पीपल, अजमोद, कुडकुडेके बीज और सफेद जीरा पानीमें पीस मिश्री मिलाकर पीनेको दे। यदि आंव खूनके साथ आती हो तो कच्ची पक्की सौंफ पीसे और उसमें कच्ची खांड मिलाकर चूरणकी भांति खानेको दे अथवा सोंठका मुरब्बा खिलावे। यदि बालकको ज्वर आता हो तो ऐसी दवा देनी चाहिये, जिससे कुछ दस्त होकर पेटका विकार निकल जावे।

दाँतोंको सहज रीतिसे निकालनेका यह उपाय है कि धावड़े के फूल और पीपलको आंवलेके रसमें मिलाकर बच्चेके मसूड़ों पर मले। यदि पेशाब बन्द होगई हो तो टेसूके (पलाश-ढ़ेवला) फूलोंको बालकके पेडूपर लेप करदे। जहांतक हो सके बालकोंको जल्दी पचनेवाला ताजा भोजन देना चाहिये, जिससे ये निरोग रहें। यदि कोई रोग भी हो जाय तो धीरतापूर्वक आप ही या किसी अच्छे वैद्य द्वारा दवाई करावे, क्योंकि मूर्खतावश अधीर होने और धूर्त ढ गियोंके मंत्र-जंत्रोंमें पड़नेसे हानिके सिवा कुछ भी लाभ नहीं है। इसलिये प्रत्येक बातकी वास्तविकता जाननेके

लिये सदैव अच्छी पुस्तकें पढ़ती रहनी चाहिये, इससे संसारिक सुखोंके सिवाय पारमार्थिक सुखोंकी प्राप्ति होती है।

यहां प्रसंगवश यह बात भी कह देना योग्य है कि कोई स्त्रियां बिना आगा पीछा सोचे ही दो-दो चार-चार वर्षकी अवधि तक व्रत आदि करनेकी प्रतिज्ञा कर लेती हैं। ऐसी ही अवस्थामें यदि गर्भ रह जाता है तो गर्भको इन व्रत उपवासोंसे बड़ा ही कष्ट होता है। बेचारी बड़े धर्म संकटमें पड़ जाती हैं--प्रतिज्ञा भी तोड़ नहीं सकतीं और गर्भका कष्ट भी देख नहीं सकतीं। उत्साहके वशवर्ती हो हमें कोई प्रतिज्ञा नहीं करनी चाहिये। द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, संहनन वा शक्ति देखकर ही कोई प्रतिज्ञा करो। कुछ मेरा यह कहना नहीं है कि व्रत उपवास न किये जाएं, परन्तु भले प्रकार आगा पीछा सोचकर।

महिलाओंके दैनिक कर्त्तव्यः—

दोहा--गृहि श्राविकाकी क्रिया, चहिये यत्नाचार।
ताकी वर्णन करत कछु निराख श्रावकाचार॥
जल छानन, तजि निशि--अशन, श्रावक चिन्ह जु तीन।
प्रति दिन दर्शन जो करे, सो जैनी परवीन॥

स्त्रियोंको उचित है कि सूर्योदयके पूर्व शय्यासे उठकर पंच परमेष्ठीका स्मरण करें। बिस्तरोंको सम्हाल कर यथास्थान रक्खें। मल-मूत्र आदिकी बाधाओंसे निश्चिंत होवें। अनेक आलसी स्त्रियां दिन चढ़े उठती हैं और बिस्तरोंको ज्योंके त्यों

छोड़कर दूसरे काम धंधोंमें लग जाती हैं, यह बड़ी अज्ञानता है। स्त्रियों को पतिसे पीछे सोना और पहिले उठना चाहिये।

गांवके बाहर शौच जाना आरोग्यप्रद और अहिंसाका पोषक है। शौच कपड़े बदलकर जाना चाहिये, क्योंकि अपवित्र हाथों व अपवित्र-स्थानके स्पर्श हो जानेका भय रहता है। शौचादिकका पानी छना हुआ होना चाहिये। जो बर्तन शौच जानेका हो उससे दूसरा कार्य--पानी पीना आदि--न किया जाय। शौचके लिये जितना पानी आवश्यक हो उतना ही लेना चाहिये। बहुतसे लोग जलकायिक-जीवोंकी हिंसाके ख्यालसे पानी थोड़ा लेते हैं जिससे अपवित्रता ज्योंकीत्यों बनी रहती है। ध्यान रखनेकी बात है कि गृहस्थके लिए स्थावर कायिककी हिंसाका सर्वथा त्याग करना अशक्य है, परन्तु इसका मतलब कुछ यह नहीं है कि व्यर्थ ही स्थावरकायिक जीवोंकी हिंसा की जाय। शौचके अंतमें अधोस्थानको प्रासुक जलके सिवाय शुद्ध मिट्टी अथवा भस्मसे धोकर शुद्ध करना भी अच्छा है। इसी प्रकार लघुशंकाके पीछे इन्द्रिय व हाथ-पांव धोना आवश्यक है।

शौच—क्रियासे निपट कर घरको कोमल बुहारीसे बुहारना चाहिए। जितने भी जीव बुहारने पर निकलें, एक सुरक्षित स्थानमें रख दिये जाएं। खजूरकी कांटेदार बुहारी छोटे छोटे जीवोंका बहुत ही संहार करती है। या तो उससे बुहारा ही न जावे या बुहारा भी जावे तो उसकी एक-एक पत्तीको फाड़कर चार-चार छः छः भाग कर देना चाहिये जिससे बुहारी कोमल हो जावे।

रुई अथवा कम्मारोकी बुहारी बड़ी ही अच्छी होती है। पश्चात् और भी जो ऐसे काम हों उन्हें दया-धर्मका ख्याल करते हुए पूर्ण करके छने हुए प्रामाणिक—शुद्ध—जलसे स्नान करे। बहुतसे मनुष्य और स्त्रियां विषयसेवन, लघुशंका और दीर्घशंकाके पीछे स्नान और दन्तधावन नहीं करतीं, यह कितनी मलिनताकी बात है?

हां, यह जरूर है कि इन कामोंमें अनछने पानीका उपयोग न करना चाहिये। जल छाननेकी आज्ञा दूसरे धर्मोंमें भी पाई जाती है।❀

इस प्रकार पवित्र हो अपनी योग्यतानुसार मोटा या पतला, मँहगा या सस्ता, स्वदेशी कपड़ा जो कि शुद्ध और साफ हो पहिनकर प्राशुक द्रव्य—लवंग, बादाम और चावल आदि लेकर जिन मंदिर जावे। जिस ग्राममें जिन मंदिर नहीं उसमें जैनियोंको वास करना उचित नहीं। यदि यात्रा या देशाटनके समय दर्शन न मिलें तो अशुभका उदय विचार एक रस छोड़ भोजन करे, पर जो ग्राममें जिन मंदिरके होते हुए दर्शन-पूजन आदि नहीं करतीं वे अनुचित करती हैं। प्रत्येक व्यक्तिको भोजनके

❀ दृष्टिपूतं न्यसेत् पादं, वस्त्रपूतं पिबेज्जलं।
सत्यपूतं वदेद्वाक्यं, मनःपूतं समाचरेत्॥
संवत्सरेण यत्पापं, कुरुते मत्स्यबंधकः।
एकाहेन तदाप्नोति, अपूतजलसंग्रही॥ (स्मृति)

पहिले भगवानके दर्शन और आत्म-चिन्तन करनेकी आवश्यकता है। मंदिरको आते समय कीड़े-मकोड़े और मल मूत्र आदिको बचाता हुआ चले, जिससे जीवोंकी रक्षाके साथ साथ अपनी रक्षा और पवित्रता रहे। चमड़ेके जूते पहनकर मंदिर आना बुरा है। अच्छा हो यदि उस समय जूते पहिने ही न जाएँ और जो पहिने भी जाएँ तो कपड़ेके। मंदिर में प्रवेश करनेके पहिले जूतोंको उतारकर पैरोंको जलसे खूब धोना उचित है। फिर सब प्रकारकी उद्धतता और संकल्प-विकल्प छोड़कर जय जिनेन्द्र शब्द करती हुई प्रतिमाजीके सन्मुख जावे और जय निस्सही, जय निस्सही, जय निस्सहीका उच्चारणकर श्रीजीको तीनबार नमस्कार करे (जय निस्सही ३ के उच्चारणका कारण ऐसा बताया है कि यदि कोई देव उस समय दर्शनको आया हो तो एक ओर हट जाए, तुम्हारा व उसका काम अविच्छिन्न रूपसे होता रहे किसीको बाधा न हो)।

श्रीजीके सम्मुख खड़े हो, विचारे—'मैं आत्मस्वरूपके बताने वाले जिनेन्द्रका दर्शन कर रही हूँ। इन्होंने किस प्रकार कष्ट सहन किये हैं! कैसे-कैसे कर्मोपर विजय पाई है! कब वह दिन आयगा जब मैं ठीक उसी मार्गपर चलने लगूँगी जिसपर जिनेन्द्र गए हैं, मैं कैसे-कैसे पाप कर रही हूँ, भूल रही हूँ, भटक रही हूँ पराएको अपना समझ रही हूँ और स्वप्नको सच्चा मान रही हूँ।'

फिर कोई सुन्दर पद जो तुम्हें तुम्हारी वास्तविकताकी ओर

लेजाय, पढ़ो और भावोंकी निर्मलतासहित स्तोत्र पढ़ती हुई मस्तक नमाओ एवं द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावके अनुसार एक द्रव्य या अष्ट द्रव्यसे भगवान्‌की भक्तिपूर्वक पूजा करो। फिर भगवान्‌की तीन प्रदक्षिणा× (भगवान्‌की दाहिनी ओरसे प्रदक्षिणा की जाती है) दो। प्रदक्षिणा देतेहुए प्रत्येक दिशामें तीन आवर्त❀ और एक शिरोन्नति= करो और पश्चात् यह पाठ पढ़ो—

श्लोक—दर्शनं देवदेवस्य, दर्शनं पापनाशनम्।
दर्शनं स्वर्गसोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनम्॥१॥

अर्थ—देवोंके देवका दर्शन पापोंका नाश करनेवाला, स्वर्गकी सीढ़ी और मोक्षका साधन है॥१॥

दर्शनेन जिनेन्द्राणां. साधूनां वन्दनेन च।
न चिरं तिष्ठते पापं, छिद्रहस्ते यथोदकम्॥२॥

अर्थ—श्री जिनेन्द्रके दर्शन करनेसे और साधुओंकी वन्दना करनेसे पाप बहुत दिनोंके पाप नष्ट हो जाते हैं, जैसे छिद्रवाले हाथमें पानी नहीं ठहरता॥२॥

वीतरागमुखं दृष्ट्वा, पद्मरागसमप्रभम्।
अनेकजन्मकृतं पापं, दर्शनेन विनश्यति॥३॥

अर्थ—पद्मरागमणिके समान शोभित श्रीवीतराग भगवान्‌का मुख देखकर अनेक जन्मोंके किये हुए पाप नाश होजाते हैं॥३॥

×प्रदक्षिणा देते हुए हाथ जोड़े रहना चाहिए।

❀जोड़े हुए हाथ घुमानेको 'आवर्त' कहते हैं। =जोड़े हुए हाथोंपर मस्तक झुकाकर रखनेको 'शिरोनति' कहते हैं।

दर्शनं जिनसूर्यस्य, संसारध्वान्तनाशनम् ।
बोधनं चित्तपद्मस्य, समस्तार्थप्रकाशनम् ॥४॥

अर्थ—सूर्यके समान श्री जिनेन्द्र दर्शनसे सांसारिक अन्धकार नाश होता है, चित्तरूपी कमल प्रफुल्लित होता है और सर्व पदार्थ प्रकाशमें आते हैं—ज्ञात होते हैं ॥४॥

दर्शनं जिनचन्द्रस्य, सद्धर्म्मामृतवर्षणम् ।
जन्मदाहविनाशाय, वर्द्धनं सुखवारिधेः ॥५॥

अर्थ—चन्द्रमाके समान श्री जिनेन्द्रदेवका दर्शन करनेसे सत्य-धर्मामृतकी वर्षा होती है, जन्म जन्मकी दाह ठण्डी होती और सुख-समुद्रकी वृद्धि होती है ॥५॥

जीवादितत्त्व-प्रतिपादकाय सम्यक्त्वमुख्याष्टगुणार्णवाय ।
प्रशांतरूपाय दिगम्बराय, देवाधिदेवाय नमो जिनाय ॥६॥

अर्थ—जो जीवादि सात तत्त्वोंको बतानेवाले, सम्यक्त्व आदि आठ गुणोंके समुद्र, शान्त तथा दिगम्बर रूप हैं; उन देवाधिदेव श्री जिनेन्द्र भगवान्‌को नमस्कार हो ॥६॥

चिदानन्दैकरूपाय, जिनाय परमात्मने ।
परमात्मप्रकाशाय, नित्यं सिद्धात्मने नमः ॥७॥

अर्थ—जो ज्ञानानन्दरूप हैं, अष्ट कर्मोंको जीतनेवाले हैं, परमात्मस्वरूप हैं तथा परमतत्त्व परमात्माके प्रकाश करनेवाले हैं, उन सिद्धात्माको नित्य नमस्कार हो ॥७॥

अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात् कारुण्यभावेन, रक्ष रक्ष जिनेश्वर ॥८॥

अर्थ—हे जिनेश्वर ! आपही मुझे शरणमें रखनेवाले हो और कोई शरणमें रखने योग्य नहीं है, इसलिये करुणा करके आप संसारके पतनसे रक्षा कीजिये ॥८॥

नहि त्राता नहि त्राता, नहि त्राता जगत्त्रये ।
वीतरागात्परो देवो, न भूवो न भविष्यति ॥९॥

अर्थ-हे भगवन् मेरा तीन लोकमें कोई रक्षक नहीं है ! नहीं है !! नहीं है !!! यदि कोई है, तो हे वीतराग देव ! आप ही हैं, क्योंकि आपके समान न तो कोई देव आजतक हुआ और न होगा।

जिनेभक्तिर्जिनेभक्तिर्जिनेभक्तिर्दिने दिने ।
सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु भवे भवे ॥ १० ॥

अर्थ-मैं यह आकांक्षा करता हूँ कि जिनेन्द्र भगवान् में मेरी भक्ति दिन दिन होती जावे और प्रत्येक भवमें सदा बनी रहे।

जिनधर्मविनिर्मुक्तो, मा भवेच्चक्रवर्त्यपि ।
स्याच्चेटोऽपि दरिद्रोऽपि, जिनधर्मानुवासितः ॥ ११ ॥

अर्थ- जिनधर्म-रहित चक्रवर्ती होना भी अच्छा नहीं। जिन धर्मका धारी होकर पराया दास तथा दरिद्री होना भी अच्छा है।

जन्मजन्मकृतं पापं जन्मकोटिमुपार्जितं ।
जन्ममृत्युजरातंकं, हन्यते जिनदर्शनात् ॥ १२ ॥

अर्थ-जिनेन्द्रके दर्शनसे करोड़ों जन्मके किये हुए पाप तथा जरामृत्युरूपी तीव्ररोग अवश्य ही नष्ट हो जाता है।

इस प्रकार मन लगाकर दर्शन पाठ पढ़े। पश्चात् एक तरफ जहांसे भगवान्‌की मुद्रा अच्छी तरह दिखाई दे, खड़े होकर स्थिर चित्त हो, पंचकल्याणक तथा ध्यानमुद्राका बार बार स्मरण करे और भक्ति भावसे भगवान्‌के गुण गावे—"कि हे त्रैलोक्यनाथ! हे सर्वज्ञ वीतराग! हे देवाधिदेव! हे अनंतचतुष्टय-मंडित अर्हंत भगवन्! तुम्हारी जय हो। धन्य है तुम्हारी ध्यान-मग्न-मुद्रा और धन्य है तुम्हारा पवित्र नाम! तुम तरण-तारण अधम-उधारण हो। संसार समुद्रसे पार करनेवाले हो। तुम्हें मेरा नमस्कार हो। इंद्रादिसे सेवनीय तुम्हारे गुण भला कौन कह सकता है?"

इसके पश्चात् निम्न या ऐसी ही कोई दूसरी स्तुति पढ़े।

स्तुति—

प्रभु पतितपावन मैं अपावन, चरण आयो शरणजी।
या बिरद आप निहार स्वामी, मेट जामन मरणजी॥ १॥
तुम ना पिछान्यो अन्य मान्यो, देव विविध प्रकारजी।
या बुद्धिसेती निज न जान्यो, भ्रम गिन्यो हितकारजी॥ २॥
भव-विकट बनमें कर्म बैरी, ज्ञान धन मेरो हर्‌यो।
तब इष्ट भूलो भ्रष्ट हूवो, अनिष्ट-गति धरतो फिर्‌यो॥ ३॥
धनि घड़ी अरु धनि दिवस यों ही, धनि जनम मेरो भयो।
अब भाग मेरो उदय आयो, दरश प्रभुको लखि लयो॥ ४॥
छवि वीतरागी नग्नमुद्रा, दृष्टि नासापै धरें।
वसु प्रातिहार्य अनंत गुणयुत, कोटि रवि-छवि को हरें॥ ५॥

अब मिटो तिमिर-मिथ्यात्व मेरो, उदय रवि आतम भयो।
मो हर्ष उर ऐसो भयो, मनु रंक चिन्तामणि लयो॥ ६॥
मैं हाथ जोड़ नवाय मस्तक, वीनऊं तुम चरणजी।
परमोत्कृष्ट त्रिलोकपति जिन, सुनहु तारन तरनजी॥ ७॥
जांचूँ नहीं सुरवास पुनि, नरराज परिजन साथजी।
बुध जांचहूँ तव भक्ति भव भव, दीजिये शिवनाथजी॥ ८॥

इस भांति स्तुति कर तीन आवर्त, एक शिरोन्नति और साष्टाङ्ग नमस्कारपूर्वक दण्डवत् करे। फिर, नीचेका श्लोक बोलते हुए गंधोदक—चरणोदक—हृदय, नेत्र और मस्तकमें लगावे।

श्लोक—निर्मलं निर्मलीकरणं, पवित्रं पापनाशनं।
जिनचरणोदकं वन्दे, अष्टकर्मविनाशकं॥ १॥

सोरठा—जिन तन परम पवित्त, परसभई जगशुचि करन।
सो धारा मम नित्त, पाप हरो पावन करो॥

गंधोदक लगा अपना सौभाग्य समझे, परन्तु लेते समय इस बातका ध्यान रक्खे कि गंधोदक एक या दो अंगुलियोंसे ही लिया जाय, जिससे वह जमीन पर न गिरने पावे और अशुद्ध हाथसे न लिया जाय गन्धोदकके पास जलका एक कटोरा अवश्य रक्खा जाय, जिससे गन्धोदक लेनेके बाद अँगुलियाँ धो ली जांय। इतना कार्य कर लेनेके पीछे अवकाशके अनुसार एकाग्रचित्त करके जाप्य, सामायिक और स्वाध्याय आदि करे। स्वाध्याय धर्मका मूल और शान्ति-दायक है। ध्यानमें जो आनन्द है वह किसी भी सांसारिक वासना या पदार्थमें नहीं है। शास्त्रों-पुस्तकों

के विषयमें एक लेखक ने लिखा है—वे (शास्त्र) हमें बिनाकुछ वेतन लिये पढ़ाते हैं। बिना क्रोध किये और भूलों पर बिना दंड दिये हमें सिखाते हैं। रात दिन जब चाहे तब हमें पढ़ानेको तैयार रहते हैं। हमारी मूर्खतापर वे न तो हंसते और न चार जनोंमें हमारी दिल्लगी उड़ाते हैं। फिर भला बताओ, शास्त्रों जैसे गुरु और पुस्तकालयों जैसे स्कूल क्या और होंगे? जो मनुष्य धर्मको जानना चाहें; वे निर्दोष और सर्वज्ञ वीतराग कथित धर्मका अवलोकन करें। स्वाध्याय सब तपोंका मूल एक श्रेष्ठ सत्कर्म है।

मन्दिरमें विकथा—घर सम्बन्धी चर्चा, लेन-देन, हंसी और झगड़ा आदि नहीं करना चाहिये, क्योंकि धर्म-स्थानोंमें ऐसा करनेसे विशेष पाप-बन्ध होता है।

श्रावकाचार आदि आचार ग्रंथोंमे जहां-तहां ८४ आसादनाओंका वर्णन किया गया है। धर्मायतनमे जाकर उनका करना उचित नहीं है। मन्दिरमें सबसे मैत्रीभाव रक्खे। अपने दुर्भावों से उस समय बिलकुल छुट्टी पालेनी चाहिये। बालबच्चोंको● शुद्ध—मल-मूत्रादिसे निश्चिन्त—कराके ले जावे और मन्दिरमें भी इस बातका ख्याल रक्खे कि बच्चे किसी प्रकारकी अपवित्रता या दूसरोंके धर्म-साधनमें कोई विघ्न न करने पावें।

● पाँच वर्षके होजानेपर बच्चोंको मन्दिरमें लेजाकर भगवान्को नमस्कार करावे। छोटा-दर्शन और णमोकार मन्त्र सिखावे। अजान अवस्थामें—बहुत छुटपनमें—लेजाना ठीक नहीं है।

धर्म-साधनसे निपटकर स्त्रीको गृहस्थोंके कामोंमें लगना चाहिये, क्योंकि पुरुषके लिये धर्म-साधन और आजीविका ये दो मुख्य कार्य हैं—

कला बहत्तर मनुजकी, तिनमें दो सरदार।
एक जीवकी जीविका, एक जीव उद्धार॥ (नीतिकार)

और स्त्रीके लिये धर्म-साधन, गृह-व्यवस्था और सन्तान-पालन मुख्य कर्म है।

स्त्रियोंको रसोई शुद्ध बनानी चाहिये। रसोई बनाते समय नीचे लिखी बातोंपर ध्यान देना चाहिये—

चौकेकी क्रिया—पवित्र भोजन होनेसे मन और बुद्धि पवित्र होती है तथा अच्छे कार्योंकी ओर लगती है। उन्हींके हृदयमें धर्म ठहरता है जो मन, वचन और तनसे धर्माचरण करते हैं। धर्माचरणोंके लिये आवश्यक है कि हम अपना खान-पान शुद्ध रक्खें—चौके-चूल्हे पर खूब ध्यान दें। जल, रसोईकी वा वर्तनादि सामग्री, ईंधन और रसोईका स्थान इन चारोंपर ध्यान देना 'चौका' कहलाता है।

जल-कुआँ, तालाब, नदी आदि पवित्र स्थानोंसे भली-भाँति छानकर लाया जावे। छाननेका वस्त्र उज्वल, गाढ़ा ३६×२४ अंगुल हो। इस छन्नेको दूहरा करके छानना चाहिये। यदि वर्तनोंका मुँह बड़ा हो तो उसी परिमाण छन्नेको भी बड़ा रखना चाहिये, (प्रत्येक अवस्थामें दुहरा करने पर भी छन्ना वर्तनके मुंहसे तिगुना हो)। सदा पवित्र और मुंजे हुए वर्तनों में धीरे धीरे

पानी छाना जावे। अनछने पानी की एक बूंद भी व्यर्थ न गिरे और छने हुए जलमें भी वह न मिलने पावे। अपने हाथसे पानी भरकर लाना सर्वोत्तम है। यदि ऐसा न हो सके तो मदिरा-मांसके त्यागी किसी विश्वस्त व्यक्तिसे भराना उचित है।

पानी छाननेके बाद जिवानी—बिलछानी—उसी स्थानमें ही यत्नपूर्वक क्षेपण करनी चाहिये, जिसमेंसे कि पानी लाया गया हो। यदि पानी कुएसे लाया गया हो, तो जिवानी कड़ीदार लोटेसे डाली जाय, जिससे वह बीच ही में न रहकर पानी तक पहुँच जाय। जो लोग जिवानीको यत्नपूर्वक उसी जलस्थानमें क्षेपण नहीं करते, जिसमेंसे कि जल भरा हो, तो इससे जल छाननेका उद्देश्य अधूरा ही रह जाता है—उन जल-जीवोंकी रक्षा नहीं होती।

छने हुए जलमें लौंग, हरड़ और लकड़ीकी राख आदि द्रव्य शास्त्रोक्त प्रमाणसे डाल देनेपर उसके रस, गंध, वर्ण और स्पर्श आदि बदल जाते हैं तथा जलकायिक जीव चय जाते हैं और त्रसकी उत्पत्ति नहीं होती। इस भाँति शुद्ध (प्रासुक) हुए जलकी मर्यादा दो प्रहरकी है। साधारण गर्म जलकी ४ प्रहरकी और उबाले हुए—अधनके समान गर्म किये—जलकी मर्यादा ८ प्रहरकी। प्रासुक जल मर्यादा के भीतर ही उपयोग में लाया जासकता है। मर्यादाके पश्चात् वह किसी भी कामका नहीं रहता।

दुःखकी बात है कि जैनियोंमें जल छानने की विधिका आज कल प्रायः लोपसा होगया है। पानी छानने के लिये पतला, पुराना

धोती का टुकड़ा जाति बिरादरी के भय से रखते हैं, जिसमेंसे छोटे बड़े सभी जीव बराबर निकलते जाते हैं। भला इस ढोंगसे क्या लाभ है? अनछना पानी पीनेसे अदयाके दोषके सिवाय शरीरमें अनेक रोग भी घर कर लेते हैं। यही कारण है कि संसार के सभी विद्वान् —क्या जैन और क्या अजैन और क्या डाक्टर, वैद्य, हकीम वा वैज्ञानिक आदि पानीको छानकर पीनेकी सम्मति देते हैं। हमारे भारतीय वैद्यक शास्त्र तो न जाने कब से पानी छान कर पीनेकी आज्ञा देते चले आये है। लोकोक्ति है कि 'जल तो पीजे छानके, गुरुको कीजे जानके' इस उक्तिसे भी हमे छान के जल पीनेकी ही पुष्टि मिलती है। यूरोपियन् जातियाँ यद्यपि अहिंसाका विचार नहीं रखतीं, तो भी स्वास्थ्यके विचार से पानी-को अनेक तरहसे साफ करक पीतीं हैं।

पानी छानने का काम स्त्रियों की थोड़ी सी सावधानी से अच्छी तरह हो सकता है। सदैव घरमें दो तीन छन्ने रखना चाहिये। पुराने छन्नों से पानी बराबर छानते रहना ठीक नहीं। उन्हें अलग कर देना चाहिये। सबसे अच्छी बात तो यह है कि कुए आदि से ही पानी छानकर लाया जावे और जिस समय पीनेकी इच्छा हो छानकर पिया जावे। सुबह शाम सब पानी छानकर एक चौड़े बर्तनमें जिवानी एकत्रित करे तथा यत्नाचारपूर्वक उसे जलस्थानमे पहुँचावे, स्मरण रहे, पानी उबालकर और पीछे ठण्डा करके पीनेसे शरीरकी निरोगता बढ़ती है। यही प्रासुक जल पीनेका लाभ है।

भोजनसामग्री—अन्न अवींध (बिना घुना हुआ) होना चाहिए। उसका साफ करना एवं पीसना उजेलेमें होना चाहिये। पीसते समय चक्कीको, कूटते समय ओखलीको और इसी भांति दूसरे दूसरे पदार्थोंको पीसने कूटनेके पहिले भली भांति देखलो, साफ करलो, जिससे उनमे कोई जीव न रहजाय। चक्की आदिसे आटा आदि निकाल लेनेपर भी उसमें आटे वगैरहका कुछ अंश लगाही रहजाता है, उसे कोमल बुहारीसे निकाल डालना चाहिये। कितनेही लोग अनाजको धोकर खाते हैं, यह बातभी बहुत अच्छी है, परन्तु छने हुए पानीसे ही धोना चाहिए। बहुतसी स्त्रियां दाल-चावल आदिको बहुत पहिलेसे बीन रखती हैं और रसोईके समय नहीं शोधतीं। विचारतीं है कि संशोधित तो रक्खे हैं, पर यह उनकी बड़ी भूल है। उस समय भी जरूर शोधना चाहिये।

आटेकी मर्यादा शीतकालमें ७ दिन, गरमीमें ५ दिन और बरसातमें ३ दिनकी है। इसके पीछे जीवोंकी उत्पत्ति होजाती है। प्रायः प्रत्येक सामान ताजा लाकर ढका रखना चाहिए। वर्षाकालमें प्रत्येक वस्तुको बड़ी सावधानीसे रखना चाहिए, क्योंकि इस ऋतुमें जीवोंकी उत्पत्ति बहुत अधिक होती है। शक्कर, घी आदि मिष्ट और सचिक्कण पदार्थोंको तो सभी ऋतुओंमें सावधानीसे रक्खें, क्योंकि ऐसी वस्तुओंमें थोड़ीसी भी भूल होने पर या तो बाहरसे आनेको जीव आ जाते हैं, या

स्वयं इन वस्तुओंमें भी उत्पन्न हो जाते हैं। वर्षाऋतुमें जहांतक होसके भोजनकी बहुत थोड़ी सामग्री रक्खी जावे।

ग्रीष्मकालमें स्त्रियां बहुतसी (दस-दस पांच-पांच सेर) सीमो (सिमैयां-बिया) तोड़कर रखती हैं, बरसात लगते ही उनमें इल्लियां लग जाती हैं। यही हाल मर्यादासे बाहरके पापड़, अथाने (आचार), बड़ियों आदिका है, परन्तु लोग वही वर्षोंका अचार आदि बड़े मजेमें खाते हैं। कभी उन्हें सावधानीपूर्वक देखने दिखानेकी चेष्टा भी नहीं करते। हलवाईके यहांकी मिठाई बाजारू मिठाईभी त्रस जीवोंका सत् ही है। उनके यहां भला क्रियासे बनानेवाला और सावधानीसे रखनेवाला कौन है? ऐसेही अनेक कारणोंसे तो जैन जातिमें अनेक मारक-रोग फैल गये हैं। इन अभक्षोंको हमें शीघ्रही छोड़ना चाहिए।

पुनः खानेके पदार्थोंमें आलू, रतालू, शकरकन्द, पुष्प और विदल आदि २२ अभक्ष* और पांच उदंबर—बड़, पीपल, ऊमर, कठूमर और पाकर फल तथा ३ मकार—मद्य, मांस

*२२ अभक्षोंके नाम—१ बैंगन, २. द्विदल-छाँछ दही या कच्चे दूधके साथ दुफाड़िया (द्विदला अनाज खाना), ३. बहुबीज फल, ४. ओला, ५. रात्रि भोजन, ६. कन्दमूल, ७. मांस, ८. मधु, ९. मदिरा, १०. मिट्टी, ११. माखन, १२. विष, १३. अचार (अथाना), १४. पीपल फल, १५. बड़फल, १६. उदम्बर फल, १७. कठूमर फल, १८. पाकर फल, १९. अजान फल, २०. तुच्छ फल, २१. तुषार (बर्फ), २२. चलित रस।

और मधुको त्रस राशिका स्थान समझ करके कभी भूलकर भी भक्षण नहीं करना चाहिये।

रसोई बनानेके पहिले सर्व भोज्य पदार्थ लेकर शोधे तथा ठीक अन्दाज करके फिर रसोई बनावे। प्रथमही चौकेमें जल लेजाके रक्खे और उसे प्रासुक करले क्योंकि कच्चे जलकी मर्यादा ¾ पौन घण्टेकी है और रसोईमें २ या ३ घण्टे लगते हैं। सारांश यह है कि पानी प्रासुक किये बिना काम नहीं चल सकता। आटा गूँदकर—माड़कर शुद्ध-स्वच्छ गीले कपड़ेसे ढांक दे। आटा गूंदते समय हाथकी अगूठियाँ आदि उतार देनी चाहिये। पश्चात् अपनी योग्यतानुसार सरस, स्वच्छ और प्रकृति ऋतुके अनुकूल भोजन बनावे। भोज्य वस्तुको कभी बिना ढांकी न रक्खे, क्योंकि या तो आपसे अथवा वैसेही कई कारणों से जीव मरकर रसोईमें गिर जायेंगे। भोजन सदैव खूब देख-भाल और पीस २—चबाकर करना चाहिये। रात्रिमें भोजन बनाना-खाना बुरा है। रात्रि-भोजनके विरुद्ध मार्कण्डेयपुराणमें एक जगह लिखा है :—

अस्तंगते दिवानाथे, तोयं रुधिरमुच्यते,
अन्नं मांससमं प्रोक्तं मार्कण्डेयमहर्षिणा ॥१॥
रक्तीभवंति तोयानि अन्नानि पिशितानि च,
रात्रौ भोजनसक्तस्य ग्रासे तन्मांसभक्षणं ॥२॥

भावार्थ—यह है कि रात्रिभोजन मांस-भक्षण के समान और रात्रिमें जलपान रक्त-पानके समान है।

रसोई तैयार करके किसी संयमी धर्मात्मा पुरुषको (जो उस समय भाग्यसे प्राप्त होजावे) भोजन करावे, यदि न होवे तो अपने ही घरके ज्येष्ठ योग्य पुरुषको भोजन करावे और हर्ष माने। आजकलके समयमें तो अत्यन्त दुखित, बुभुक्षित और हीनाङ्ग दो-एक व्यक्तियोंको भोजन कराना ही बड़े कल्याणका कारण है। धन्य हैं वे व्यक्ति जो प्रतिदिन इसी प्रकार दूसरोंको भोजन कराके भोजन करते हैं। पुरुषोंके भोजनोपरान्त स्त्रियाँ भोजन करें। भोजनके पीछे हो वर्तनोंको साफ करना और चौका लगाना चाहिए। जूठे वर्तन अधिक देर तक पड़े रहनेसे उनमें त्रस जीवोंकी उत्पत्ति होजाती है। भिनभिनाती हुई मक्खियाँ उस जूठे पानीमें (धोवनमें) गिरतीं-मरती हैं, जिससे हिंसाका दोष लगता है। अथवा अपवित्र कुत्ते-बिल्ली उन्हें चाटकर अपवित्र कर देते हैं।

लड्डू, बावर, घेवर, बूंदी, खारी सेव आदि पक्की रसोईकी मर्यादा—जिसमें पानीका अंश थोड़ा होता है—८ प्रहरकी है। पुआ, पूड़ी और भजिया आदिकी मर्यादा अधिक जल होनेके कारण ४ प्रहर की है। खाटा, कढ़ी, एवं खिचड़ी आदि कच्ची रसोईकी मर्य्यादा २ प्रहरकी है। जिस रसोईमें पानी न पड़ा हो जैसे मगद आदिकी मर्य्यादा आटेके बराबर जानो। दूध दुहकर तत्काल छानके औटा रखनेसे शुद्ध रहता है। इस दूधकी मर्यादा ८ प्रहरकी है। गर्म पानी डालकर तैयार की हुई छांछकी मर्यादा ४ प्रहरकी है।

कच्चे पानीसे बनाये हुए मट्ठे (छांछ) की मर्यादा कच्चे पानीके बराबर २ घड़ीकी (¾ पौन घण्टेकी) है। प्रासुक (गर्म) किये हुए दूधमें जामन देनेसे बने हुए दहीकी मर्यादा ८ प्रहरकी है। दही जमानेका सर्वोत्तम उपाय यह है कि, कल्दार रुपयेको सामान्य रीतिसे गर्म करके प्रासुक दूधमें डाल देनेसे ४ प्रहरके भीतर दही अच्छा जम जाता है।

इनके सिवाय अन्य पदार्थोंकी मर्यादा जाननेकी इच्छा हो तो क्रियाकोषसे जानना चाहिए। स्मरण रखना चाहिए कि मर्यादाके पश्चात् प्रत्येक पदार्थमें त्रस जीवोंकी उत्पत्ति हो जाती है। बिना औटाए हुए दही अथवा छांछके साथ द्विदल (बिदल) अन्न खानेसे अनेक दोष उत्पन्न होते हैं। बिगड़े हुए स्वादवाले पदार्थ खानेसे स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। इसीलिए हमारे आचार्योंने हमें ताजा, शुद्ध और प्रकृति-ऋतुके अनुकूल भोजन करनेकी आज्ञा दी है; जिससे कि हम मोटे-ताजे और निरोग रहें तथा लौकिक और धार्मिक कार्योंको भलीभांति सिद्ध कर सकें।

बर्तन – पवित्र राखसे अच्छी तरह मंजे हुए हों। गाय, भैंस, कुत्ते या बिल्लीके छुए हुए न हों। पाखानेके लोटेसे यदि अच्छे बर्तन छू जाएँ, शूद्रादिने उनमें खाया-पिया हो, तो उन्हें अग्निमें डालकर शुद्ध कर लेना चाहिए। हां, यह बात ठीक है कि यदि खाते-पीते समय कुत्ता, बिल्ली आदि आजाए तो उन्हें दयापूर्वक कुछ भोजन डाल देना चाहिए। बाजारू दुकानोंपर बाजारू मिठाई खाना, जूते चढ़ाए भोजन या मिठाई खाना, कांच और चीनीके

बर्तनोंमें जूठे इत्यादिका कोई दोष न समझना बड़ा ही हानिकर है। कम-से-कम अपनी आरोग्यता चाहनेवालोंको तो अवश्य ही इन बातोंसे बचना चाहिए।

चौका—रसोई का स्थान—कुत्ते-बिल्ली आदि हिंसक जीवोंके प्रवेश-रहित, कीड़े-मकोड़ोंसे शून्य, जालारहित, साफ-सुथरा, सीड़सेरहित, प्रकाशयुक्त और सीमायुक्त होना चाहिये। उसपर ऊपरसे जीव जन्तु और कूड़े-करकट गिरनेके बचावके लिये चँदेवा* बाँधना चाहिये।

चौकाको नित्य दिनमें कोमल बुहारीसे बुहारकर चूल्हेकी राख निकालकर, विवेकपूर्वक देख-भाल करके—मिट्टी मिलें प्रासुक जलसे पोतना उचित है। चौका रातको न लगायाजाय, क्योंकि उससे अनेक प्राणियोंका घात होना सम्भव है। आशय यह है कि भोजन-सामग्री एवं भोजन-स्थान आदिमें जितनी पवित्रता रक्खी जायगी, परिणाम—भाव—उतने ही पवित्र होंगे और इससे शरीर और मन उतना ही पुष्ट तथा स्वस्थ रहेगा। अनेक गृहोंमें चौका न लगाया जाकर पानी छिड़क दिया जाता है। कई स्थानों में एक ओर रसोई बना करती है और दूसरी ओर राख आदि कूड़ा-करकट संचित रहता है, यह बड़ा ही घृणास्पद वा म्लेच्छ व्यवहार है, ऐसा करना स्वास्थ्य और आचार धर्मके प्रतिकूल

---

*चँदेवा—चक्की, ऊखली, चौका, परींडा—पानी रखने का स्थान और शयन-गृह- आदि स्थानोंमें होना चाहिये।

है। चौका जिस कपड़ेसे लगाया जाय उसे नित्य ही निचोड़कर सुखा डालना चाहिए। बहुतेरी स्त्रियां उसे वैसा-का-वैसा मिट्टी-पानीमें भिगोकर रख देती हैं, जिससे उसमें बहुतसे कीड़े पड़ जाते हैं। दूसरे दिन उसी कपड़ेसे (पोतेसे) फिर चौका लगा दिया जाता है जिससे अनेक जीवोंका संहार—नाश-हो जाता है।

गोबरसे चौका लगाना उचित नहीं क्योंकि वह देरसे सूखता है और उसमें कीड़े पड़नेकी संभावना रहती है। इस तरह यत्नाचारसे चौका लगाकर, स्नानकर, शुद्ध—स्वच्छ—वस्त्र पहिने। फिर रसोईका सामान शोधकर चौकेमें रसोई बनावे। पुरुष भी हाथ-पांव धोकर स्वच्छ वस्त्र पहनकर भोजनके निमित्त चौकेमें जावें। जो लोग चौकेमें विना स्नान किये और मलिन कपड़े पहिने घुसते हैं उनमें और शूद्रोंमें अन्तर ही क्या है? स्वच्छता—पवित्रता-हरजगह अच्छी और लाभप्रद है। गृहस्थ के धनाढ्य होने पर भी उसे अपने कुटुम्बकी भोज्यसामग्री स्त्रियोंसे ही बनवानी चाहिये। क्योंकि रसोई बनानेवालोंके चित्तमें जो प्रेम वा भक्तिभाव होता है वह नौकरोंमेंनहीं हो सकता। स्वयं रसोई बनाई जाय तभी चौकेकी शुद्धता रह सकती है। रसोई बनाना स्त्रियोंका एक व्यायाम भी है।

ईंधन—अबींध, निर्जन्तु सूखी लकड़ी- का एवं देखा शोधा हो, इससे जीव-रक्षा होती है खास करके वर्षा-ऋतुमें ईंधन-में असंख्य जीव हो जाते हैं, इसलिये बरसातमें तो बहुत साव-धानी करके ईंधन जलाना चाहिये। अच्छा हो यदि कोयला ही

जलाकर उसीसे रसोई बनवाई जावे। गोबरके कन्डे (छाने) जलाना सर्वथा अनुचित है, क्योंकि इनके बनानेमें ही हजारों कीड़ोंका नाश हो जाता है।

यत्नाचार-प्रवृत्तिः—

इसी तरह गृहस्थीके अन्य कार्य भी बहुत विचारपूर्वक करने चाहिये। सिर साफ करनेके पीछे जो जूं आदि निकलतीं हैं, उन्हें मारना न चाहिये, किन्तु बाहर किसी घनी छायावाले स्थानमें सावधानी पूर्वक रख देना चाहिये। ऐसा ही व्यवहार अन्नमें निकले हुए जन्तुओंके साथ करना चाहिये। उन्हें भी कुछ अन्नके साथ किसी पात्रमें रखके छायायुक्त स्थानमें रख देना चाहिये।

नहाने-धोनेका पानी ऐसे स्थानमें डाला जाना चाहिए तथा पेशाब भी ऐसे स्थानमें की जानी चाहिए जहां जल्दी सूख जाय, क्योंकि किसी भी जगह बहुत गीलापन होनेसे कीड़े उत्पन्न हो जाते हैं एवं दुर्गन्धि फैलकर नाना प्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और बनस्पति इन पांच स्थावरोंकी रक्षाके लिए आवश्यकतासे अधिक इनका व्यर्थ उपयोग न किया जाय, जैसे कि व्यर्थ पानी डालना, व्यर्थ धरती खोदना, निरर्थक आग जलाना और झाड़, फूल, फल आदिका तोड़ना ये अथवा इन ही जैसे कृत्य अनर्थ—दण्ड पापके मूल हैं और गृहस्थका धर्म यही है कि आवश्यकतानुकूल ही स्थावर कार्य काममें लावे। त्रस कार्यकी संकल्पी हिंसाको छोड़े और भी हिंसा अर्थात् व्यापार—धंधे सम्बन्धी हिंसामें यत्नाचार पूर्वक वृत्ति करनी

चाहिये। जो इसके विपरीत चलते हैं वे रोगी और दुखी होते हैं, हिंसाके कटुक फल भोगते हैं। हमें धर्मनीति पर चलना चाहिये जिससे हिंसा-तिमिरराशि नष्ट होकर दयाधर्मरूपी सूर्यका उदय हो। शरीर,कुटुम्ब और समाज की रक्षा हो तथा लौकिक एवं पारलौकिक सुखोंकी प्राप्ति हो।

ऋतुक्रिया–विचार।

जो नारी ऋतुक्रियामें, बरते सविध सयान।
ताके वर सन्तान ह्वै, सुख-यज्ञ-बुद्धि निधान॥

स्त्रियोंके उदरमें एक डिंब-कोष रहता है, जिसकी चर्मस्थलीके रक्तसे प्रतिमास अंडेके समान एक छोटा पदार्थ उत्पन्न होता है। क्रमानुसार महीना पूर्ण होनेपर यह अंडा फटकर गर्भस्थलीके ऊपर नाभिसे जा मिलता है और रक्तादि मूत्र-मार्ग द्वारा बाहर निकल जाता है। इस प्रकार किसीके दो तीन और किसीके पांच सात दिन तक निकलता रहता है, ऐसी क्रियायुक्त स्त्रीको पुष्पवती या रजस्वला कहते हैं। मासिक धर्म होनेका नियम तीन दिनका है इससे कम या अधिक रोगका कारण होता है। इन दिनों उसे गृहस्थीके प्रत्येक कार्यसे अलग रहना चाहिये। किसी भी वस्तु और बालबच्चोंको नहीं छूना चाहिये। वह एकान्तमें एक जगह बैठे। कितने अफसोसकी बात है कि आजकल रजस्वला स्त्रियां पानी भरना, पीसना, बर्तन-मलना आदि अनेक काम करती हैं। पर यह वैद्यक शास्त्रके विरुद्ध है। वैद्यकशास्त्र

बतलाता है कि मासिक धर्मके समय स्त्रीको सुस्त और शांत रहना चाहिये, किसीका भी मुंह नहीं देखना चाहिये, क्योंकि घटनाओं और दृश्योंका प्रभाव आगे होनेवाली सन्तानपर अभीसे पड़ चलता है। पापियोंकी छाया पड़ जाने अथवा चित्त चलायमान हो जानेसे भावी सन्तानपर बुरा असर पड़ता है। इसी सम्बन्धमें एक मनोहर कहानी नीचे लिखी जाती है—

एक ग्राममें चार अन्धे रहते थे। वे चारों ही गुणवान् और आपसमें मित्र थे। उन्होंने विचारा कि 'गांवका जोगी अन्य गांवका सिद्ध' अतः चलो अपन चारों कहीं बाहर चलें, जिसमें आजीविका चले और गुण विख्यात हों। उनमेंसे पहिला रत्न-परीक्षक, दूसरा अश्व-परीक्षक तीसरा स्त्री-परीक्षक और चौथा पुरुष-परीक्षक था। वे चारों चलकर एक बड़ी राजधानीमें पहुंचे। वहांके राजासे मिलकर आजीविका-प्राप्तिकी प्रार्थनाकी। राजाने पूछा कि परदेशी सूरदासो ! तुममेंसे प्रत्येकमें क्या क्या गुण हैं सो बताओ। प्रत्येक ने अपना अपना गुण निवेदन किया, पश्चात् राजाने उनमेंसे प्रत्येकको १ सेर आटा, १ छटांक दाल, १ तोला घी और १ तोला नमक प्रतिदिन दिये जानेकी आज्ञा दे दी अतः चारों सूरदास खाते-पीते आनन्द करते वहीं राजधानी में रहने लगे।

संयोगसे एक दिन एक जौहरी बहुतसे जवाहरात लेकर राजधानीमें आया। तब राजाने रत्नोंकी परीक्षा करनेके लिए उस रत्न-परीक्षक सूरदासको बुलाकर कुछ अच्छे रत्न ले देनेको

कहा। उस सूरदासने कुछ चोखे—उत्तम—रत्न टू टकर राजाको दिये और कहा कि ये चोखे हैं। यदि ये खोटे होंगे तो इन्हें घनकी चोट दिलवाकर देख लीजिये, फूट जायंगे। असली-पक्के रत्न होंगे तो कभी भी फूटनेके नहीं। सूरदासके कहे अनुसार रत्नोंकी परीक्षा की गई और वे चोखे पक्केरत्न सिद्ध हुए। तब राजाने उस रत्नपरीक्षक सूरदासको बहुतसा पुरस्कार दिया और घीकी मात्रा बढ़वा दी।

इसी प्रकार एक बार एक अच्छा हृष्ट-पुष्ट और सुन्दर घोड़ा राजाने अश्व परीक्षक सूरदासको सौंपा और परीक्षा करनेको कहा। सूरदासने घोड़ेके अंगोपाङ्ग टटोलकर कहा—राजन्! इन सब सुलक्षणोंवाले घोड़ेमें एक यह कुलक्षण है कि जलमें प्रवेश करते ही यह बैठ जायगा। राजाने परीक्षाकी तो सचमुच जलमें घुसते ही घोड़ा बैठ गया। परीक्षा कर चुकने पर राजाने सूरदास से पूछा कि तुमने घोड़ेका यह दोष कैसे जान लिया? तब सूरदासने कहा कि जिस तरह वैद्य नाड़ी टटोलकर रोग जान लेते हैं, उसी तरह इसके अंग और नाड़ियां टटोलकर मैंने इसका यह दोष जाना। बात यह है कि इसके पेटमें मुझे एक ऐसी नस मिली, जो अपने प्रमाणसे बहुत मोटी थी और तब मैंने सोचते विचारते पता लगाया कि इस घोड़ेकी मां ने भैंसका दूध पिया है; जिसकी गर्मीका अंश इस घोड़ेके अंगमें भी है। राजाने पहले सूरदासकी तरह इसे भी पुरस्कार आदि दिये।

एकदिन राजाने तीसरे स्त्री-परीक्षक सूरदासको बुलाकर कहा

कि आज तुम महलोंमें जाकर मेरी रानीकी परीक्षा करो और बिलकुल सच सच हाल मुझसे आकर कहो। पश्चात् राजाने रानीको खबर करवाई कि थोड़ी ही देरमें एक सूरदासजी तुम्हारे महलमें आनेवाले हैं, सो तुम सावधानीसे इनका आदर-सत्कार करना रानीने खबर पाते ही अपना खूब शृंगार किया और ऐसा शृंगार किया कि जिससे बढ़कर हो न सके। शृंगार करके शय्या पर बैठने ही जाती थी कि सूरदासजी आ पहुंचे। रानी हाथमें कुछ भेंट ले खांसती खांसती खखारती हुई, जल्दी जल्दी धमधमाती द्वार तक पहुंची। सूरदास इन ऊपरी बातों ही से उसकी परीक्षा करके राजाके पास लौट गया और राजाके पूछने पर कहा—अपराध क्षमा हो, आपकी रानी किसी ओछे घरकी बेटी जान पड़ती है। यदि उनकी माता क्षत्राणी है तो भी परपुरुष-रता-व्यभिचारिणी है यदि पिता क्षत्रिय है, तो यह किसी नीच मांकी बेटी है। सुनते ही राजाने सूरदासको तो घर जानेकी आज्ञा दी और आप शीघ्र ही रानीके पास पहुंचे एवं बड़ी खिन्नतासे बैठे।

रानीने पूछा, महाराज! उदास कैसे? राजाने कहा मैं जो बात पूछता हूँ उसे बिल्कुल सच-सच बताना, कुछ छुपाना मत। किसी भाँतिका डर मत रखना, क्योंकि उसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है। पूछना यह है कि तुम किसकी पुत्री हो? अपने माता-पिताका वास्तविक परिचय दो। रानीने राजाके चरणोंपर गिरके कहा—महाराज! मैं बांदीकी कूंखसे हूँ। चाहे मारिये, चाहे

पालिये। आपके साथ विवाह होनेका कारण यह है कि जिस कन्यासे आपकी मंगनी हुई थी वह ठीक विवाहके समय मर गई। तब इस मृत्युकी बातका छिपाकर मेरे साथ आपकी शादी करदी गई। राजा सुनकर दरबारमें आया। सूरदासको बुलाकर पूछा कि सूरदास! तुमने कैसे जाना कि मेरी रानीके जाति-वंशमें कोई अन्तर है। सूरदास बोला—महाराज, आदमीकी योग्यता हैसियत दो बातोंसे जानी जाती है एक तो बोलनेसे और दूसरे शरीरका क्रियासे—चलने, फिरने और बैठनेसे तथा वस्त्राभूषण आदि ठाटवाटसे। सो ही किसी कविने कहा है कि 'भले बुरे सब एकसे, जौलों बोलत नाहिं' और 'बड़े बड़ाई ना तज, बड़ो न बोले बोल' मैंने भी रानीकी परीक्षा बोलने और चलने फिरनेसे की है। जो बड़े घरकी बेटियां हैं, जिन्हें मायके (पीहर) और ससुराल की शरम है, माता-पिताकी और सास-ससुरकी प्रतिष्ठाका ध्यान है तथा जो अपयश और पापोंसे डरती हैं, वे चलने, फिरने, बैठने और उठने आदिमें मर्यादा उल्लंघन नहीं करतीं। छिछलापन—उथलापन—नीचताका द्योतक है।

कुटिल स्त्रियोंके विषयमें कहा है :—

१—अपने पिताके वासमें, जहं तहं फिरें मतिमन्द ज्यों।
डोलती घर-घर फिरें, बिन हेतु ही स्वच्छन्द त्यों॥
२—जहं होय मेला तथा कौतुक, देखनेको जावहीं।
पर पुरुष बैठे होंय बहुते, होंय तहं ठाढ़ीं सही॥

३—बहु भ्रमन पसंद विदेश जाको, एकली जहं तहं फिरें।
व्यभिचारिणी जे नारि कुलटा, प्रीति तिनहूतें करें॥
४—नहिंलाज काहूकी करें, निज पति निरादर जासुके।
वे नारि कुलटा पापिनी, ये जान लक्षण तासुके।
५—क्षणमांहिं रोवें जो हँसे, उन्मत्त मदमें नित रहें।
नहिं होय तोषित भोगसूं, नित कामकी बाधा दहें॥
६—चलतीं भटकतीं चाल आतुर, स्वाद जिव्हाका चहें।
ऐसी कुनारी स्वतः नाशें, जयदयाल जैनी कहें॥

हे राजन्! कुलवन्ती भार्या छुपाने योग्य अंगोंको सदा छुपाये रखती है। नीची दृष्टि करके चलती है। किसीसे भी चाहे जैसा सम्भाषण नहीं करती। कुटुम्ब भरसे प्रीति और जीव मात्र पर करुणाभाव रखती है। दुखित-बुभुक्षितका दुख दूर करती है। धर्मात्मा जीवोंसे पवित्र प्रेम रखती है। देव, धर्म और सच्चे गुरुकी भक्ति करती है। देवदर्शन एवं स्वाध्याय आदि धर्मकार्यमें अनुरक्त रहती है। प्रत्येक सामान स्वच्छ सुव्यवस्थित और प्रत्येक काम पूरा करती। मकान भी बिल्कुल स्वच्छ और सजीला रखती है। रसोई सुस्वादु और शुद्धतापूर्वक करती है। ऐसी कुलवन्ती भार्या होनेसे गृह स्वर्ग बन जाता है, थोड़ीसी भी आय (आमदनी) से ऐसी गृहस्थीका निर्वाह बड़े सुचारु रूपमें बड़े अच्छे ढंगसे होता जाता है और लोग कहते हैं कि यह स्त्री कैसी सती लक्ष्मी है, वही गृहस्थी सुखी है।

बहुतेरी भीमतियाँ ऐसी होती हैं कि जहां उन्होंने गृहस्थीमें

पैर रखा कि गृहस्थी तीन तेरह हुई। जहाँ तहाँ सामान बिखरा पड़ा रहता है, मकान मैला होता है, प्रत्येक काममें अधूरापन रहता है और प्रत्येक बातमें अव्यवस्था (ढील-पोल) होती है उनकी मूर्खतासे गृहमें फूट और नानाप्रकार के रोग फैलते हैं क्योंकि मैलापन और बुरी रसोई तथा चित्तकी अस्वस्थता ही रोगके कारण हैं। जहाँ आलसी, दरिद्र और मूर्ख स्त्रियाँ हुईं वह शोक, दुःख और अकीर्तिका गृह ही समझिये। ऐसी स्त्रियों की सन्तति भी इन्हीं जैसे कुलक्षणोंसे भूषित होती है। बुद्धि, विद्या, धर्म, कर्म, सत्य, शील और संयम आदिसे तो वह बिल्कुल कोरी होती है। हाँ, सप्त व्यसनोंमें से कोई एक अथवा अनेक व्यसन रोग और अनेक कुलक्षण अवश्य ही उसमें जन्म-सिद्ध होते हैं। वह अल्पायु होती है। सो महाराज घबराइये नहीं। इन्हीं सब बातोंपर और बहुत कुछ अनुभवपर वह स्त्री परीक्षा निर्भर है और इसी तरह मैंने भी परीक्षा की है। क्षमा कीजिए।

राजाने इसे भी पुरस्कार दिया और घीकी मात्रा बढ़वा दी।

राजाके मनमें बड़ा कौतूहल हुआ और उसने चौथे सूरदासको बुलवाकर कहा—सूरदास! तुमने कहा था कि तुम पुरुष-परीक्षा अच्छी जानते हो। अच्छा, निस्संकोच हो मेरी सच्ची परीक्षा करो। सूरदासने कहा—महाराज! यदि आप पीछे 'क्यों और कैसे' करना चाहें, तब तो क्षमा कीजिए; मुझसे परीक्षा न कर-वाइये और यदि जितना कहूँ उतने ही पर सन्तोष कर लेना चाहें तो आज ही क्या कहूं, मैंने बहुत पहिलेसे आपकी परीक्षा

कर रक्खी है; राजाने इस बातको स्वीकार करके कहा कि अच्छा कहो। तब दूरदासने कहा—महाराज! आपकी आज्ञानुसार निवेदन है कि आपका स्वभाव वैश्यों—बनियों—का-सा है। सारी सभा समेत राजा बड़ा ही चकित हुआ। राजा विचारवान् था। सोचने लगा—क्या मेरी माता दुराचारिणी है? सच है, अग्नि, जल, नदी, सर्प, सिंह, स्त्री, जुआरी, चोर और जार आदि कुटिल स्वभाववालोंका विश्वास क्या? इसीलिये तो किसी कविने कहा है—

तीनों ही त्रिलोक बीच, जेती हैं बनस्पती,
लेखनी सम्हारे ताकी, करके तुरत जू।
तीनों ही त्रिलोक बीच, जेते हैं समुद्र द्वीप,
पर्वतकी स्याही कर, आनके भरत जू॥
तीनों ही त्रिलोक बीच, परी है जो जेति भूमि,
ताहीके सम्मार आछे, पत्र ले पत्र करत जू।
शारदा सहस्र कर करके लिखित सदा,
कामिनी चरित्र तोऊ, लिखे न परत जू॥

राजा इसी भांति सोचता-विचारता सभासे उठ गया और अपनी माताके पास पहुँचा। बड़ी नम्रताके साथ कहने लगा कि माँ! भवितव्य बलवान् है। बड़े-बड़े देव-चक्रवर्ती आदि उसके चक्रमें आ जाते हैं। इसी भांति यदि तुम भी आगई हो तो चिन्ता नहीं। सत्य कहना कि मेरे स्वभावमें क्षत्रियोचित उदारतादि गुण क्यों नहीं हैं? माताने कहा कि पुत्र! बात यह है कि

एक दिन मैं छतपर बैठी बैठी अपना शृंगार कर रही थी, उसी समय कल्याणराय सेठ अपने छतपर बैठा एक सुन्दर रागिनी गा रहा था। अकस्मात् दोनोंने दोनोंको देखा; अवसर पा दुर्भावनाने जन्म लिया। ठीक उसी रातको तुम्हारे पितासे मैं गर्भवती हुई। अतः और कुछ नहीं है, केवल उस दुर्भावना से ही तुमपर यह प्रभाव पड़ा है, क्योंकि ठीक उसी दिन मैं मासिकधर्मसे निश्चित हुई थी। पुत्र ! तुम विश्वास करो। मैं किये हुए पापोंको छुपाकर घोर अपराधिनी नहीं होना चाहती। जो बात थी मैंने स्पष्ट कह दी है।

राजा वहांसे दरबारमें आया। चारों सूरदासोंका अच्छा वेतन बांधकर सभामें रक्खा। सोचना चाहिए कि माताके विचारों का और विशेषकर ऋतुकालके विचारोंका सन्ततिपर कितना असर पड़ता है कि कहां तो रणशूर, तपशूर और दानशूर क्षत्रिय का पुत्र और कहां क्षुद्र-हृदय, अनुदार और स्वार्थी वणिकोंका-सा स्वभाव ?

ऋतुकालमें कैसी सावधानी रखनी चाहिये सो संक्षेपमें नीचे लिखी जाती हैं—

ऋतुस्राव होना प्राकृतिक नियम है, अतः वह स्त्रियोंको हर महीने हुआ करता है। कभी-कभी यह कुछ जल्दी और कभी कुछ देरीसे भी होता है, परन्तु जब नियमित रूपसे कुछ अधिक-कम दिनों में (पन्द्रह या बीस दिन में) अथवा अधिक ऊंचे दिनों में (डेढ़-डेढ़, दो-दो महीने या इससे भी ज्यादा

दिनोंमें आने लगे तब समझना चाहिए कि यह किसी रोगसे विकृत होगया है और इसकी योग्य चिकित्सकसे चिकित्सा करानी चाहिए।

किसी रोग आदिके कारणसे यदि १८ दिनके पहिले रजोदर्शन हो तो उसकी शुद्धि स्नान मात्रसे हो जाती है और यदि १८ दिनके पीछे हो तो उसका पूरा अशौच मानना चाहिए।

रजोवती स्त्रीको किसी भी प्रकारकी कुचेष्टा और नदीमें स्नान करना सर्वथा वर्ज्य—छोड़ने योग्य है।

जब स्त्रीको मालूम हो कि रजोदर्शनसे मेरे कपड़े अशुद्ध होगए हैं, तो उसी समयसे किसी वस्तुको न छुए। यदि भोजन करते समय रजोदर्शन हो तो भोजन छोड़कर स्नान करे पश्चात् भोजन करे। जो ऐसी अवस्थामें यदि बच्चेको किसी वस्तुके स्पर्श करानेकी जरूरत हो तो बच्चेको स्नान करा ले।

एकान्त स्थानमें रहे और आत्म-चिन्तवन करे। अपनी अवस्थाको विचारे और देश, जाति तथा धर्मकी उन्नतिके उपाय सोचे। शय्यापर शयन न करे, किन्तु चटाई पर सोवे। यदि चटाईपर न सो सके तो ऐसे कपड़ोंपर सोवे जो नित्य धोये या धुलाए जाकर शुद्ध किये जा सकें। गरिष्ट भोजन और पान-इलायची आदि मसाले भक्षण न करे। शृंगार न करे, आंखोंमें सुरमा न आंजे न लगावे। गान न गावे। हँसी मसखरी न करे, मन्दिरमें न जावे। पतिसे भी बात-चीत या हंसी न करे ऐसे समयमें यदि कोई मूर्ख पति काम-सेवन करे तो उसे सुजाक,

गर्मी आदि भयानक रोग हो जानेकी अत्यधिक सम्भावना है। वैद्यके सिद्धान्तोंके अनुसार इस समयके काम-सेवनसे एक तो गर्भ नहीं रह सकता और यदि कदाचित रह जाय तो बुद्धिहीन दुष्ट, हीनाङ्ग (अपूर्णाङ्ग) और कुमार्ग-प्रिय सन्तान होती है। ऋतुमती स्त्रीके स्पर्शसे बहुत ज्यादा बचना चाहिये। उसकी परछाई मात्रसे, ताजे बने और बनते हुए पापड़ बड़ियां और अचार बिगड़ जाते हैं।

रक्तस्राव जिस दिनसे आरम्भ हुआ हो उसके चौथे दिन (अर्धरात्रिके पीछे आरंभ हुआ हो तो दूसरे दिनसे शुमार करना चाहिये) स्नानकर शुद्ध हो गृहस्थी सम्बन्धी कार्य और शृंगार आदि कर सकती है। पांचवें रोज नहा धोकर भगवान्‌की पूजन, शास्त्र-स्वाध्याय और रसोई आदि भी कर सकती है। जो स्त्री इस प्रकार नियमपूर्वक आचरण करती है, वह यदि पहले दिन (ऋतु स्नानके पश्चात्) गर्भवती हो जाय तो सुन्दर सौभाग्यशालिनी, सुलक्षणा और धर्मात्मा सन्ततिको, यदि दूसरे दिन गर्भवती हो तो किसी सुयोग्य एवं प्रतापयुक्त सन्ततिको और इसी तरह तीसरे और चौथे दिन आदिमें गर्भ धारण करने पर भी योग्य सन्तानको जन्म देती है। भगवज्जिनसेनाचार्य ने आदिपुराणमें गर्भाधान-संस्कारसे लेकर मोक्षपर्यन्त संस्कारोंका विषद-विवेचन किया है—उन्होंने आधान, प्रीति और सुप्रीति आदि ५३ प्रकारकी गर्भान्वय क्रियाएँ—संस्कार, ४८ प्रकारकी दीक्षान्वय क्रियाएं और ७ प्रकारकी कर्त्रन्वय क्रियाएं निरूपण

की हैं*। उनके अनुकूल प्रवृत्ति (संस्कारोंके समय दम्पति द्वारा और धर्मकी भक्ति पूजन), गार्हपत्य आदि अग्नियोंमें, संस्कारोंमें नियोजित मन्त्रोच्चारणपूर्वक हवन करना शास्त्रस्वाध्याय और अहिंसादि व्रतोंका धारण तथा पात्र दान करना आदि आगमोचित कर्त्तव्योंका अनुष्ठान करनेसे धार्मिक दम्पति – स्त्री-पुरुष — भगवान् अकलङ्क निकलङ्ककी तरह धर्मवीर, कर्मवीर, उदार, स्वार्थत्यागी, सदाचारी और सुशिक्षित सन्तान उत्पन्न करनेमें समर्थ होते हैं। बहिनो! इससे ऋतुकालीन आगमोचित अशौचका पालनकर उक्त नैतिक और धार्मिक सत्कर्त्तव्योंके पालनमें प्रवृत्ति करो जिससे ऐहिक और पारलौकिक सुख प्राप्त हो।

—⊖✱⊖—

मिथ्यात्व-निषेध।

कुगुरु कुदेव कुधर्म औ, है अगृहीत मिथ्यात्व।
सेवनकर जग-जन-दुखी, भोगे तीव्र असात॥

तुमने क्या कभी विचार किया है कि जीव तथा पुद्गल आदि षट्द्रव्य और जीव, अजीव आस्रव, आदि सात तत्त्वोंका स्वरूप क्या है? और इनका श्रद्धान करनेसे क्या होता है? क्या कभी सोचा है कि मैं कौन हूं? कहांसे आई हूं? मेरा इन कुटुम्बियोंसे सम्बन्ध होनेका कारण क्या है? इस पर्यायके पीछे

* देखो आदिपुराण पर्व ३७-३८

मुझे कहां जाना होगा ? मेरे साथ कौन-कौनसी सामग्री जाएगी ? मैं रात दिन जो कुछ बुरा करती हूँ इसका फल क्या होगा ? परलोक क्या है ? तुमने कभी इन बातोंको नहीं सोचा इसलिए मूर्खोंके समान मनमाने मार्गपर चलरही हो। तुम्हें आवश्यक है कि सुगुरु, सुदेव और सुधर्मकी श्रद्धाकरो, निःस्वार्थी विद्वानोंका व्याख्यान सुनो, तब तुम्हें मालूम हो जायेगा कि आत्मा किस तरह अपने आपको भूल रहा है, शरीरसे प्यार कर रहा है और उसके लिये उसीके भरण, पोषण और रक्षाके निमित्त-मनुष्य, तिर्यंच और नर्क पर्यायोंमें भ्रमण करता है, पुण्यपाप उपार्जन करता है और उसके अनुसार सुख-दुख उठाता है। कोई भी देवी देवता, या परमेश्वर उसे रोकनेमें समर्थ नहीं हैं। प्रत्येक आत्मा अपनी भलाई और बुराई करनेमें स्वतन्त्र है। उसके मार्गमें उसके सिवाय कोई दूसरा कांटे नहीं बिखरा सकता—रोड़े नहीं अटका सकता। इसलिये हमें मिथ्या कल्पनाओंको छोड़कर गृहस्थके धार्मिक षट्कर्मोंमें दत्तचित रहना चाहिये।

बहिनो ! सबसे पहिले मिथ्यात्व-विषको आत्मामेंसे निकालना चाहिए।

आचार्य सोमदेव सूरि × ने यशस्तिलकमें लिखा है कि जिन

× अदेवे देवताबुद्धिमव्रते व्रतभावनाम् ।
अतत्वे तत्वविज्ञानमतो मिथ्यात्वमुत्सृजेत् ।
तथापि यदि मूढत्वं न त्यजेत् कोऽपि सर्वथा ;
मिथ्यात्वेनानुमान्योऽसो सर्वनाशो न सुन्दर ॥२॥
यशस्तिलकके सोमदेवसूरिः ।

रागी, द्वेषी, मोही और अज्ञानी व्यक्तियोंमें सत्यार्थ ईश्वर होने योग्य सद्गुण—सर्वज्ञता और वीतरागता आदि—नहीं हैं, उनको देव—ईश्वर मानना तथा मद्यपान, मांस-भक्षण और हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह आदि दुराचार—पाप-वृत्ति—को सदाचार-धर्म मानना एवं प्रतीति-बाधित तत्वोंको मोक्षोपयोगी तत्व समझना यही मिथ्यात्व है। विवेकी को इसका त्याग करना चाहिए। उदाहरणार्थ – नदी और तालाब आदिमें धर्म समझकर स्नान करना, पत्थरोंके ढेर लगानेमें धर्म मानना, पहाड़से गिरने और अग्निमें जलमरनेमें धर्म समझना, रागी, द्वेषी और मोही देवताओंकी ऐहिक धन-पुत्रादिकी लालसासे उपासना करना, संसारमें घुमानेवाले दम्भी और पाखण्डियोंका सत्कार करना, ग्रहणके समय सूर्य और चन्द्रमा आदिकी पूजाके निमित्तसे स्नान करना, गौको अनेक देवताओंका निवास समझकर पूजना तथा उसके मूत्रको पीना; हाथी, घोड़ा और रथादिकी पूजा करना और पृथ्वी, यक्ष, शस्त्र और पहाड़ोंकी पूजा करना इसे मिथ्यात्व समझना चाहिए। जो व्यक्ति उक्त मिथ्यात्वमें प्रवृत्ति करता है वह ऐहिक और पारलौकिक गुणोंसे वंचित रहकर अपना सर्वनाश करता है।+

अतः बहिनोंको उक्त प्रकार मिथ्यात्वका त्याग कर देव, गुरु और धर्मकी श्रद्धा करके सम्यक्त्व धारण करना चाहिये।

+नोट—उक्त प्रकरण नीतिवाक्यामृत - भाषाटीकाके पृष्ठ १४ से संकलन किया गया है।

सच्चे देव, शास्त्र और गुरुको माननेसे चित्त निर्मल होता है, रागद्वेष घटता है, जिससे पुण्यके साथ सुखकी प्राप्ति होती है, परन्तु रागी द्वेषी देव और गुरु तथा असर्वज्ञ भाषित धर्मके समागमसे कषाएँ बढ़ती हैं और पापका बन्ध होता है जिसके फलस्वरूप दुःख होता है। कहनेका सारांश यह है कि जैन सरीखी उत्तम जातिमें श्रावक सरीखे उत्तम कुलमें जन्म लेकर सर्वोत्कृष्ट सर्व दोषरहित और सर्वगुण-सम्पन्न जिनेन्द्र के उपासक बनकर हम क्यों कुदेवादिकी श्रद्धामें प्रवृत्ति करते हैं ? यह तो वही हुआ कि अपने हीरेका कुछ भी मूल्य न करते हुए दूसरोंके कांच लेने को दौड़ा जाय। उन्हें सोचना समझना चाहिए और जैन धर्मके द्वारा अपना कल्याण करना चाहिए । दूसरोंकी देखादेखी हमें गड्ढेमें न गिरना चाहिए—कुगुरु, कुदेव और कुधर्मकी पूजा-अर्चासे बचना चाहिए। थोड़ा विचार करना चाहिए कि जैनधर्म और अन्य धर्मोंके सिद्धान्तोंमें कितना और कैसा अन्तर है ? कहां जैनधर्म तो मोक्षका साधक और अन्य धर्म मोक्षके बाधक—संसारके साधक । = यह जीव बिना पूरी वीतरागताके कदापि निष्कर्मा — मुक्त—नहीं हो सकता और उसे वीतरागता

=जीव जबतक शुभाशुभ कर्मोंको करता है तबतक नियमसे उसका जन्म-मरण होता रहता है, इसको संसार कहते हैं, परन्तु जब यह जीव कर्मरहित हो शुद्ध अवस्थाको प्राप्त हो जाता है, तब मुक्त कहलाता है। दूसरे मतोंमें बहुधा स्वर्गको ही मोक्ष माना है। अथवा मोक्षका—स्वरूप यथार्थ नहीं कहा है। इसलिये वे धर्म सच्चे मोक्ष व उसके कारणोंसे भी अनजान हैं और इसीलिये मान्य नहीं हैं।

प्राप्त करनेका साधन संसारमें एक जैनधर्म ही है, जिसमें मानों वीतरागता कूट-कूटकर भरी गई है। कवि भूधरदासजीने अपने जैन शतकमें एक जगह कहा है—

केसे कर केतकी कनेर एक कही जाय,
आक दूध गाय दूध अन्तर घनेर है।
पीरी होत रीरी पै न रीस करै कंचन की,
कहां कागवानी कहां कोयलकी टेर है॥
कहां भानु तेज भारो कहां आगिया विचारो,
कहां पूनोंको उजारो कहां मावस अंधेर है।
पच्छे छोर पारखी निहारो नेकु नीके कर,
जैन बैन और बैन इतनो ही फेर है॥

सम्पूर्ण शास्त्र यही कहते हैं कि विष-खाना, अग्निमें जलना या जलमें डूब मरना आदि अज्ञानताके कार्य तो एक ही जन्ममें दुःख देनेवाले हैं, परन्तु आत्मस्वरूपके भुलानेवाले, अकर्तव्यके करानेवाले ज्ञानशून्य एवं जगतको ठगनेवाले कुगुरु आदिका पूजन-वंदन अनेक जन्मके, जन्म मरणका कारण होता है। उपदेश सिद्धान्त रत्नमालामें कहा है—

सप्पो इक्कं मरणं, कुगुरु अणंता देइ मरणाई।
तो बर सप्पो गहियं, मा कुगुरु सेवयं भद्द॥

अर्थात् सर्पके काटनेसे तो एक ही बार मरण होता है, पर कुगुरुके सेवनसे अनंत मरण होते हैं। इसलिये हे भद्र सज्जनो

सांपका ग्रहण करना तो भला, परन्तु कुगुरुका सेवन सर्वथा त्याज्य है।

जो स्त्रियां पुत्र, सम्पदा और सुख आदिकी इच्छासे ढोंगियोंको पूजती और मानती हैं, वे उनके द्वारा ठगाई जाती हैं शास्त्रोंमें कहा है:—

जह कुव्वेस्सा रत्तो, मुसिज्जमाणोवि मरमये हरिसं।

तह मिच्छवेस मुहिया, गये पिण मुणन्ति धम्म णिहं॥

अर्थ जैसे कोई वेश्यासक्त पुरुष धनादिक ठगाता हुआ भी हर्ष मानता है, वैसे ही मिथ्यात्व भावसे ठगाए हुए जीव अपनी धर्मनिधिके नाश होनेका कुछ भी विचार नहीं करते।

जो-स्त्री पुरुष मन्दिरको नहीं जाते, निश्चिन्त हो दर्शन नहीं करते, शास्त्र नहीं सुनते और विद्वान् पण्डितों द्वारा कभी तत्त्वोंके स्वरूपका निर्णय कर कर्तव्य और अकर्तव्य स्थिर नहीं करते, भला उनका विश्वास एक जगह कैसे स्थिर रह सकता है? वे कभी तो उन्हें नमस्कार करते, कभी इनकी पूजा करते, कभी अमुकको नारियल चढ़ाते और कभी अमुकके यहां भंडारा कराते हैं जैसे सड़ा नारियल या खोटा पैसा अनेक घरोंमें चक्कर लगाता फिरता है तैसेही उन स्त्री पुरुषोंका माथा अनेक देवियों के आगे फूटता फिरता है। धर्म परीक्षामें कहा है:—

छप्पय—सर्व देव नित नमे, भिक्षुक गुरु माने,
सर्व शास्त्र नित पढ़े, धरम अधरम नहिं जाने;
सर्व विरत वितकरे, सर्व तीरथ फिर आवे,

परब्रह्मको छोड़, अन्य मारगको ध्यावे,
इस प्रकार जो नर रहे, इसी भांति शोभा लहे।
आश्चर्य ! पुत्र वेश्या तनो, कहो पिता कासों कहे ॥

अजैन लोग जैनियोंकी दिल्लगी उड़ाते है और कहते हैं कि जैनी देवी देवताओंकी कितनी निन्दा करते हैं, परन्तु छिपे छिपे किसतरह पूजन अर्चन आदि करते हैं, कैसे निर्लज्ज और दंभी हैं। इतना सुनते रहने पर भी जैनी अपने आचरणोंको नहीं सुधारते।

जैनियोंके घरोंमें स्त्रियोंकी इतनी चलती है कि उनके सामने पुरुष मानों गुलाम ही हैं। कहावत है "जैनी अंधे हिन्दू काने, मुसलमान सुजाखे"। बात भी ठीक है—अपने शास्त्रों द्वारा सुदेव, कुदेव, सुगुरु, कुगुरुका स्वरूप सुनने समझने पर भी खोटे मार्ग पर चलते हैं, इसीलिये जैनी अंधे हैं। हिन्दू काने यों हैं कि बिना समझे लकीरके फकीर बने सब देवोंको मानते पूजते हैं, केवल जैन-धर्मसे दूर जाते हैं। अपने ही शास्त्रोंमें लिखे हुए ऋषभावतारकी भी निन्दा करते हुए कहते हैं 'हस्तिना पीड्यमानोऽपि न गच्छेज्जैन-मन्दिरम्' अर्थात् हाथीके पैरके नीचे दबकर मर जाना भला, पर जैन मन्दिरमें जाना अच्छा नहीं। उनके ऐसा कहनेका यही प्रयोजन है कि अगर लोग जैन मन्दिरमें जाकर प्रत्येक मार्गको अच्छी तरह समझ जायेंगे तो हिन्दू धर्म परसे उनकी श्रद्धा उठ जायगी, और मुसलमान सुजाखे इस तरह हैं कि अपने इष्ट, सिवा खुदाके, दूसरेको

मानने पूजनेका विचार स्वप्नमें भी नहीं करते। वे साफ साफ कहते हैं—'जिसके ईमानमें फर्क है उसके बापमें फर्क है'। इन बातोंसे जाना जाता है कि जैनी लोग हाथमें दीपक लिये हुए जान बूझकर कुएमें गिरते हैं।

जैनियोंकी स्त्रियोंमें यह खूब देखा जाता है कि उन्हें जैसे ही कोई पीड़ा हुई कि फौरन ओझा और जोगियोंकी पुकार हुई। वे लोग भी कोई तो पीतरोंकी कुनट, कोई भूत प्रेत या चुड़ैलका लगना और कोई शनैश्चर आदिका प्रकोप बताते हैं और मनमाना लूटते खसोटते हैं। भोली स्त्रियां भी पाखंडियोंके पाखंडमें आजाती हैं और शीतला, भैरों और महादेव आदिको नाना प्रकार से पूजतीं, अंडे चढ़वातीं, दूसरोंसे बलिदान करवातीं, कबरस्तानों की मानता मानतीं और ताजियोंको रेवड़ी चढ़ाती हैं। तावीज बंधवाती, भभूत खाती और न जाने क्या क्या दंडे डोरे करवाया करती हैं। गनीमत थी, यदि वे इससे सुखी भी होतीं, पर ऐसा नहीं होता है। इस तुच्छ भ्रम जालमें पड़कर वे केवल दुःखी ही हैं और होती हैं। यदि जरा भी विचारशक्तिको काममें लावे तो स्वयं सोच सकती हैं कि ये तुच्छ देव और गुरु जब स्वय ही दुखी हैं तो दूसरोंके दुःखको क्या दूर करेंगे। फिर "होनहार होके रहै" सुख दुःख कर्मानुसार होते हैं, उसमें अन्तर डालनेमें कोई भी समर्थ नहीं है।

हिन्दुओंके यहां एक कहावत कही जाती है और वह यह है:—

देवी दुरगा सेढ़ शीतला, सब मिल हरिपै आय।
बोली हरि ! सब तुमको पूजें, अब हम कैसे खांय॥

तब हरिजो झट यों उठ बोले, भूमण्डलमें जाओ।
जिस घर मेरो नाम नहीं है, उसको लूटो खाओ॥

जिससे मालूम होता है कि हिन्दू लोग भी और खासकर समझदार हिन्दू लोग इन्हें—देवी देवताओंको—नहीं मानते। कोई जैन धर्मके तत्त्वोंको न समझनेवाली स्त्री यहां कह सकती है कि बालबच्चेवाले आदमी यदि ऐसा न करें तो चल नहीं सकता। हम ऋषि मुनि तो हैं हीं नहीं जो सब त्यागकर बठ जाँय। बालबच्चोंका साथ है, यदि दुर्गा और शीतला आदिको न मानें तो उनकी—बालबच्चोंकी रक्षा कौन करे? उनसे मैं पूछता हूँ कि देव देवियोंके पुजारियोंकी—उन स्त्री पुरुषोंकी—जिनकी नाक देवि देवताओंके आगे नमस्कार करते २ रगड़ गई हैं—पिसगई हैं, सन्तति (बालबच्चे) क्यों मर जाती है? माता शीतलाके पूजने वाले बड़ी भक्ति करने वाले स्त्री पुरुषोंके बालबच्चे माताकी ही बीमारी में क्यों मर जाते हैं? क्या शीतला उनकी रक्षा नहीं कर सकती? (हाँ वास्तवमें नहीं कर सकती) तो फिर पूजा पाठ किसलिए? अच्छा, अब दूसरी तरहसे सोचो। अंग्रेज, मुसलमान और दूसरे २ वे मनुष्य जो देवी देवताओंको नहीं मानते, नहीं पूजते, उनकी उलटी निन्दा और अविनय करते हैं, उनकी सन्तान क्यों भली चंगी रहती है? शीतलाके रोगसे अच्छी क्यों होजाती है? सबकी सब मर हीं क्यों नहीं जातीं? क्योंकि देवी तो उनपर नाराज ही होगी। मेरी भोली बहिनो! जो कुछ भी अच्छा या बुरा होता है सब अपने

भाग्यसे सब अपने शुभ या अशुभ कर्मके फलसे, कोई देवी, देवता, पीर, पैगम्बर, कोई क्षेत्रपाल या कोई तीर्थंकर तुम्हारे भाग्यको बदल नहीं सकता। अपने कर्मोका बुराभला फल तुम्हें देखना ही पड़ेगा भोगनाही होगा। उसको कोई भी टाल नहीं सकता। प्राकृत पिङ्गलसूत्र २ परिच्छेद १०२ में कहा है:—

पाण्डव वंसहिं जन्म करीजे।
सपअ अज्जिम धम्मक दीजे॥
साउ जुहिट्ठिर संकट पाआ।
दैविक ललिअ केणं मिटाआ॥

अर्थ—पाण्डववंशमें जन्म लेने वाले, उत्तम सम्पदा और धर्मके धारण करने वाले युधिष्ठिर सरीखे महाराज भी जब संकटको प्राप्त हुए, तो कहिए भाग्यको कौन मेट सकता है? स्वामि कार्तिकेयानुप्रेक्षामें कहा है—

आउक्खयेण मरणं, आउ दाऊण सक्कदे कोवि।
तह्मा देविन्दो विय, मरणाउण रक्खदे कोवि॥१॥

अर्थ—आयु कर्मके क्षय होनेसे मरण होता है। आयुकर्म देनेको कोई समर्थ नहीं है। इसी कारण देवपति—इन्द्र—भी किसीको मृत्युसे नहीं बचा सकता।

और भी देखिए भगवान् आदिनाथ—प्रथम तीर्थङ्कर, कर्म-भूमिके प्रवर्तक ब्रह्मा, भरत चक्रवर्तीके पिता और इन्द्रादि देवोंके पूज्य थे, वे भी अन्तराय कर्मके प्रबल उदयसे छः महीने तक निराहार विहार करते रहे। परम पुरुषोत्तम रामचन्द्रको वनवास

और सरला सीताको वियोग प्राप्त हुआ। इसी प्रकार नवम नारायण श्रीकृष्णकी उत्पत्तिके समय न तो किसीने गाया और न मृत्यु समय किसीने रुदन ही किया। इन दृष्टान्तोंसे जान पड़ता है कि जैसे अच्छे और बुरे कर्म किये जाते हैं, उनके अच्छे या बुरे फल स्वयमेव मिलते ही हैं। जो स्त्रियां इतना जानकर भी योग्य उपाय नहीं करतीं वे दीपक हाथमें लेते हुए कुएंमें गिरती हैं। कैसी मूर्खताभरी बातें हैं कि बच्चोंको शीतला, निकलनेपर इलाज तो करती नहीं, करती क्या हैं? माता दुर्गाके गीत गाती हैं, उन्हें पूजती हैं; पूआपूरी ले और माथेपर अगीठी रख माताके मठमें, उसे मनाने जाती हैं, दण्डवत् करते-करते मठ तक दौड़ती हैं। उन्हीं अपनी मूर्ख बहिनोंके लिए, माताकी बीमारीकी उत्पत्ति संक्षिप्तमें लिखता हूँ। आशा है, वे अपनी अज्ञानता और कुदेवादिका पूजन—भजन छोड़ेंगी।

प्रकट हो कि माताके पेटकी गर्मीका कुछ अंश सन्तानमें आ जाता है। वही विकार ऋतु, खानपान या और कोई ऐसा ही कारण पाकर बालकके शरीरमेंसे चेचकके दानें-फुन्सियों द्वारा बाहिर निकलता है, जिसे लोग चेचक, भवानी, माता और शीतला आदि कई नामोंसे पुकारते हैं। यह केवल शारीरिक विकार है। किसी देव-देवीका कोप नहीं है। इसके लिये लोग टीकाको अच्छा उपाय बताते हैं। कभी-कभी टीकेकी सामग्री अच्छी न होनेसे जितना फायदा होना चाहिए, उतना नहीं होता। अर्थात् टीका लगनेपर भी माताकी बीमारी कभी-कभी निकल ही आती है।

इस बीमारीमें पहिले दो-तीन दिन तक ज्वर आता है। फिर सिरसे फुन्सियोंका निकलना आरम्भ होता है और थोड़े दिनोंमें सारे बदनपर फुन्सियाँ हो जाती हैं। जब इस तरह चेचक निकलनेका हाल मालूम हो, तो घरमें कोई पक्वान्न न बनाना चाहिए। रोगीकी माताके सिवाय दूसरी रजस्वला स्त्रियोंकी दृष्टि से उसे - माताके रोगी को बचना चाहिए। सर्दठण्डी—चीजें अधिकतर न खिलानी चाहिए, किन्तु तर भोजन उसे देना चाहिए और सफाईके साथ रखना चाहिए। माताके गीत गा-गा करके अपने पुत्रको हाथसे न खोना चाहिए, या अन्धा, बहरा आदि न बनाना चाहिए। देखा गया है कि इन दिनों बहुतेरी स्त्रियां इसलिए मन्दिर नहीं जातीं कि, कहीं जिनेन्द्रके दर्शन करनेसे मातादेवी रुष्ट न हो जाय! चलो अच्छा हुआ। यों ही दर्शन करने, जाप्य देने और स्वाध्यायकी इच्छा नहीं थी, जब उसके लिये मूर्खतापूर्ण पूरा कारण (कहने सुननेमें) मिल गया। सच है 'विनाशकाले विपरीतबुद्धिः' अर्थात् जब बुरे दिन आते हैं तब बुद्धि भी भ्रष्ट हो जाती है। सारांश यह कि यदि वे ही भोली स्त्रियाँ मन्दिर जाएं, शास्त्र-स्वाध्याय करें और विद्वानोंके व्याख्यान सुनें तो ऐसी मूर्खताओंमें न पड़ें, क्योंकि कर्त्तव्य अकर्त्तव्यका ज्ञान उन्हें उन्हीं बातोंसे—शास्त्र-स्वाध्याय और धर्मोपदेशसे—हो जाय व वे अपना भला और बुरा समझने लगें। कोई बहिन प्रश्न करती है कि कुगुरु कुधर्म और कुशास्त्रसे यदि कुछ नहीं होता तो फिर क्यों इतने मनुष्य उन्हें मानते हैं? इसका

उत्तर यह है कि बहुतसे आदमी यदि शराब पीते हैं तो कुछ शराबका पीना अच्छा नहीं समझा जा सकता। अथवा यदि बहुतसे आदमी चोरी करते हैं तो चोरीका करना अच्छा नहीं समझा जा सकता। कुदेवादिककी पूजन आदिका इसलिये विरोध है कि उनकी पूजनसे राग, द्वेष आदि दुर्भावोंकी वृद्धि होती है, जिससे पापकर्मोंका बन्ध होता है, जो दुःखका कारण है। पर सुगुरु, सुदेव और सुधर्मकी पूजा—वन्दना—से विषय-कषाय घटकर परिणाम निर्मल होते हैं। जिससे पुण्य कर्मके बन्धसे इष्ट सामग्रीका समागम होता है।

बालकोंके अज्ञानी, दुर्बुद्धि और अनाचारी होनेका एक कारण कुसंस्कार भी है। जो स्त्रियाँ नीच व्यभिचारी और जगत के ठगनेवालोंके फन्देमें पड़ती हैं, वे अपना धर्म, कर्म, शील और श्रद्धान रूपी धन खो बैठती हैं। आजकल साधु, फकीर, भट्टारक और ऐसे ही और श्रद्धा-भक्ति-भाजन व्यक्ति महा अवगुणोंकी खानि हो रहे हैं—महा बने हुए होते हैं; अतः स्त्रियोंको चाहिए; कि स्वप्नमें भी इन लोगोंके हाथ न जावें, ये पाखण्डी और ठग लोग—ये रंगे हुए लड़ैए, ये बगलाभक्त जानबूझकर स्त्रियोंको बिगाड़ते हैं। ये लोग धर्मात्माओं-सरीखे नाम और वेश रक्खे खूब माल खाते और मजा उड़ाते हैं। ये इन्द्रियों और मनको वश करना तो दूर रहा, उल्टे व्यभिचारके साज सजते हैं और धर्मकी ओटमें चोट खेलते हैं, टट्टीकी आड़में शिकार करते हैं। धर्मबुद्धि और सच्ची स्त्रियोंके सामने उनकी दाल नहीं

गलती। जब समाजका यह हाल है, तो क्यों न सारे दुर्गुणोंसे युक्त सन्तान होवे, परन्तु उन धर्मप्राण सच्ची स्त्रियोंकी सन्तान पुण्यके प्रसादसे सुशील, बलवान, गुणवान और विद्वान् होती है। धर्मके प्रभावसे ऐसी स्त्रियोंकी सन्ततिको रोग, पीड़ा आदि भी नहीं होती और जो होती भी है तो शीघ्र शान्त हो जाती है। पुरुषोंको चाहिए कि ऐसे ढोंगी मायावी लोगोंके पास अपनी स्त्रियोंको व बहिन-बेटियोंको जानेसे बचावें।

धर्मात्माकी तो परछाई मात्रसे दूसरोंके विघ्न, कष्ट, रोग और शोक दूर होजाते हैं। धर्मकी महिमा अचिन्तय है। पद्मपुराणमें परम शीलवती श्री विशल्याकी कथा लिखी है कि, उसके पूर्व जन्मके जप और शीलके प्रभावसे उसके स्नानोदकके—स्नान किए हुए पानीके स्पर्शसे देशमें फैला हुआ मरी रोग शांत होगया। उसीसे लक्ष्मणकी शक्ति और घायल सैनिकोंके घाव—कष्ट दूर होगए—घाव भर गए। यह सब सम्यग्दर्शनका ही प्रभाव है। और सच भी है क्योंकि जिसे सम्यग्दर्शनके प्रभावसे मोक्षरूपी अक्षय सम्पदा प्राप्त होजाती है—जन्म-मरण जैसा अद्वितीय प्रबल रोग दूर होजाता है, तो साधारण शारीरिक रोगोंका कहनाही क्या है ? इतनीसी बात क्या है।

इस प्रकार संसारमें भटकनेवाले मिथ्यात्वको छोड़े, अर्हंत देव निर्ग्रंथ गुरु और दयामयी धर्मको सेवनकर षट्द्रव्य सप्त तत्त्व, नव पदार्थका स्वरूप जानो। आत्माके सच्चे धर्मका श्रद्धान कर सच्चा सुख पाओ। मनुष्य जीवनका यही लाभ है।

समयकी आवश्यकताके अनुसार स्त्रियोंकी कुछ और भी शिक्षाएँ यहाँ लिखी जाती हैं। आशा है स्त्रियां ध्यान देंगी।

अविद्याके प्रभाव और कुसंगतिके प्रभावसे जैन स्त्रियां भी विवाह और पुत्रके-जन्मके समय ऐसे बुरे—गीत निर्लज्ज गालियां—गातीं हैं, जो उच्च जैनकुलके सर्वथा विरुद्ध है। सोचो तो कि जहां अपने माता, पिता, सास, श्वसुर आदि गुरुजन बेटा बेटी और जातिके जेठे नरनारी आदि बैठे हों वहां गालियां गाकर, उन फूहड़, कर्णकटु, सद्भावभंजन और क्षुद्रता—व्यंजक शब्दोंकी धारा बरसाकर, स्त्रियां क्या लाभ सोचती हैं? उन्हें कुछ लाज नहीं आती? जिन घरकी बहू बेटियां, और तो और, भरे बाजारमें, सभी तरह जेठे बड़े स्त्री पुरुषोंके सामने, कुछ भी संकोच न करें, यह कितने गजबकी बात है। बड़ी प्रसन्न हो होकर सदाचारिणी स्त्रियोंको गालियाँ देना—लांछन लगाना—व्यभिचारिणी कहना, कितने दुःखकी बात है। यह केवल उन स्त्रियों या उनके पतियोंकी अज्ञानता है। इन निलज्जता भरे फूहड़ गीतोंके गानेसे छोटी पुत्रियोंके कोमल हृदयों पर अपनी इन बातोंसे बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है।

विवाह सरीखे पवित्र कार्योंमें तो, इसका पूरा-पूरा मौका मिलता है। फेरेके दिन पुरुष तो वरको साथ ले कन्या-पक्षके यहाँ फेरे फिराने चले जाते हैं और यहां अवसर पाकर स्त्रियां अपना कौटुम्बिक सहेलियों और नीच जातिकी स्त्रियोंके साथ इकट्ठी हो एक सुन्दर युवतीको पुरुषके वेषमें करके, उसका एक दूसरी

स्त्रीसे काल्पनिक सम्बन्ध जोड़ती हैं। अथवा कभी कभी यह सम्बन्ध नहीं जोड़ती। केवल एक स्त्रीको बाबा बना देती हैं और उसके साथ मनमानी कुचेष्टा करती हुई, अट्टट और लबालब शृंगार के गीत गाती हुईं, तथा ढोल बजाती हुईं सारे बाजारमें फिरती हैं। इस कृत्यको देख और सुनकर लज्जाको भी लज्जा आती है।

बहिनो। ऐसे अश्लील कृत्योंसे शिष्ट पुरुषोंको उन स्त्रियोंमें चरित्र हीनताका सन्देह उत्पन्न होता है। अतः हमारी कुलीन बहिनों का ऐसा करना उचित नहीं। गीत गाओ, उनकी मनाई नहीं है। पर ऐसे गीत गाओ जो देश, जाति और धर्मके कल्याण का मार्ग बतावे, स्त्री-पुरुषोंको बुरे मार्गो परसे खींचकर अच्छे मार्गोंपर चलावें और साथही उनके चित्तको भी प्रसन्न रक्खें।

विवाहके समय बहुतेरी स्त्रियाँ अज्ञानता और अन्धपरम्परा की नीतिसे अथवा अन्य मतावलम्बियोंकी देखादेखी, देवी दिहाड़ी, चक्की, चूल्हा, देहली; गणेश, कुम्हारका चाक और गधे आदिका पूजती और साथ-साथ निर्लज्ज गीत गाकर समझती है कि इन बातोंसे विवाह निर्विघ्न समाप्त होता है, यह उनका बड़ा भ्रम है। भला मूर्खतापूर्ण और अकार्योंसे कोई कब सफलता पा सका है? जो धर्मात्मा और बुद्धिमान हैं, वे जन्मसे मरण तकके सम्पूर्ण संस्कार शास्त्रानुकूल करके पुण्य बन्धन करते हैं जिससे अपने आप विघ्न आते हो नहीं। वे विवाहादिक संस्कारोंको भी शास्त्रानुकूल ही करते हैं। वर्तमानमें विवाह

सम्बन्धी जो नेंग या प्रथाएं बुरी समझी जाती हैं उनकी वास्तविकताकी ओर दृष्टि देकर देखा जाय, तो जान पडता है कि कुरीतियां ही धीरे धीरे इस रूपमे आगई है, जिन्हे अब हम बुरी और हानिकारक निगाहसे देखने लगे हैं अगवानी (आतिशबाजी) शब्द हमें स्पष्ट बताता है कि, वर-पक्षकी बारातके आनेपर पेशवाई करना—स्वागत करनाही अगवानी है आश्चर्य नहीं कि, इस स्वागतकी प्रथामे कभी आतिशबाजी भी चलाई जाती रही हो। सो और आदर सत्कार तो गया। रही ये मुँह झुलसा देनेवाली और रुपयोंका धुआँ उडा देनेवाली आतिशबाजी। और क्या जाने किसी मनचले रईसजादेन ही शायद इस हत्या कारिणी प्रथाको जन्म दिया हो। समयके फेरसे न जाने कितनी अच्छी प्रथाएँ उन्हीं पूर्व प्रथाओंके बचेखुचे ईंट रोडेसे तैयार हो गई। अथवा अनेकों नई प्रथाए उत्पन्न होगई। उन्हींमेंसे अनेकों नाम भी अपभ्रंश होगए। किसी किसी देशमे विवाहके पूर्व कुम्हारके चक्केकी पूजन कीजाती है, क्या जाने, शायद इसका प्रयोजन सिद्धचक्र—यन्त्रकी स्थापना हो। इसी यन्त्रको भोंवर-फेरा-के पूर्व विवाह मण्डपमे लानेका नाम गणावना—विनायकी है और भी कई क्रियाए ऐसी हैं जो अर्थका अनर्थ होगई है। यदि उनके विषयमें छानबीन की जावे तो वे कोई अच्छी प्रथाएँ निकलेंगीं। चतुर व्यक्तियोंका चाहिये कि वे प्रत्येक कार्यका यथार्थ—वास्तविक स्वरूप ही जानकर ठीक रीतिसे व्यवहार करें। विवाह आदिमे भोजन वगैरह शुद्धसामग्री

तैयार कराने और पानीके छाननेका पूरा यत्न रखना चाहिए जिससे उत्तम जातिका आचार नष्ट न होने पावे। विवाहमें कभी भी कुप्रवृत्तियोंके बढ़ानेवाले, अनर्थ-दण्डरूप, लज्जाजनक, लोकनिंद्य, भण्ड गीत भूलकर भी न गाये जायें। ऐसे गीतोंसे शीलमें दूषण लगता है, जो लोग निंदा करते हैं कि ये उच्च जातिकी निर्लज्ज स्त्रियाँ गली गली कैसी निंद्य गालियाँ बक रही हैं और अपनी जाति तथा धर्मको लांछन लगारही हैं। जो बुद्धिमान स्त्रियाँ अपने लोक परलोकको सुधारना चाहती हैं, वे ये भंडगीत गाना और अन्य मिथ्यात्व--सेवन कुछ भी निंद्य कार्य्य नहीं करतीं शुभ क्रियाएँ करती हैं और सुन्दर बोधप्रद और धार्मिक गीत गाकर पुण्यलाभ लेती हैं, जिससे उनका, उनके कुलका और उनके धर्मका यश जगतमें फैलता है।

विधवा-कर्त्तव्य

नरभव यौवन, धान्य, अरु विवेक विज्ञान।
पाय धर्म सेवन करहु, काटहु कर्म सुजान॥
जो कदापि दुख आ परै, तो न करहु कछु शोग।
पूरव करनी विधि करी, धरि धीरज फल भोग॥
धर्म-कर्ममें अटल रहु, कटें पूर्वकृत पाप।
पुण्यकर्म नूतन बँधे, सुख पावें नित आप॥

यदि कोई स्त्री विधवा हो जाय तो अपने वय-प्राप्त पुत्रोंके आधीन रहे और उन्हींकी आज्ञानुसार चले। यदि कुटुम्बमें कोई

पालन-पोषण करनेवाला न होतो उसे चाहिये कि अपने कुल और जातिके योग्य न्यायपूर्वक उद्योग करके अपना उदर निर्वाह करे और सन्तोष करके धर्म में संलग्न रहे।

देखा जाता है कि कोई कोई स्त्रियां विधवा हो जाने पर महीनों रोया करती हैं। माथा पीटतीं और छाती कूटती है, पर यह सब व्यर्थ है। उनका चिल्लाना सुनता कौन है? फिर इस दुखको कौन दूर कर सकता है? रोना तो मानो केवल मूर्खता दर्शाना है। बहुत जगह पुरुष और स्त्रियाँ फेरेको आती हैं, और मृत-व्यक्तिका गुणानुवाद करके उस बेचारीको और रुलाती हैं जिसमें उसे तीव्र आर्त परिणामों द्वारा दुर्गतिका बध होता है।

उमास्वामी आचार्यने कहा है कि--

'दुःख शोक तापाक्रन्दनवधपरिदेवनान्यात्मपरोभयस्थान्यसद्वेद्यस्य'

अर्थात्—दुःख करना, शोक करना, पश्चाताप करना, रोना, दूसरोंका वध करना और तीव्र करुणाजनक रुदन ये कार्य स्वयं करना और दूसरोंके प्रति करना अथवा उभय - दोनों—को करने से असाता वेदनीय कर्मका बन्ध होता है।

अचार्य सोमदेवने कहा है, कि—

अतीते वस्तुनि शोकः यद्यस्ति तत्प्राप्तिः।

अर्थात् इष्ट वस्तुके वियोग होने पर यदि उसकी प्राप्ति होने की आशा है तो शोक करना उचित है।

परन्तु जब किसी प्रकार मिल नहीं सकती तब शोक करके

पापबन्ध क्यों किया जावे। अतः हमारी विधवा बहिनोंको निरर्थक शोक करना छोड़देना चाहिये।

और देवपूजा गुरुपास्ति: स्वाध्याय, संयमस्तपः और त्याग इन ६ सत्कर्म प्रवृत्तिकर ऐहिक और पारलौकिक श्रेय-सुख प्राप्त करनेमें प्रयत्न भी होना चाहिये।

विधवा स्त्रीका बाहर न निकलना ही किसी तरह अच्छा है परन्तु कारण-वश उसे निकलना ही पड़ता है। जैसे मन्दिर आदिको। उसे विचारना चाहिये कि पूजन, अर्चन, दर्शन और शास्त्र-पठन-भजन ही तो पाप और दु:खके दूर करने वाले हैं। फिर मूर्खोंके कहनेमें लगकर दर्शन आदि करनेको न जाना कहांकी बुद्धिमत्ता है। खाने-पीने, लेन-देन, आदि सांसारिक काम तो छूटही नहीं सकते, होते ही हैं, परन्तु धर्मके लिए कोई प्रेरणा करनेवाला नहीं है। यदि तुम उसे भुला दो तो भले भुला दो, पर धर्मको भुलाकर तुम अपना दु:ख दूर नहीं कर सकती, प्रत्युत बढ़ाती ही हो।

राजा राणा छत्रपति, हथियनके असवार।
मरना सबको एक दिन, अपनी अपनी वार ॥१॥
दलबल देवी देवता, मात पिता परिवार।
मरती बिरियाँ जीवको, कोई न राखन हार ॥२॥
आप अकेला अवतरे, मरे अकेला होय।
यों कबहूँ इन जीवको, साथी सगा न कोय ॥३॥
मोहनींदके जोर जगवासी घूमें सदा,
कर्मचोर चहुं ओर सरवस लूटें सुधि नहीं ॥४॥

अत. बहिनो। धर्मोरक्षति रक्षित । अर्थात्—धर्मकी रक्षा करनेसे ही तुम्हारी रक्षा होगी इसे खूब समझलो। सदा धर्मका पालन करो। अनेकों विधवाएँ कुसंगमे पड़कर अपने धर्मको भूल जाती हैं। जिससे वे अपने दोनों कुलोंके नाम डुबोती हैं। उन्हें ऐसी पाप प्रवृत्ति—पुनर्विवाह और कुशीलसेवन आदि – से दूर रहकर अपने जीवनको त्यागरूप — आदर्श — बनाना चाहिये। उन्हें कुलटाओंकी छायासे भी दूर रहकर शृंगारके बर्धक भड़कीले वस्त्राभूषणोंको त्यागकर जैनशासनकी तरह शुद्ध शुभ्र वस्त्र पहिनना चाहिये।

अच्छे कुलीन घरकी बहू-बेटियाँ कदापि पाप प्रवृत्तिकी ओर नहीं जातीं। क्या कभी अमृत जहर हो सकता है ? नहीं हो सकता। उसी प्रकार कुलीन बहू बेटी कुलटाओंके बहकावमे आकर क्या कभी पाप प्रवृत्ति करसकती है ? नहीं कर सकती। वे बड़े ही धैर्यसे उस कर्मफलको—पति वियोगके दु:खको—सहती है। और सहना ही चाहिये। कर्म फलका उदय अमिट है। प्राणी पंच पापोंसे लिप्त होते या लिप्त रहते हुए तो इसका कुछ खयाल नहीं करता, पर जिस समय उनका उदय आता है इष्टका वियोग और अनिष्टका संयोग होता है—तो हाय हाय करता है।

परन्तु इस समय हाय हायसे दु:ख घटनेका नहीं, उलटा बढ़ता है। उसे तो-कर्म फलको-संतोष और प्रसन्नताके साथ भोग लेनेमे ही सार है। इस समय सोचना चाहिए कि पाप कर्मका

उदय मेटनेको कोई सार्थक नहीं है। अजना जैसी सती पूर्व पापके उदयसे २२ वर्ष तक पतिकी अवहेलना—तिरस्कार सहती रही, कुटुम्बियोंने ही व्यर्थका कलङ्क लगाया, गर्भावस्थामें ही पहाड़ और जगल जगल भटकना पड़ा—अनेक कष्ट सहे। सीता जैसी पतिव्रताको झूंठा कलङ्क लगाया गया, उसे पतिकी ही आज्ञासे नगरसे निकल वनमें जाना पडा और इस पर भी दु खका अन्त न आया, अपने शीलकी परीक्षा देनेको अग्नि-कुण्डमे प्रवेश करना पड़ा।

अनेक महान व्यक्ति पापके उदयसे राजासे रक और शूरसे क्रूर होगये तो हम सरीखोंकी तो बात ही क्या है? विचारना चाहिए कि कदाचित् मैंने पूर्वभवमे जिनेन्द्रके प्रतिबिम्बका अनादर किया होगा, जिनमन्दिर या चैत्यालयके उपकरण चुराए होंगे, निर्माल्य भक्षण किया होगा, अशुद्धिकी अवस्थामें माननीय पूज्य पुरुषों या ऋषियोंका भोजन कराया होगा, उसी अवस्थामें शास्त्र छुए होंगे व मन्दिर गई होगी, मन्दिरमें अशुद्ध द्रव्य चढ़ाया होगा, जिन मन्दिरमे प्रमाद मूर्खता या कोई कुचेष्टा की होगी, मुनिदानमे अन्तराय डाला होगा, सच्चे धर्मात्माओंकी झूठी निंदा की होगी, झूठी चुगली खाई होगी, किसीको झूठा कलंक लगाया होगा, मिथ्यात्व सेवन किया होगा, हिंसाके कार्य किये होंगे, जेठे पुरुषोंका—माननीय पुरुषोंका अपमान किया होगा, अभक्ष्य भक्षण किया होगा, प्रतिज्ञा भग की होगी, आशय यह कि अनेक प्रकारसे

पाप कमाया होगा, तभी तो यह पति वियोगका दु सह दु ख सहना पड रहा है।

अब मेरा यही कर्तव्य है कि, धैर्य धारण करके इस विपत्ति को बिना किसी सकल्प विकल्पके भोगू और आगेके लिये सावधानीसे धर्ममे तत्पर होऊ। यदि धर्ममे तत्पर न होऊगी तो न जाने आगे मेरी क्या दुर्गति होगी, न जाने कैसे दु ख भोगने होंगे? अब तो मैं धर्मकी शरणमे हूँ क्योंकि वही दु खसे पार करनेवाला और भव भवमे सुख देनेवाला है।

ऐसा ही विचार करके अशान्तिकी ओर अपने विचारोंको न ढुलने देवे। दान, व्रत, तप, नियम, पूजन और स्वाध्यायपूर्वक अपनी आयु पूर्ण करे। सासारिक विषयोंसे—पचेन्द्रियोंक विषयोंसे—दूर रहे। अपनी इन्द्रियां और मनको वश करे। स्त्री को शृगार करना सधवा होनेपर ही शोभा देता है। विधवा का शृगार धर्म विरुद्ध, लोक निन्द्य और शीलका घातक है। विधवा अयोग्य वस्त्राभूषण धारण न करे। सधवाओं-जैसे चटकदार कपडे और गहने न पहिने। अजन आदि न लगावे। पान, इलायची और केशर आदि पुष्ट और कामोद्दीपक मसाले न खावे। माथेपर तिलक, बिन्दी, रोरी न लगावे। बालो या कपड़ोंमें तैल या इत्र न लगावे, दूध, दही, घृत, मोदक आदि गरिष्ट और पुष्टिकारक भोजन अधिक परिमाणमे न खावे, क्योंकि इससे इन्द्रियाँ प्रबल होकर अपने २ विषयोंकी ओर खींचती हैं। यदि वे अथवा ऐसे ही और पदार्थ बिल्कुल न खाये जावें तो अच्छा

है। किसी स्त्री या पुरुषसे हंसी तमाशे और कौतूहल आदि क्रिया न करे। नाटक, सिनेमा, स्वांग, रहस और भांडोके कौतुक और मेलों, तमाशोंमें न जावे। बुरे गीत न गावे और बुरे वार्तालाप न सुने। सधवाओंके सधवापनके चिन्होंको—अलंकार आदिकी इच्छा न करे नीचेकी कविताको सोचे और समझे—

> दुःख और सुखके बीचमें, पछतावे क्यों कूर।
> माशा बढ़ै न तिल घटे, जो कुछ लिखा ललाट॥
> पूरब भोग न चितवै, आगम बांछा नाहिं।
> वर्तमान वर्तै सदा, सो सुखिया जगमांहि॥

एकासना, उपवास, नीरस भोजन, बेला तेला आदि उपाय द्वारा इन्द्रियोंके वेगको रोकें—उन्हें वश करे। पूजा, दान, स्वाध्याय, पठन-पाठन और धर्मध्यान आदि शुभ कार्योंमें अपना समय लगावें, जिससे पुण्य बन्ध हो और दुःखकी कुछ शान्ति हो। मतलब यह है कि जो स्त्रियां समता-भाव धारणकर सदा धर्मध्यान करती हैं, और अन्तिम समय सामाधिमरण करती हैं वे फिर स्त्री पर्याय धारण नहीं करतीं। वे भरसक स्वर्गमें महद्धिक देव होतीं, मध्यलोकमें राजा महाराजा होतीं और फिर मुनिव्रत धारण कर कर्मका नाश करके मोक्षके अनन्त अनुपम, अक्षय, अलौकिक और अप्रमेय सुखको प्राप्त करती हैं।

विधवा स्त्रियोंको परिग्रहका प्रमाण करके रहना चाहिये; भूषण न पहिरना चाहिए; कपड़ोंसे अंग ढंके रखना चाहिए, सिर ढंके रहना चाहिए, खाटपर न सोना चाहिए, अंजन न लगाना

चाहिए; हल्दीका लेप न करना चाहिए, शोक व रुदन न करना चाहिए, काम सेवन, राज्य व चोरकी कथा कहानी न कहना चाहिए, परन्तु श्राविकाश्रमों द्वारा ज्ञान लाभ करके अपने और पराये हितमे लगना चाहिए। विद्याहीन जैन स्त्री समाजको शिक्षित करनेके लिये हजारों अध्यापिकाओंकी आवश्यकता है। यदि विधवाएं इस कामको हाथमें लेले तो उनका जीवन सच्चे परोपकारमे लग सकता है, उनके व्यर्थ जीवनसे बड़ा उद्देश्य सिद्ध हो सकता है। समाज सेवा करनेसे उनका जीवन दिव्य जीवन बन सकता है। अमेरिका आदि देशामे ऐसी अनेकों समाजसेविका विधवाएँ है। भारतीय विधवाएँ यदि स्त्री-शिक्षाका काम हाथसे ले लें, तो स्त्री जातिके सारे अज्ञान और कष्ट शीघ्र ही मिटा सकती है। वे स्त्रिया धन्य है जो विधवा होनेपर इस प्रकार अपने और पराये हितमे तत्पर हो जाती हैं।

बहिनो, यदि स्त्री पर्याय और जैन कुल तुम्हे किसी भाग्य से मिला है। इस समयका एक भी क्षण तुम्हें व्यर्थ न खोना चाहिए। यदि दुर्भाग्यसे विधवा हो गई हो, तो भी अपने परिणामोंको समहालके रक्खो। धर्मध्यानमे अपना समय बिताओ। यह पर्याय,संसारसमुद्रके किनारे लगनेकी है। यदि इस समय तुम भूल गई--चूक गई तो ठिकाने लगना मुश्किल है। उठते-बैठते, खाते पीते, चलते फिरते और प्रत्येक काम करते या न करते समय यह न भूलो कि हम मनुष्य हैं और हमारा काम धीरे-धीरे कर्मों के जजालसे छूटना है।

मनुष्य पर्यायके विषयमें एक कविने कहा है—

जाको इन्द्र चाहें अहमिन्द्रसे उमा हैं जासों;
जीव मुक्ति जाय, भवमलको बहावे है।
ऐसो नर जन्म पाय खोयो विष विषै खाय;
जैसे कांच साटे मूढ़ माणिक गमावे है।
माया नदी बूड भींजा, काय बल तेज छीजा,
आया पन तीजा अब कहा बन आवे है।
तातें निज शीश ढोलें, नीचे नैन किये डोलें,
कहा बढ़ बोलें वृद्ध बदन दुरावे है॥१॥

÷ ÷ ÷

जोई त्तण कटै सो तो आयुमें अवश्य घटे,
बूंद २ बीते जैसे अंजलिको जल है।
देह नित चीण होत नैन तेज-हीन होत;
यौवन मलीन होत छीन होत बल है।
आवै जरा नेरी तकै अन्तक अहेरी आवे;
परभौ नजीक जात, नरभौ निफल है।
मिलके मिलापी जन, पूछत कुशल मेरी;
ऐसी दशामांहि मित्र, काहेकी कुशल है॥२॥

÷ ÷ ÷

काहू घर पुत्र जायो काहूके वियोग आयो;
कहूँ राग रंग कहूँ रोयारोय करी है।
जहाँ भानु ऊगत उछाह गीत गान देखे;

सांज समै ताही थान हाय हाय परी है।
ऐसी जग रीति को न देख भयभीत होत,
हा हा नर मूढ़ तेरी मति कौने हरी है।
मानुष जनम पाय, सोवत विहाय जाय,
खोवत करोरनकी एक एक घरी है ॥३॥
\+ — —

देखो भर यौवनमें पुत्रको वियोग भयो,
तैसे हो निहारी निज नारि कालमगमें।
जे जे पुण्यवान जीव दीसत हैं जगमाहिं,
रङ्क भये फिरें तिन्हें पनहीं न पगमें।
ऐसे पै अभाग, धन जीतबसे धरै राग,
होंय ना विराग जानै रहूँगो अलगमें।
आखिन विलोके अन्ध सुस्सेकी अंधेरी करै,
ऐसे राज रोगको इलाज कहा जगमें ॥४॥

ऐसी हम संसारी जीवोंकी भ्रम-बुद्धि और अज्ञान—दशा देख श्रीगुरु करुणा करके इस प्रकार समझाते हैं—

जौलों देह तेरी काहू रोग न घेरी जौलों,
जरा नाहिं नेरी जासों पराधीन पर है।
जौलों जम नामा बैरी देय न दमामा तौलौ,
माने आन रामा बुधि जाय न बिगर है।
तौलों मित्र मेरे ? निज कारज संभार लेरे,
पौरुष थकेगो फिर पिछे कहा करिहै।

अहो आग आए जब झोपड़ी जरन लागे,
कूपके खुदाए कहो कहा काज सरहै ॥५॥

इसलिये हे जाति-सुधारक भाइयो और बहिनो। ऐसा यत्न करो जिससे समाजकी ये विधवाए अपने निस्सार जीवनका उपयोगी जीवन बना डालें। मनुष्य या स्त्री जन्मका कर्तव्य समझें। मिथ्यात्व और प्रमाद छोड़ धर्ममें तत्पर होवें और अपना अगला जन्म मंगलमय बनावें। यदि ये अभी आत्म-कल्याण न करेगी तो पीछे पछताना होगा और दुखमें पड़न होगा।

मानुष तन श्रावक कुलहि, पावो दुर्लभ फेर।
यह अवसर मत चूकियो, सद्गुरु भाषें टेर॥

गार्हस्थ्यजीवन को सुखी बनानेका उपाय

एक वर्णमाला या जातिवाला वर अपने गोत्रको टालकर दूसरे सजातीय और भिन्न गोत्रवाले पुरुषकी कन्यासे विवाह करलेता है, तब वे दोनों पति-पत्नी या दम्पति कहलाते हैं।

यदि दोनों दम्पतियों ने बाल्यकाल में ललितकलाओं—नैतिक, धार्मिक और लौकिक शिक्षाओं—का अभ्यास किया है तो उनका गार्हस्थ्यजीवन सुखी रहता है अन्यथा नहीं।

नीतिकार सोमदेव सूरिने मूर्खकी कड़ी आलोचनाकी है

न ह्यज्ञानादन्यः पशुरस्ति
नीतिवाक्यामृत से

अर्थात्—संसारमें मूर्खको छोड़कर दूसरा कोई पशु नहीं है, क्योंकि जिस प्रकार पशु घास आदि भक्षण करके मल-मूत्रादि क्षेपण करता है और धर्म अधर्म—कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य को नहीं जानता उसी प्रकार मूर्ख मनुष्य भी खान-पानादि क्रिया करके मल-मूत्रादि क्षेपण करता है और धर्म-अधर्म—कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य को नहीं जानता।

महात्मा भर्तृहरिने भी 'साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः' द्वारा उसे बिना पूँछ और सींगोंका पशु बताया है।

अतः गार्हस्थ्यजीवनको सुखी बनानेके लिए दम्पति को नैतिक, धार्मिक और लौकिक शिक्षाओं से सुशिक्षित, सदाचारी और कर्त्तव्यपरायण होना चाहिए। ऐसा होनेसे वे कौटुम्बिक सामाजिक और राष्ट्रीय कल्याण करनेमें समर्थ हो सकते हैं।

गृहस्थको सबसे प्रथम जीविकोपयोगी साधनों—कृषि और व्यापार-आदि—से न्यायसे धन कमाने में प्रवीण—चतुर होना चाहिये। क्योंकि समस्त लौकिक कुटुम्बकी रक्षा आदि और पारलौकिक—दान, धर्म और परोपकार आदि—सभी प्रयोजनों की सिद्धि धनके सदुपयोगसे ही होती है।

एवं आय—आमदनी—के अनुकूल खर्च करना चाहिए। क्योंकि आमदनीके बिना सोचे समझे अधिक खर्च करने वाला कुवेरके समान धनाढ्य होने पर भी दरिद्र होजाता है। अतः कुटुम्ब-रक्षाके साथ २ पात्रदानादि परोपकार द्वारा धर्मोन्नति करते हुए भविष्य में आनेवाली आपत्तियों—बीमारी-बेकारी-आदि

से बचाव करनेके लिये अपनी आयका कुछ हिस्सा बचाकर रखना चाहिये। जहांतक होसके अपनी आयका आधा भाग कौटुम्बिक-निर्वाह में और चौथाई या आठवां भाग दान-पुण्यादि परोपकार में खर्चकर शेषकी बचत करनी चाहिये।

समस्त सुखोंका मूलकारण नैतिक-धार्मिक-कर्त्तव्य पालन है। अतः देव, गुरु और धर्मकी भक्ति, गुरुजनोंकी उपासना और शास्त्र स्वाध्याय आदि गृहस्थधर्मका पालन करना चाहिये।

उसके साथ न्याय प्राप्त धनका संचय और सदुपयोग करते हुए धर्म और धनकी क्षति न करते हुए—परस्त्री और वैश्या-सेवन आदि अन्यायसे हठकर उदासीन दृष्टिसे न्याय प्राप्त काम पुरुषार्थमें प्रवृत्ति करनी चाहिये।

वादीभसिंह आचार्य ने भी कहा है कि—

परस्पराविरोधेन त्रिवर्गो यदि सेव्यते।
अनर्गलमतः सौख्यमपवर्गोऽप्यनु क्रमात् ॥१॥

अर्थात्—यदि गृहस्थलोग धर्म, अर्थ और काम पुरुषार्थोंको परस्पर में बाधा न डालकर सेवन करें, तो उन्हें स्वर्ग-सुख प्राप्त होते हैं और क्रमसे मोक्ष-सुख—समस्त दुःखोंकी आत्यान्तिक निवृति—कीभी प्राप्ति होती है। अतः गार्हस्थ्यजीवनको सुखी बनाने के लिये उक्त कर्त्तव्य-पालन आवश्यक है।

सूतक-निर्णय

—❀✻❀—

सूतकं वृद्धिहानिभ्यां, दिनादि दश द्वादश।
सूतिस्थानस्य मासैकं, दिनानि पंच गोत्रिणाम् ॥

अर्थ—जन्मका सूतक १० दिनका और मृत्युका १२ दिनका होता है। प्रसूति स्थानको १ माह और और गोत्रके मनुष्यका ५ दिनका सूतक होता है।

प्रव्रजिते मृते काले, देशांतरे मृते रणे।
सन्यासे मरणे चैव, दिनैकं सूतकं भवेत् ॥

अर्थ—जो गृहत्यागी—दीक्षित—विदेशवासी या सन्यासी मरे अथवा जिसने संग्राम में प्राण छोड़ा होतो इनका १ दिनका सूतक मानना चाहिये (यदि अपने कुलका हो तो)। यदि अपने कुलका कोई विदेशमें मरा हो और १२ दिन पीछे खबर मिले तो १ दिनका सूतक मानना चाहिये। यदि १२ दिनके पहले खबर मिले तो १२ दिन पूरे होनेमें जितने दिन बाकी रहे हों उतने ही दिनका सूतक माने।

चतुर्थे दशरात्रिं स्यात्, षड्त्रि पुंसि पंचमे।
षष्टे चतुराशुद्धिः, सप्तमे च दिनत्रयं ॥
अष्टमे पुंस्यहोरात्रि, नवमे प्रहरद्वयं।
दशमे स्नानमात्रं स्यात्, एतद्गोत्रस्य सूतकम् ॥

अर्थ—तीन पीढ़ी तक १२ दिन, चौथी पीढ़ीमें १० दिन, पांचवी पीढ़ीमें ६ दिन, छठवीं पीढ़ीमें ४ दिन, सातवी पीढ़ीमें ३

दिन, आठवीं पीढ़ीमें १ दिन-रात्रि, नवमी पीढ़ीमें २ प्रहर और दसवीं पीढ़ीमें केवल स्नान न करने तक सूतक जानना चाहिये।

यदि गर्भे विपत्तिः स्यात् स्रवणां चापि योषितां।
यावन्मांसस्थितो गर्भस्तावद्दिनानि सूतकम्॥

अर्थ - स्त्रीका गर्भ पतन हो तो जितने मासका गर्भ हो उतने दिनका सूतक पालना चाहिये।

पुत्रादि सुतके जाते, गते द्वादशके दिने।
जिनाभिषेकपूजाभ्यां, पात्रदानेन शुद्धयति॥

अर्थ—पुत्रोत्पत्ति आदिके सूतकसे १२ दिन उपरांत भगवान का अभिषेक, पूजन तथा पात्र—दान करनेके पीछे शुद्धि होती है। (यहां सूतक शब्दसे जन्म, मरण दोनोंके सूतक समझना चाहिये।) कभी कभी जन्मका १० दिनका और मरणका १२ दिनका सूतक माना जाता है।

अश्वा च, महिषी, चेटी गौः प्रसूता गृहांगणे।
सूतकं दिनमेकं स्यात्, गृहबाह्ये न सूतकं॥

अर्थ—घोड़ी, भैंस, दासी और गौ आदि जो अपने घरके आंगन में (घरके भीतर) जनें; तो एक दिनका सूतक होता है। जो गृह बाहिर जनें तो सूतक नहीं लगता है।

सतीनां सूतकं हत्या पाप षण्मासकं भवेत्।
अन्या सामान्यहत्यानां, यथा पापं प्रकाशयेत्॥

अर्थ—अपनेको अग्निमें जला लेवे, ऐसी सती होनेका पाप

(सूतक ?) ६ मासका होता है। और हत्याओंका पाप (सूतक ?) भी यथायोग्य जानना चाहिए।

दासीदासस्तथा कन्या, जायते म्रियते यदि।
त्रिरात्रि सूतकं ज्ञेयं गृहमध्ये तु दूषणम्॥

अर्थ—जो दासी दास, तथा कन्या जन्मे या मरे, तो तीन रात्रिका सूतक है। यदि गृहके बाहिर हो तो सूतक नहीं होता है। (यहां मृत्युकी मुख्यतावश ३ दिनका सूतक कहा है)।

महिष्याः पत्तकं क्षीरं, गोक्षीरं च दशो दिनं।
अष्टमे दिवसे जाया, क्षीरं शुद्धं न चान्यथा॥

अर्थ—जननेके बाद भैंसका दूध १५ दिनमें, गायका दूध १० दिनमें और बकरीका दूध ८ दिनमें खाने योग्य शुद्ध होता है।

जातदन्तशिशोर्नाशे, पित्रोर्दशाह सूतकं।
गभस्रावे तथा पाते, विनष्टे तु दिनत्रय॥

अर्थ—जिस पुत्रके दांत आगये हों उसके मरणका सूतक १० दिनका, गर्भस्राव गर्भपात और विनाशका सूतक ३ दिनका है।

त्रिपक्षे शुद्धयते सूती, दिने पंच रजस्वला।
परपुरुषरता नारी, यावज्जीवं न शुद्धयति॥

अर्थ—जिस स्त्रीके बाल बच्चा हुआ हो वह डेढ़ महिनेमें और रजस्वला ५ दिनमें शुद्ध होती है, परन्तु व्यभिचारिणी स्त्री कभी शुद्ध नहीं होती। सदा अशुद्ध—अस्पृश्य रहती है।

करि सन्यास मरे जो कोय, अथवा रणमें जूझो होय।
देशान्तरमें छोड़े प्राण, बालक तीन दिवस लौं जान॥

एक दिवस हो इनको सोग, आगे और सुनो भविलोग ॥
प्रौढ़ा बालक दासी दास, अरु पुत्री सूतक इमि भान ॥
दिवस तीन लौं कह्यो बखान, इनकी मर्यादा इमि जान ॥

भावार्थ—८वर्ष तकके बालकका ३ दिनका सूतक जानो। देशपद्धति—रूढ़िसे इसमें कितने ही मतभेद हैं, इसलिये देश-पद्धति—रूढ़िसे इसका पालन करना चाहिये।

ससुराल जाते समय-पुत्रो को माताका उपदेश

सन्मति पद सन्मति करण, बन्दूं शीस नमाय।
जा प्रसाद शिक्षा लिखूं, पुत्रिनको सुखदाय ॥१॥

(१) *विवाह होनेपर प्रथम बार जब पुत्रीको अपने पिताके* घरसे ससुरालमें जानेका समय आया—विदाका समय हुआ—तब माताने पुत्रीको सम्पूर्ण वस्त्राभरण पहिराकार मस्तकमें रोली का तिलक लगाया और नवीन फल श्रीफलादि झोलीमें देकर कहा—बेटी ! अपने हाथ-पैर आदिका सम्पूर्ण आभूषण सम्हालो और सुखपूर्वक जाओ।

(२) माताके ये बचन सुनकर पुत्री लज्जा सहित नीचा सिर करके बोली—'हे माता ! मैं जाती हूँ, मेरी याद मत भूलना।' इतना ही कहने पाई थी कि उसका गला भर आया और आंखोंसे टप २ आंसू टपकने लगे। वह इससे आगे और कुछ भी नहीं कह सकी, किन्तु मन्द स्वरसे माता-पितादि स्वजनोंके प्रेमसे

अधीर होकर रोने लगी। ठीक है, जिस माता-पितादिकी गोदमें लालन-पालन पाकर वह इतनी बड़ी हुई है, उनसे एकाएक प्रेम छूट जाना सहज नहीं है। माता जिसने नव मास तक गर्भमें धारण करके जन्म दिया और तबसे अंचलका दुग्धपान कराकर अबतक अनेक प्रकारसे लालन-पालन किया है उसका व पितादि जनोंका भी प्रेम पुत्रीसे क्या एकदम छूट सकता है? नहीं-नहीं, परन्तु यह अनादिकी प्रथा है कि पुत्रसे अपना और पुत्रीसे पराया वंश चलता है। अर्थात् पुत्री पर घरके लिये ही हुई है, इसमें हर्ष विषाद ही क्या करना चाहिए? यह विचारकर माता पुत्रीके मस्तकपर हाथ रखकर प्रमाश्रु टपकाती और अपने अंचलके छोरसे पुत्रीके आंसू पोंछती हुई मधुर गद्‌गद् स्वरसे बोली—

(३-४) 'मेरी प्यारी बेटी! तू अपने मनमें किंचित् भी खेद मत कर और हर्षित होकर जा। अब बिलम्ब मत कर, मैं तुझे जल्दीही रक्षाबन्धनके पवित्र पर्वपर बुलालूंगी। उठ! आंसू पोंछ, मनमें कुछ भी चिन्ता मत कर। तेरी सासू जी बहुत सरल स्वभाववाली दयालु और साध्वी स्त्री हैं। संसारमें उनके समान बिरली ही स्त्रियाँ होंगी। तुझे तेरे सौभाग्यसे ही ऐसी सासू मिली है।' ऐसा कहती हुई माता मानों हर्षसे फूली नहीं समाती थी। बोली बेटी—विजयालक्ष्मी! तू भाग्यवती है। जा और जिस प्रकार तेरी भक्ति तथा प्रेम मेरे ऊपर है उसी प्रकार अपनी सासूमें भक्ति तथा प्रेम रखना और उन्हींको माता समझकर सदा विनयपूर्वक उनकी सेवा शुश्रूषा व आज्ञा-पालन करते रहना।

(५) बेटी ! मैंने तुझे जन्म दिया है और तबसे अबतक लालन-पालन किया है, इसलिये अबतक मैं तेरी माता थी, परन्तु अबसे जन्मपयन्त तेरी माता तो सासूजी ही हैं । आजसे तेरे लिये जो-कुछ भी सुख आदि होनहार है, उस सबका भार तेरी सासूजी पर ही है । वे ही अब तेरी सच्ची माता हैं, ऐसा समझ कर अब तू हम समस्तजनोंका वियोग जनित दु ख भूलजा ।

(६) बेटी ! यद्यपि आजकल लोकमे प्राय बुरी कहावत चल पडी है कि सासुए बहुओको सतानेवाली, दुर्बुद्धिनी और कठिन बचन कहनेवाली कर्कशा होती हैं, परन्तु यह बात सर्वथा कल्पित (मिथ्या) है क्योंकि जो पुरुष-स्त्री अपने पुत्रोंका वशकी रक्षा व सुखवृद्धिके अर्थ विवाह करता है भला वह अपनी पुत्र बधुओंको कैसे दु खी करेगा ? कदापि नही । इसीलिये तू भी अपने अन्त करणको ऐसी २ घृणित बातोंसे मलिन मत होने देना ।

(७) बेटी । स्मरण रख कि मीठे नम्र और विनययुक्त बचन बोलनेसे प्रत्युत्तर भी मीठे नम्र वचनोंमे ही मिलता है और कड़वे-कठोर वचनोंका उत्तर कड़ुवे व कठोर वचनोंमे । अर्थात् अपनेको अपनी प्रतिध्वनि (झाई =Echo) सुनाई पडती है । इसलिये जो तू वहा (ससुरालमे) जाकर विनय, विवेक हित, मित और प्रियवादितासे वर्ताव करेगी तो तेरी सपूर्ण मनोकामनाएँ पूर्ण होंगी और जो दूसरोंका दिल दुखायेगी तो उसके बदले तुझे भी तिरस्कार सहना पडेगा ।

(८) बेटी ! ससुरालमें जाकर अपने कुलकी लाज—मर्यादा से रहना और जो तेरे कर्त्तव्य हों, उन्हें भले प्रकार पूरा करना। सबसे हिलमिलकर रहना। 'यह देदो, वह लादो, अमुक वस्तु आज ही लूंगी, वा अभी लूंगी, शीघ्र मगा दो' इत्यादि कभी भी किसी प्रकारका कुछ हठ मत करना, न कभी अपने घरकी कोई बात बाहर किसीसे कहना। कहा भी है—

'तुलसी पर घर जाय कर, दुख न कहिये रोय।
नाहक भरम गमायके दुख न बाटे कोय'॥

क्योंकि इससे अपने घरका भेद (भरम) खुल जाता है और घरमे कलह बढता है जिससे अपना चित्त सदैव व्याकुल रहता है और लोगोंमे हसी होती है। भोजनके समय जो कुछ भक्ष्य वस्तु तेरी थालीमे परोसी जाय, उसे ही तू रुचि पूर्वक ग्रहण करना (जीम लेना) कभी कोई वस्तु किसीसे छिपाकर न खाना, क्योंकि ऐसा करनेमे आचार व धर्म बिगडता है और घरमें परिपूर्णता नहीं होती।

(६) बेटी ! सवेरे सबसे पहले उठना और रात्रिको सबके पीछे सोया करना। घरके बर्तन सदैव माजकर साफ चमकते हुए सुखाकर रखना, नित्य चून्हेकी राख निकालकर चूल्हा और चौका मिट्टीसे पोतना कि जूठन न रहने पावे और न जीवजतु उत्पन्न होपावे। गृहको झाड बुहार कर सदा स्वच्छ रखना, घरके किसी काममें कभी आलस्य नहीं करना और न कभी गृहका काम पूरा हुए बिना कहीं बाहर जाना। निष्प्रयोजन घरों घर डोलना

अच्छा नहीं होता है, इसलिए जब घरके धन्देसे अवकाश मिले तो धर्म व नीतिके उत्तम ग्रंथ और प्राचीन सती महिलओं, जैसे सीता, द्रौपदी, अंजना, राजुल, मैना व मनोरमा आदिके चरित्रों-को पढ़नेमें समय बिताना जिससे समय निकल जावे, मनोरंजन हो आत्माके भाव भी पवित्र होवें। क्रियाकोष, रत्नकरण्डश्रावका-चार, द्रव्यसंग्रह, अर्थप्रकाशिका और मोक्षमार्गप्रकाशक, आदिका स्वाध्याय करते रहना तथा नित्य प्रति सोते जागते समय पंचपर-मेष्ठीका स्मरण किया करना, जिससे सर्व कार्य निर्विघ्नता पूर्वक पूण होवें और सदैव चित्त भी प्रसन्न रहे।

(१०) बेटी! घरके सब काम हर्षपूर्वक किया करना क्योंकि कहा है:—

"अपने कारजके लिये, खरचत हैं सब दाम।
जगत कहावत है भली, काम भला नहीं चाम॥"

ससुरालके बच्चोंको यदि वे सोना चाहें तो भले प्रकार उढ़ौना बिछौना करके सुलाना। उनको सुलाते, भूलना भुलाते अथवा थपथपाते समय अच्छे २ बालकोपयोगी गीत गाया करना। यदि वे जागते हों, तो उन्हें बहलानेके लिये घरके खेल खिलौने व अन्य वस्तुएं जिनसे, कि बच्चोंको उत्तम शिक्षा मिल सके दिखाना, परन्तु कभी भी बच्चोंको भूत प्रेतादिका झूठा भय दिखाकर मत डराना, क्योंकि इससे बच्चे डरपोक और कायर बन जाते हैं।

(११—१२) "यह बच्चा हमेशा रोता ही रहता है, यह

बड़ा दंगा करनेवाला लड़ाकू है, इसकी नाकमेंसे लींट बहती है, आंखोंमें कीचड़ भरा है, बार २ चौंक उठाता है, इसके माथेमें खाड़ा है, यह गोद में नहीं आता, यह ज़ोरसे चिल्लाता है।" इत्यादि कठिन और घृणित शब्द किसी बच्चेको न कहना। न कभी किसी बच्चेको व्यर्थ धमकाना, न मारना, न उस पर चिल्लाना, किन्तु मीठे मीठे शब्दोंमें समझाकर उसका हठ छुड़ाना। क्योंकि प्रेमसे बच्चे तो क्या देव, मनुष्य, पशु व पक्षी-आदि सभी वश हो जाते हैं। कहा भी है:—

मिष्ट वचन हैं औषधी, कटुक वचन हैं तीर।
श्रवण द्वार हो संचरे, साले सकल शरीर॥

(१३) इसलिये निम्न प्रकार से कार्य करना। सुन! अपना स्थान, भोजन, वस्त्र आभूषण, स्वशरीर और बच्चे ये मैले रहनेसे लोकमें निन्दा होती है और अनेक प्रकारके रोगभी आकर घेर लेते हैं, क्योंकि स्वच्छता आरोग्यताकी जननी है। भोजनके पदार्थ बहुत सावधानीसे शोध बीनकर तैयार करना, क्योंकि भोजनके पदार्थोंमें बहुतसे कीड़ी मकोड़ी आदि जीव चढ़ जाते हैं अथवा लट (सुन्डी, इल्ली) आदि जीव उत्पन्न होजाते हैं, सो बिना सोधे भोजन बनानेमें एक तो इन बिचारे अवाक् जीवोंकी हिंसा होती है, दूसरे इन जीवोंका कलेवर तथा विषैले मलादिक पदार्थ पेटमें पहुँचकर रोगादि पैदा करके बहुत हानि पहुंचाते हैं और कभी तो इनसे प्राणों तकका भी घात होजाता है।

(१४) बेटी! प्रातःकाल उठकर प्रथम ही घरको झाड़ बुहार

तथा लीप पोतकर सामनेके मार्गमें स्वस्तिक (साथिया) निकालना, क्योंकि यह द्विजों (ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य आदि उत्तम वर्णों) के घरोंका चिह्न है। यह चिह्न ऐसे स्थानमें बनाया जाय जिससे सर्वसाधारण लोगोंके दृष्टिगोचर होता रहे और जिसे देखकर मुनि आदि सत्पात्र भिक्षाके लिये भी आसकें।

(१५) गृह व चैत्यालयकी सम्हाल भले प्रकार रखना और नित्य तीनों समय अवकाशानुसार श्री अर्हंतदेवकी मूर्तिका दर्शन, स्तुति, पूजन व वंदन आदि भक्ति करना और स्वप्नमें भी कभी अन्य रागी द्वेषी कुदेवोंका आराधन नहीं करना, न अन्यसे कराना, न करने वालोंकी सराहना करना। क्योंकि इन (कुदेवों) के आराधनसे लौकिक कार्यकी तो सिद्धि होती ही नहीं और फलस्वरूप परलोकमें जन्ममरणादि अनेक दुःख भोगने पड़ते हैं।

(१६) बेटी। अपने माथेके बाल बिखरे मत रखना किन्तु इस प्रकार गूंथकर बाँधना कि जिससे वे टूटकर इधर उधर भोजनादि पदार्थोंमें न पड़ें और तेरी गणना उच्च कुलांगनाओंमें की जावे। अपने पतिमें श्रद्धा रखकर नित्य प्रातःकाल स्नानानतर माथेमें कुंकुमकी टिपकी करना, यह सौभाग्यवती स्त्रियोंका चिह्न है। प्रायः स्त्रियाँ ललाटमें केवल भोड़ल व अन्यवस्तुओंकी बनी हुई टिकली रालसे चिपका लेती हैं सो यह केवल उनका प्रमाद है। टीकी कुङ्कुमकी ही मंगलिक मानी गई है। यदि गृह में फुलबाड़ी हो और वह फूले, तो साँझ समय फूले हुवे फूल बीनकर उनका हार आदि भी गूँथ लिया करे।

(१७) बेटी ! तू सब वस्त्राभूषण उच्च कुलांगनाओंके अनुसार ही पहिनना, जिससे दोनों कुलकी लाज रहे। आजकल प्रायः नवीन सभ्यतावाली उद्दण्ड स्त्रियाँ नकली (गिलट व मुलम्मे-वाला) जेवर, अशुद्ध रबर, कचकड़ा व लाख आदिकी चूड़ियाँ छल्ला और महीन विदेशी या रेशमके अपवित्र (पतले झिरझिरे) कपड़े पहिन कर रहतीं व बाहर आती जाती हैं, जिससे उनका सारा शरीर दिख पड़ता है, जो कि उनके पवित्र शीलरूपी भूषणके लिये बड़ा भारी दूषण है। सर्वोत्तम और शुद्ध वस्त्र खादीका ही होता है। उसे इच्छानुसार स्वदेशी शुद्ध रङ्गोंमें रङ्गा जासकता है। यह याद रहे कि विदेशी वस्त्रोंके रँगनेमें खून-चर्बीका उपयोग होता है, इसलिए विदेशी कपड़ोंसे मोह कभी मत करना।

(१८) बेटी ! तू निम्न प्रकार 'शील धर्म और नैतिक शिक्षा' को अपने मन-मन्दिर में धारण कर और उसीके अनुकूल अपनी प्रवृत्ति करना।

पुत्री ! तू बहुत आभूषणोंसे अलंकृत होनेकी लालसा या प्रवृत्ति मत करना। सदा सद्गुणरूपी आभूषणोंसे अपनेको विभूषित रखनेकी चेष्टा करते रहना।

'शीलमलङ्कारो महिलानां न देहखेदावहो बहिः'

अर्थात्—नीतिकार आचार्योंने स्त्रियोंका मुख्य आभूषण शीलधर्म बताया है, बाह्य कनक-कुण्डलादि आभूषण केवल शरीर को खेद उत्पन्न करनेवाले हैं।

महात्मा भर्तृहरिने कहा है—

श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन।
दानेन पाणिर्न तु कङ्कणेन॥
विभाति कायः करुणाकुलानां।
परोपकारेण न तु चन्दनेन॥१॥

(नीतिशतकसे)

अर्थात्—कानोंकी शोभा शास्त्र-श्रवणसे होती है, कुण्डलोंके धारणसे नहीं। कर-कमल पात्र-दानसे सुशोभित होते हैं, कङ्कण पहिननेसे नहीं, एवं दयालु पुरुषोंका शरीर परोपकार—दूसरोंकी भलाई करनेसे शोभायमान होता है, चन्दनके लेपसे नहीं।

पतिसेवा करना स्त्रियोंका मुख्य धर्म है। इसलिये सदैव उमंगके साथ पतिको सेवा और आज्ञा पालन करना। कभी भी ऐसी कोई बात न करना कि जिससे पतिको कष्ट पहुँचे, व उनका चित्त दुखे। तू हर प्रकारसे पतिको प्रसन्न रखनेकी चेष्टा करते रहना क्योंकि संसारमें यही तेरा सर्वस्व है। स्वप्नमें भी पति सिवाय अन्य पुरुषोंमें हास्यादि भण्ड वचनरूप व्यवहार न रखना, न किसीकी ओर कुदृष्टि डालना, न कभी बुरे गीत गाना, जो शीलधर्मके घातक हैं। तथा अपनेसे बड़े पुरुषको पिता, समवयस्कोंको भाई और लघुवयस्क युवा बालकादिकको पुत्रवत् समझना। यही तेरा सच्चा आभूषण है।

सोमदेवाचार्यने कहा है कि—

विशीलः कामवृत्तो वा गुणैर्वा परिवर्जितः।
उपचर्यः स्त्रिया साध्व्या सततं देववत् पतिः॥१॥

तथा च वानप्रस्थभावेऽपि सीता रामस्य सधर्मचारिणी आसीत्।
द्रौपदी धनञ्जयस्य, सुदक्षिणा दिलीपस्येति। (यशस्तिलकसे)

अर्थात्—चाहे पति दुराचारी, कामी वा निर्गुण—मूर्ख हो तथापि साध्वी—पतिव्रता—स्त्रीको उसकी देवताके समान निरन्तर सेवा-शुश्रूषा करनी चाहिये। उदाहरणमें—महात्मा रामचन्द्र वानप्रस्थके वेषमें अपने पिता राजा दशरथकी आज्ञा-पालनके कारण वनवास जा रहे थे, उस समय उनकी पत्नी सती सीता उनके साथ थी।

पाण्डवोंमें से अर्जुन जुएमें राज्यपाट हार जानेपर वनवास को जारहा था, उस समय उसकी पत्नी सती द्रौपदी उसके साथ थी। राजा दिलीप नन्दिनी कामधेनुकी सेवाके लिये वनमें गया था तब उसकी पत्नी सुदक्षिणा उसके साथ थी।

अतः पतिके सुख-दुःखमें साथ देकर अन्य पुरुषोंसे पिता, भाई और पुत्रवत् बर्ताव रखना यही शील-धर्म है। इसे सदा हृदय में धारण करो।

बेटी। शकुन्तलाके ससुराल जाते समय उसके धर्म-पिता महात्मा कण्वने जो उसे शीलधर्म और नैतिक शिक्षा दी थी उसके प्रकाशसे अपने मन-मन्दिरको प्रदीप्त रखना।

उसे महाकवि कालिदासने शकुन्तला नाटकमें कहा है कि—

शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने।
भर्तुर्विप्रकृताऽपि रोषणतया मास्म प्रतीपं गमः॥
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परजने भोगेष्वनुत्सेकिनी।

यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः ॥१॥

अर्थ—हे पुत्री ! सास और ससुर आदि पूज्य बड़ोंकी सेवा-शुश्रूषा करना। सौतोंके साथ अपनी सहेलियोंका-सा प्रेमका बर्ताव रखना। × यदि तुम्हारा पति तुमसे नाराज भी हो; तो तुम नाराज होकर उसकी आज्ञाके प्रतिकूल—विरुद्ध न जाना। सदा नौकर-चाकरोंसे प्रेम—दयाका बर्ताव रखना और भोगोंको पाकर अभिमान मत करना। उक्त प्रकारके कर्त्तव्योंका पालन करनेवालीं युवतियाँ कुल-वधू पदको प्राप्त होती हैं, परन्तु इसके विरुद्ध प्रवृत्ति करनेवाली युवतियाँ कुल-वधुएँ नहीं हैं; किन्तु वे कुलकी भयानक बीमारियाँ हैं।

प्यारी बेटी ! यदि तुम उक्त नैतिक शिक्षाके अनुकूल प्रवृत्ति करोगी तो तुम्हारा दाम्पत्य-जीवन सुखी रहेगा, अन्यथा नहीं।

(६) शाक, भाजी, चटनी, अचार, मुरब्बा तथा अनेक भाँतिका पकवान व मिष्टान्न आदि समयानुसार जो अपने घरके लोगोंको रुचिकर, प्रकृतिके अनुकूल तथा धर्म व कुलाचारके अविरुद्ध हों, वे मर्यादापूर्वक तैयार करना, क्योंकि मर्यादाके बाहिर इन वस्तुओंमें त्रस जीवोंकी उत्पत्ति हो जाती है, जिससे वे अभक्ष्य होजाते हैं। पदार्थोंकी मर्यादा इस प्रकार है कि आटा, हल्दी व मिर्च-आदि पिसा हुआ मसाला शीत ऋतुमें ७ दिन, उष्ण ऋतुमें ५ दिन और वर्षाऋतुमें ३ दिन रहता है। अचार, मुरब्बा, मिठाई, पूरी, पकवान जिसमें जलांश कम हो २४

× प्राचीनकालमें ठेस पहुंचानेवाली बहु-विवाहकी प्रथा थी।

पराटे, बड़ी, पापड़ व सेमई आदि जिस दिन बनावे उसी दिन, और यदि घी, तेल आदिमें सेक रक्खी होवें, तो दूसरे दिन तक, रोटी सबेरेकी शाम तक, दाल-भात और शाकादि दोपहर मात्र, दुरन्त छाना हुआ पानी दो घड़ी, लवंगादिसे प्रासुक किया हुआ २ पहर और गरम किया हुआ पानी ८ पहर काम आ सकता है, पश्चात् मर्यादा बाहर समझना।

पानी सदैव गाढ़े और स्वच्छ सफेद खादीके दोहरे छन्नेसे छानकर जीवानी उसी जलाशयमें भेजना।

रसोई-घर; परंडा, चक्की, ऊखली, भोजनशाला और अनाज आदि शोधने-बीनने, छानने व मसाला आदि पीसनेकी जगह शयनागार व बैठकखानेमें ऊपर चँदेवा रखना। तात्पर्य जैसी धार्मिक गृह-किया तूने यहां देखी व सीखी है, उसी प्रकार यदि वहां कुछ त्रुटि दीखे तो चतुराईसे ठीक करना और रसोई बहुत चतुराईसे पाकशास्त्रकी विधि प्रमाण करना, ऋतु व प्रकृतिके अनुसार उसमें फेरफार करते रहना। कच्ची और खारी वस्तु बेस्वाद होनेके सिवाय रोगोत्पादक भी होती है। यदि घरमें रसोईदारिन हो तो तू उसके साथ भोजनकी सम्हाल चौकसी रखना, क्योंकि समस्त कुटुम्बका रक्षण व आरोग्यता भोजनपर ही निर्भर है। दोपहरको अवकाश मिलनेपर घरके फटे-पुराने वस्त्रोंको सुधारना अथवा बच्चोंकी झगुलियां, टोपी, कांचली (अंगिया चोली); ओढ़नी, घाघरा आदि सुधारना व नवीन सीना। बेल-बूटादि काढ़ना, गुलबन्द, तोरण, वेष्टन आदि गूंथना, तथा रहटियोंसे

सूत कातना, क्योंकि स्त्रियोंको नियमपूर्वक निकम्मा रहना ठीक नहीं है। निकम्मा रहनेसे मन इधर-उधर व्यर्थ भटकने लगता है।

(२०) घरके छोटे-छोटे बच्चोंको अवकाश पाकर अपने पास बिठलाना और छोटी २ चित्त प्रसन्न करनेवाली कथाएं तथा प्राचीन धीर पुरुषों और सती स्त्रियोंके आदर्श-चरित्र सुनाया करना। परन्तु भय और शंका उत्पन्न करनेवाली भूत - प्रेतादिकी कथाएँ तथा दुष्ट, नीच पुरुषों द्वारा संगृहीत विषयोत्पादक कुकथाएँ कभी नहीं सुनाना, न आप सुनना, क्योंकि इन विकथाओंसे बालकोंके तथा अपने चित्तपर बुरा प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक कथाके अन्तमें उसका उत्तम तात्पर्य निकालकर अवश्य समझना। जो कथा सुननेसे किसीको बुरी लगे ऐसी कथा व पहेली तथा कहावत नहीं कहना, और न कभी कुतर्क रूपसे किसी पर कुछ कटाक्ष करके बोलना।

(२१) विवाह-कार्य लोकमें आजकल एक वजनदार बेड़ी समझी जाने लगी है। क्योंकि कुपढ़ अज्ञान स्त्रियाँ ससुरालमें जाकर ससुरालवालोंको अपने दुष्ट स्वभावका परिचय देकर नाना भाँतिके नाच नचातीं और निरंतर कलह करके घरमें फूटका अंकुरारोपण करतीं तथा एक ही घरमें कई चूल्हे कर डालती हैं। गृहस्थोंके घरोंमें कलह व फूटका होना ही उनके नाशका कारण हो जाता है। इसीसे अनेक घराने नष्ट होते देखे गये हैं। इसलिये तू ऐसा बर्ताव करना कि जिससे लोकमें तेरी प्रशंसा हो और स्त्री-जातिसे यह कलंकका टीका उठ जावे व विवाहको मनुष्य

सांसारिक सुखका साधन समझने लगें। यथार्थमें देखा जाय तो जिस घरमें सती—पतिव्रता (सदाचारिणी) स्त्री रहती है, वहां ही लक्ष्मीका वास होता है और वह घर स्वर्गके तुल्य होता है, इसीसे लोग स्त्रीको ही लक्ष्मी कहते हैं और वास्तवमें है भी ऐसा। कुलीन, विदुषी व सदाचारिणी चतुर स्त्री ही लक्ष्मी है न कि कोई जड़ वस्तु।

(२२) लग्न (विवाह) के समय जो वचन तूने अपने पतिको दिये हैं, उनको तू सदैव स्मरण रखना, जैसे १ मम गुरोस्तथा कुटुम्बिजनानां यथायोग्यं विनयशुश्रूषा करणीया (मेरे गुरु तथा कुटुम्बीजनोंकी यथायोग्य विनय-शुश्रूषा करना), २ ममाज्ञा न लोपनीया (मेरी आज्ञा उलंघन नहीं करना), ३ कठोरवाक्यं न वक्तव्यम् (कटु वचन न बोलना), ४ मम सत्पात्रादिजनानां गृहागते सति आहारादिदाने कलुषितमनो न कार्यं (मेरे हितू, सम्बन्धी, मित्र, बांधवादि सत्पात्र तथा संयमी साधु व श्रावक व अन्य साधर्मी आदि जनोंके मेरे घर आनेपर आहार आदि दान देनेमें कलुषित मन नहीं करना), ५ अभिभावकस्य आज्ञा बिना परगृहे न गन्तव्यम् (अपने गुरुजनों तथा संरक्षकोंकी आज्ञा बिना किसी दूसरेके घर नहीं जाना)। ६ बहुजनसंकीर्णस्थाने कुत्सितधर्मे तथा व्यसनासक्तजनानां गृहे न गन्तव्यम् (बहुत आदमियोंकी भीड़ जहां हो, ऐसे संकुचित स्थानमें, खोटे धर्मवालोंके स्थानमें तथा द्यूतादि सप्त व्यसनोंमें आसक्त पुरुषोंके स्थानमें नहीं जाना),

व (७) मम गुप्तवार्ता न रक्षणीया तथा मम गुप्तवार्ता अन्यास्मे न कथनीया (मुझसे कोई बात न छिपाना तथा मेरी व मेरे घरकी गुप्तवार्ता किसीसे न कहना)। ये सात वचन देने पर ही तुझे तेरे पतिने वामभागमें ग्रहण किया था इसः इसका सदैव पालन करते रहना।

आवश्यकीय कर्त्तव्यः—

बेटी! लग्नका समय (मुहूर्त) न निकल जाय, इसी चड़बड़ से लोग ज्यों त्यों कर विवाहकी रीति व रस्म पूरी करके गठजोड़ादि सप्तपदी कर देते हैं और गृहस्थाचार्यके द्वारा पढ़े हुए पवित्र मन्त्र व पतिको पत्नीकी ओरसे वचन और पत्नीको पतिकी ओरकी शिक्षा व वचनोंको समझने व समझानेकी फिकर नहीं रखते। इसलिये मैं उक्त सप्त वाक्योंके सिवाय और भी कुछ उपयोगी शिक्षा खुलासा रीतिपर कहती हूँ, क्योंकि यह तेरी भलाईका कारण है। सो तू ध्यानसे सुन—

पति कहता है—

(क) देवी! तू मुझको अति आदरसे वरती है। तू मेरे साथ वृद्ध होवेगी। तुझे सौभाग्य देनेके लिये मैं तेरा कर-ग्रहण करता हूँ। दैव (कर्म) ने मेरे गृह तथा वंशकी रक्षाके लिये ही तुझे मेरे आधीन किया है।

(ख) हे देवी! अबतक तू अपने माता-पितादिको ही प्रेम की दृष्टिसे देखती थी, परन्तु आजसे तू मेरे माता-पितादि कुटु-

न्धी जनोंसे प्रेम जोड़; क्योंकि अब तुझे उन्हींके निकट अधिक-तर रहना है।

(ग) हे स्त्री! आजसे मेरा सम्बन्ध तुझसे हुआ। जिस प्रकार चन्द्रमाका चांदनी, सूर्यका रोहिणी तथा दीपकका प्रकाशसे सम्बन्ध है, उसी प्रकार तू भी आजसे मेरी अर्धांगिनी हुई। इस-लिये हम-तुम दोनों अपने अपने वचनोंका निर्वाह करते हुए, गृहस्थ-धर्मका पालन करके उत्तम सन्तान प्राप्त करें।

(घ) हे देवी! हम दोनोंको परस्पर निष्कपट प्रेम रखना चाहिए और परस्पर हितकारी तथा, सम्मतिपूर्वक वचन कहना चाहिये। दोनोंको हिलमिलकर रहना चाहिए। क्योंकि हम दोनों को जीवनपर्यन्त साथ रहना है और इसीमें हम दोनोंका हित व सुख है।

(ङ) देवी! आज तू हमारे कुलमें सम्मलित हुई; इसलिये तू मेरे बाम भागमें आ और अपने मनको अपनी प्रतिज्ञाओंपर दृढ़ कर।

(२४) बेटी! तत्पश्चात् जब सप्तपदी (सात भांवर) होती है, तब वर (पति) प्रत्येक पदो पर पत्नीसे कहता है, उसका भी आशय तू सुन।

पति कहता है—

(क) हे स्त्री! आज तू मेरे साथ एक पद (प्रदक्षिणा) चली, जिससे तू मेरी सहायक समझी जाती है, इसलिये तू मेरे धर्म, अर्थ, कामादि सम्पूर्ण कार्योंमें सहायता करना और शुद्ध

भोजनादिसे मेरी पूर्ति करते रहना। देख, शुद्ध भोजन बनानेसे एक यह भी लाभ होगा कि यदि हमारे पुण्योदयसे कोई मुनि, आर्यिका तथा संयमी (व्रती) श्रावकादि अतिथियोंका समागम हो जाया करेगा, तो उनको निरंतराय अनुदिष्ट भोजन-दान दे सकेंगे और कदाचित् न भी मिले, तौ भी शुद्ध भोजन बननेसे द्वाराप्रेक्षण करने और अतिथि लाभकी भावना रखनेसे हमको पुण्य-लाभ होगा। क्योंकि सरस व नीरस किन्तु शुद्ध प्रासुक तैयार भोजन ही अतिथियोंके योग्य होता है।

(ख) हे स्त्री! अब तू मेरे साथ दूसरा पद चली। इससे स्नेहकी वृद्धि हुई। इसी प्रकार अपनी प्रीति द्वितीयाके चन्द्रसमान बढ़ता जावे और तुमसे मेरा बल भी बढ़ता रहे।

(ग) हे स्त्री! इस तीसरे पदसे तू मेरी सुमति और सम्पत्ति की वृद्धि करनेवाली हो।

(घ) हे स्त्री! तू इस चौथे पदसे मेरे मनवांछित सुखकी वृद्धि करनेवाली हो।

(ङ) हे स्त्री! तू इस पांचवें पदसे मुझे सन्ततिकी वृद्धि करनेवाली हो।

(च) हे स्त्री! तू छठवें पदसे मुझे ऋतुओंके समान क्रीड़ा-रूप और सन्मार्गमें स्थिर रखनेवाली हो।

(छ) हे स्त्री! यह सातवां पद मेरे हृदयमें तेरी ओरसे दृढ़ प्रीतिका देनेवाला हो और हम दोनों गृहस्थाश्रममें सलाह (ऐक्य) से रहें।

(८५) बेटी! इस प्रकार सप्तपदीका रहस्य कहकर पति और भी कुछ विशेष सूचना करता है, सो सुन—

पति कहता है—

(क) हे स्त्री! तू सदैव मेरे सद्‌विचारोंमें सम्मिलित रहना। समस्त जीवमात्रको समान रीतिसे देखना। ऐसी कोई बात जिससे मुझे व तुझे दुःख उत्पन्न होवे, नहीं करना और न बिना मेरी आज्ञाके कोई भी कार्य अपने मनोनुकूल करना, इसमें तेरा व हमारा कल्याण है। यथोक्तं—

मदीयचित्तानुगतं च चित्तं, सदा ममाज्ञा परिपालनं च।
पतिव्रताधर्मपरायणा त्वं कुर्यात्, सदा सर्वमिदं प्रयत्नम्॥

अर्थात्—सदैव मेरी इच्छानुसार चलने और मेरी आज्ञाओं को पालन करनेका ध्यान रखना और जिस प्रकारसे पतिव्रत धर्म पालन हो ऐसा प्रयत्न करते रहना।

(ख) हे स्त्री! मेरे द्वारा रक्षित जो पशु-पक्षी तथा आश्रित जन हों, उनका भले प्रकार पालन करना, उन्हें यथायोग्य संतुष्ट रखना, तू भी संतोषवृत्तिसे रहना और कभी भी अपने चित्तको चंचल नहीं होने देना।

(ग) अपना सुख वा दुःख जो कुछ भी हो एकान्तमें मुझसे ही कहना और घरकी बात बाहर कभी किसी अन्य स्त्री-पुरुषोंसे नहीं कहना।

(घ) सदैव सास-ससुर, देवर-जेठ, देवरानी-जिठानी, ननद

व बालबच्चोंसे बिना किसी प्रकारके द्वेषभावसे, बर्ताव करना, जिससे तेरी कीर्ति व यश हो, और घरमें फूट न पड़ने पावे।

(क) हे स्त्री! तू मेरे कुलका भूषण बनकर मेरे तन, धन तथा जनकी पूरी-पूरी सम्हाल रखना। ये शिक्षाएं (जो आज मैं तुझे दे रहा हूँ) तू कभी मत भूलना। इसीमें तेरा कल्याण व श्रेय है और इसीसे तू सुखको व यशको प्राप्त होगी।

(२६) बेटी! इस प्रकार लग्न समय तुझे तेरे पति-द्वारा शिक्षाएं प्राप्त हुई हैं उनको तू भले प्रकार पालन करना, जिससे तुझे सुख मिले और दोनों कुल वृद्धि तथा यशको प्राप्त होकर संसारमें आदर्शरूप हों।

(२७) बेटी! तू बड़ोंकी आज्ञा-पालन करना और छोटों पर प्रेम रखना। कहा है—

'गुरुजनकी भक्ति सदा, अरु छोटोंपर प्रेम।
सम वय लख आदर उचित, करो निबाहो नेम॥'

किसीसे ईर्षा नहीं करना, नौकरोंपर माताके समान क्षमा और प्रम रखना, अपने पिता अथवा ससुरकी सम्पत्तिका मान नहीं करना और न उनकी गरीबीमें कभी घबराना। उत्तम पुरुष सम्पत्ति-विपत्ति में सदा एक ही भांति समुद्रके समान गम्भीर रहते हैं, वे कभी मर्यादा नहीं छोड़ते। प्यारी बेटी! एक बात और स्मरण रखने लायक है कि—

यदि कदाचित् कोई स्त्री, चाहे वह तुझसे छोटी हो या बड़ी परन्तु यदि वह अशुभोदयसे विधवा होगई हो और तेरे घरकी ही

हो या वहां रहती हो, तो उससे बहुत प्रेम व आदर भावसे बर्ताव करना, उसके खान-पानादिमें किसी प्रकारकी त्रुटि न करना, न कभी उसे घृणाकी दृष्टिसे देखना, क्योंकि वह घृणाकी पात्र नहीं किन्तु करुणाकी पात्र है।

देखो उससे घृणा करने व तिरस्कारका व्यवहार करने या खानपान आदिमें त्रुटि करने या धर्मसाधनमें बाधक होनेसे कभी २ बहुत बुरा परिणाम आजाता है। वे असह्य यातनाएं या तिरस्कारके कारण या अन्य दुष्टा स्त्री पुरुषोंके द्वारा उत्तेजना मिलनेसे अपना सन्मार्ग छोड़ बैठती हैं और केवल अपने दोनों कुलोंको ही नहीं, किन्तु धर्म व समाजको भी कलंकित कर बैठती हैं।

उनको प्रलोभन देनेवाले दुष्ट-जन पहिले तो मीठी २ बातों-द्वारा प्रेम दर्शाते हैं और पश्चात् जब वे किसी प्रकार उनके जालमें फंस जाती हैं, तब पीछे उनका प्रथम धर्म और पश्चात् धन हरण करके निराधार अवस्थामें छोड़ देते हैं, जिससे वे बेचारी वेश्यावृत्ति तक करके उदरपूर्ति नहीं कर सकीं और उभयलोकमें दुःख पाती हैं।

बेटी! ऐसे नीच प्रकृति नरनारियोंकी ससारमें कमी नहीं है, वे उजले रूप रंग स्वांगधारी बगुलावत् आचरण करते हैं। उनकी पहिचान जरा कठिनतासे होती है, इसलिए ऐसे कुस्थलोंसे नारी जातिकी रक्षा करना हम लोगोंका कर्तव्य है।

यदि हम लोगोंका व्यवहार उनके साथ प्रेम पूर्ण रहेगा, हम

उनको धर्मसाधनका सुयोग्य अवसर देंगी व घृणाकी दृष्टिसे न देखकर उनका यथोचित सत्कार करती रहेंगी, तो उन्हें किन्हीं दुष्ट नरनारियोंसे मिलनेका समय ही न आवेगा, वे अपने साथ प्रेमपूर्ण वर्ताव रक्खेंगी और अपने प्रत्येक कार्यमें सहानुभूति रक्खेंगी तथा अपना स ी साध्वी जीवन व्यतीत करके अपने उभयलोक तो सुधारेंगी ही किन्तु अपने पवित्र आचरणसे स्वधर्म व समाजका भी मुख उज्वल रक्खेंगी।

जीवको संसारमें कर्म ही सुख व दुःखका हेतु है। यह कोई नहं जानता कि कब किसको किस स्थलपर किस पुण्य पापकर्मका उदय आजायगा और उस समय उसकी क्या दशा होगी। तब इस समय जो दूसरोंको हंसता, घृणाकी दृष्टिसे देखता या अधिकार व अवसर पाकर उसे यातनाएँ देता है, पीछे उसकी भी उक्त दशा होती है। इसलिए बेटी! कभी किसीको तुच्छ न समझना चाहिये न निर्बल समझकर दुःख देना चाहिये, निर्बलोंकी हाय कभी २ बहुत अधिक दुःखदायक होती है। कहा है—

निर्बलको न सताइये, जाकी मोटी हाय।
मुए ढोरके चामसों, लोह भस्म होजाय॥

इसलिये सदैव उनसे योग्य व्यवहार करना तथा चतुराई से उनको उनके योग्य कर्तव्य बताते रहना। यदि वे पढ़ी हों तो उत्तमोत्तम नीति व धर्मकी पुस्तकें, सती साध्वी ऐतिहासिक का

वर्तमान महिलाओंके जीवनचरित्र पढ़नेको देना, प्रतोपवासोंकी उत्तेजना देना। यदि पढ़ी न हों और बाल या तरुण वयवाली हों तो बम्बई, इन्दौर व आरा आदिके श्राविकाश्रमोंमें भिजवानेकी चेष्टा करना। यदि अधिक वयकी हों या अन्यान्य कारणोंसे न जा सकें तो घर परही किसी सुयोग्य वृद्ध व सदाचारिणी महिला द्वारा या अपने ही घरके बच्चोंके द्वारा और चतुराईसे तू आप ही इन्हें पढ़ानेकी चेष्टा करना कि जिससे वे अपना समय जो गृहकार्योंसे बचता है व जिसमें यहां वहांकी संगति व गप्पाष्टकें होती हैं उसे शास्त्रावलोकनमें लगा सकें।

तथा अब तू अवकाश पाकर अपना स्वाध्याय करने बैठे तो उनको भी बुला लिया कर कि जिसे सुनकर वे संसारके विषयोंसे विरक्त भावको दृढ़ करती रहें।

और सुन। उनके सामने कोई ऐसी हंसी आदिके व्यवहार व चर्चाएं कभी न करना कि जिससे उनको सांसारिक विषयोंकी ओर उत्तेजना मिले। क्योंकि यदि इन बेचारी विधवाओंको योग्य शिक्षा और सत्संगति मिलती रहे तो ये कभी भी अपने कर्तव्य व आचरणसे पीछे न पड़ें।

इनको सादे, मोटे, सफेद या कत्थई आदि रंगके वस्त्र पहिनना, शुद्ध सादा हितमित भोजन खाना, उचित व्यवहार, घरमें सत्संग और धर्मशिक्षा मिले व विरुद्ध संगति व स्वतन्त्र आहार विहार और उत्तेजक वस्त्राभूषण (जो एक ब्रह्मचारिणी या ब्रह्मचारीको अनुपसेव्य हैं) बर्तावमें न आवें, तो ये भारतीय

नारियां अपने आदर्शको यावज्जीव कायम रख सकती हैं।

(२८) धर्म, नीति व सत्य हितोपदेशकी पुस्तकोंका स्वाध्याय तू अवश्य ही अवकाशानुसार करते रहना। परन्तु दंतकथाओं व शृंगाररससे भरी हुई पुस्तकोंको कभी हाथ भी नहीं लगाना और न नाटक आदि मनको बिगाड़नेवाले खेलोंको कभी देखने सुननेकी इच्छा रखना। परन्तु हां, ईश्वरभक्ति व नीति तथा धर्मके गीतोंको गाने तथा सुननेमे हानि नहीं है। इसलिये जब जब कभी जी चाहे तभी ऐसे भजन-गान सुरतालसे गाया व जोड़ा करना।

(२६) बेटी! अपने पतिके गृह, की आमदनी देखकर उसी प्रमाण खर्च करना। आयसे अधिक व्यय करनेसे पीछे बहुत कष्ट उठाना पड़ता है। कहा है—

अपनी पहुंच विचार कर, कर्तव्र करिये दौर।
उतने पांव पसारिये, जितनी लांबी सौर॥

बेटी। प्रायः पुरुषोंकी बारीक दृष्टि नहीं रहती है इसालये घरके कमोंमें मितव्ययता रखना और बचत करना यह स्त्रियोंका ही काम है और यह लाभदायक भी है।

(३०) गृहमें नौकर-चाकर प्रायः हल्की जातिके व कम बेतनवाले भी होते हैं। सो जब ये लोग बाजारसे कोई वस्तु लावें, तो तू कभी २ उन वस्तुओंकी तौल माप व तपास भी कर लिया करना ताकि ये लोग चोरीमें पकड़े जाने और लगाई आदिसे बचे रहें तथा और भी किसी प्रकारकी ऐसी कोई बुराई न सीखके

पावें। और देख! नौकरों से बार २ तकरार नहीं करना और न उन्हें अपने मुंह लगाना।

(३१) नौकर चाकरोंसे ऐसा वर्ताव रखना कि जिससे वे तुम्हें गम्भीर दंपती समझते रहें। उनके मनमें तुम्हारी ओरसे मान रहे देख! व्यय तथा आयका हिसाब भी बराबर रखते रहना इससे ही तू बचत कर सकेगी और अपव्ययसे बचेगी। तात्पर्य यह कि तू सब प्रकारसे गृहिणी शब्दको सार्थक करना।

(३२) बेटी! हरएक वस्तुका बाजार भाव प्रायः कम ज्यादा होता रहता है, इसलिये अवसर देखकर तू घरमें अनाज, गुड़ व घी आदि पदार्थ भी संग्रह कर रखा करना तथा योग्य समयमें उनका व्यय भी यथायोग्य करके अपनी उदारवृत्तिका परिचय देते रहना। परन्तु 'अकाले दिवाली' अर्थात् व्यर्थव्यय कभी नहीं करना।

(३३) बेटी! "कौड़ी २ खजाना और बूंद २ दहाना" भर जाता है, ऐसा करके गरीब भी पैसा इकट्ठा कर सकता है, इसलिये तू अपने घरकी आय व्ययका विचार करके समयानुसार कुछ कुछ बचत भी करते रहना।

(३४) बेटी! तू निरन्तर अपनी शक्ति प्रमाण आहार, औषधि, शास्त्र और अभय ये चार प्रकारके दान भी करते रहना। धर्मायतनों और सत्पात्रादिकोंमें भक्ति और दीन-हीन पुरुषोंमें करुणा भाव रखना, क्योंकि हाथका दिया ही साथ आता है। इसलिये इसमें संकोच न करना अर्थात् शक्ति नहीं छुपाना।

मनुष्यको अपनी आयका चतुर्थांश विपत्तिकाल व वृद्धावस्थाके लिये और चतुर्थांश लग्नादि व्यवहार कार्योंके लिये अवश्य ही संग्रह रखना चाहिये, और शेषांश भोजन वस्त्रादिमें व्यय करना चाहिये। परन्तु निम्न वाक्य याद रखना कि—

नीति न मीत गलित भये, संपति धरिए जोर।
खाये खर्चे (दानसे) जो बचे तो जोरिये करोर॥

अर्थात् भूखे मरकर या व्यवहार बिगाड़कर जोड़ना भी अच्छा नहीं होता।

(३५) बेटी! तेरे घर में जो सद्व्यहार व उत्तम रीति-नीति कुलपरंपरासे चली आती हो, उसे इकदम बिना समझे नहीं छोड़ देना, किंतु श्रद्धासहित पालन करना और जो व्रत-नियम स्त्रियोंके लिये आवश्यक हों उन्हें समझकर बराबर करते रहना, क्योंकि वर्तमान कालमें ईश्वर (परमात्मा) की प्राप्तिका साक्षात् द्वार तो नहीं है और न स्त्रियोंको उसी पर्यायसे मोक्ष होता है इसलिये परम्परा उसका द्वार केवल भक्तिमार्ग ही है।

(३६) बेटी! कभी भी शांति, दया, क्षमा, शील, सन्तोष, विनय, सदाचार व भक्तिको नहीं भूलना और सदा उदार वृत्ति रखना, रीस करके नहीं बैठना, न निकम्मी बैठना और न कभी किसीसे कुछ मांगना व क्रोधके आवेशमें आकर कभी कटु वचन भी मत बोलना। हठ नहीं करना, छुपकर चोरीसे नहीं खाना और, अकेली कभी कहीं मत जाना। परपुरुषके साथ कभी मत हंसना, न उससे एकांतमें बात करना। परचित परपुरुषों

(समधी, नन्दोई, देवर, बहनोई आदि) से हंसी करने व होली खेलनेकी नीच प्रथा पापी व्यभिचारी जनोंने चलाई है, उससे दूर रहना, क्योंकि यह शीलव्रतको घातनेवाली है. ऐसा स्वच्छन्द वर्ताव दुःखदायी होता है। कहा है—

"महावृष्टि चलि फूट क्यारी, जिमि स्वतन्त्र ह्वै बिगरहिं नारी"

तात्पर्य स्त्रियोंको बालापनमें माता पताके, तरुणावस्था और वृद्धावस्थामें पति और पुत्रोंके अधीन रहना चाहिये।

(३७) बेटी! बहुत-सी स्त्रियां पतिको वश करनेके लिये व सन्तानकी इच्छासे जोगी, जागड़ा, गुनियाँ, जोशी व भेषी आदिकी सेवा करने लगती हैं और उन्हें अपना धन देती हैं। यहाँ तक कि बहुतसी स्त्रियाँ उनसे गण्डा, फूंदरा व तावीज आदि बनवाने तथा झाड़ा-फूंकी करानेके लिये एकान्तमें अकेली अपने ही घरमें या किसी देवी देवताके स्थानोंमें व उनके स्थानोंपर जाकर मिलती और उनके फन्देमे फसकर बलात्कार अपना शीलाभरण गुमा बैठती हैं व कोई-कोई देवी, दिहाड़ी, यक्ष, यक्षिणी, भूत प्रेत, भैरों भवानी, हनुमान, चण्डी, मुंडी, पीर, पैगम्बर और महादिकी पूजा करती हैं, व इन्हें मनानेके लिये समय, कुसमय, ठौर कुठौर, अकेली जाती हैं। वहांपर भी ये दुष्ट पुरुषों-द्वारा सताई जाकर अपना शील और द्रव्य दोनों खो आती हैं, क्योंकि प्रायः ऐसे स्थानोंमे चोर और व्यभिचारी पुरुष प्रकट या लुके-छिपे रहते हैं, जो समय पाकर छक्का पौ कर डालते हैं।

बेटी! इसमें इष्ट-सिद्धि कुछ नहीं होती, केवल धन और

धर्म जाता है। यदि इन जोगी-जांगड़ोंमें पुरुष-वशीकरण और सन्तोनोत्पादन शक्ति होती तो घर बैठे ही पुजते, घर-घर मारे-मारे नहीं फिरते। देवी-देवतामें यह शक्ति होती, तो बंध्याको, कुंवारीको और सदाचारिणी विधवाको भी पुत्र होजाता। सो ऐसा न कभी देखा है और न सुना है। ये सब केवल झूठ पाखण्ड है। तू भूलकर किसीके हजार बहकाने से भी इनके फेर में न आना। कर्मकी गति कोई टाल नहीं सकता है। पतिके वशीकरणका मन्त्र 'पतिकी सेवा' है और यही (यदि शुभ उदय हो तो) सन्तानोत्पत्तिका तावीज है! इसलिये मेरी प्यारी बेटी! तू सब व्यर्थके झगड़ोंको छोड़कर, अपने पतिदेवकी सेवा ही सच्चे मनसे करना, इसीमें तेरा कल्याण है।

(३८) बेटी! तेरा पति उत्तम, कुलीन, सुन्दर, रूपवान, देवतुल्य, सौम्य मूर्ति, सदाचारी, सुशील, पुरुषार्थी और सज्जन पुरुष है सो प्रथम तो तुझे ऐसा कुअवसर ही नहीं मिलेगा जिससे कि तेरे पतिके सम्बन्धमें व्यसनादि सेवन करनेका समाचार सुन पड़े और (दैव न करे कि) किसी प्रकार तेरे पूर्व अशुभ कर्मके उदयसे तेरे पतिमें ऐसा ही कोई दोष कदाचित् उत्पन्न हो जाय, या तुझे उनके प्रति ऐसी शंका उत्पन्न होजाय, तो तू उनसे घृणा, द्वेष, क्रोध व मानादि नहीं करना, क्योंकि तू उनसे जितना द्वेष व घृणादि करेगी; वे तुझसे उतने ही दूर होते चले जायेंगे और व्यसनोंमें फंसते जाएंगे। 'देख, कभी गरम लोहा गरम लोहेसे नहीं कटता है, किन्तु ठण्डेसे ही

कटता है' ऐसा जानकर तू क्षमा व शान्ति धारण करना तथा इस अवसरमें पहिलेसे भी अधिक प्रेम बढ़ाना, ताकि उन्हें तेरी ओरसे शंका न रहने पावे और सुअवसर देखकर मृदुहास्य वचनों में तू उनके वे वाक्य जो उन्होंने तेरे मांगनेपर तेरा पाणिग्रहण करनेके समय दिये थे, स्मरण करा दिया करना, बस यही उनको सुमार्गमें लानेका सच्चा उपाय है। परन्तु बेटी! मैं तुझे निश्चय पूर्वक कहती हूँ कि जो स्त्रियाँ अपने पतिकी तन-मनसे सेवा करतीं और अन्तःकरणसे उनपर सच्चा प्रेम रखती हैं तो उनके पति भी उन्हें प्राणेश्वरी देवी करके हृदयस्थ कर लेते हैं। देख सीता सती प्रतिव्रता थी तो रामचन्द्र भी शीलवान थे। जब सीता हरी गई तो उसके वियोगसे पागल होगये थे। तू यह न जान कि रामने सीताको वनमें छोड़ा था और अग्नि प्रवेश कराया था, इससे उनका सीतापर कुछ प्रेम कम होगया था। नहीं बेटी, वे राजा थे, इसलिये उनको प्रजाके सन्देह निवारणार्थ सीतापर अपने प्राणोंसे भी अधिक प्रेम करते हुए और उन्हें सती जानते हुए भी बनवास और अग्निप्रवेश लाचार हो कराना पड़ा था। पवनञ्जय, सुखानन्द व जयकुमार आदि बहुत महापुरुषोंके चरित्र पुराणोंमें भरे पड़े हैं, जिनसे विदित होता है कि पुरुष भी अपनी सती सुशीला स्त्रियोंको देवी करके मानते हैं। यदि स्त्री चाहे तो अपने पतिको अपनी सेवा तथा प्रेमसे सन्मार्गी और (द्वेष-कलह इत्यादिसे) कुमार्गी बना सकती है। सो हे मेरी दुलारी बेटी! तू उन्हें प्राणेश्वर देव करके ही प्रेम, भक्ति व सेवा करना।

(३६) बेटी ! जब कभी तुझे बहुत खेद पीड़ा व रोगादिक की वेदना अथवा अन्य कुछ भी दैहिक व्यथा उत्पन्न हो, तो तू अपने धैर्य और धर्मसे नहीं डिगना, किन्तु सीता, द्रौपदी, चेलना मनोरमा, मैना, रयनमंजूषा आदि महा सतियोंके चरित्रको स्मरण करना अथवा नर्क व पशुगतिके दुःखोंका चिंतवन करके यह विचार करना कि 'देखो ! इन सतियोंको व उन मुनियोंको कैसे घोर उपसर्ग व कष्ट आते थे, तथा नारकियोंको कितना दुःख है ? मुझे तो उसका असंख्यातवां भाग भी नहीं है।' इत्यादि विचार कर दृढ़ता रखना, समताभावसे सहन करना और योग्य उपचार से उसे दूर करनेका यत्न करना।

'धीरज धर्म मित्र अरु नारी, आपतिकाल परखिये चारी।'

(४०) बेटी ! विभव पानेपर अहंकार न करना और अपने से बड़े, धनी, मानी, ज्ञानी पुरुषोंके चरित्रों व स्वर्गकी सम्पत्ति व वैभवको विचारकर कि 'पुण्यके प्रभावसे इन्द्रादि देवों व राजाओं और अमुक २ सेठोंके कितनी सम्पत्ति व रूप, बल, विद्या, संयम आदि है, सो मेरे तो उसका अंश भी नहीं है।' ऐसा विचारकर शान्त रहना। क्योंकि संसारमें छोटे, बड़े, धनी, निर्धन, मूर्ख, विद्वान् आदिका व्यवहार परस्पर सापेक्ष है। वास्तवमें सब कर्मकृत उपाधियां हैं। इसका मान करना व्यर्थ है। कहावत है—'जबतक ऊँट पहाड़के नीचे नहीं जाता, तभीतक अपनेको बड़ा समझता रहता है।' इसलिये आम्र वृक्षके समान विभवमें नम्र रहना ही उचित है।

(४१) बेटी ! आजकल प्रायः लोगोंमें ईर्षाभाव बहुत देखनेमें आता है। ये लोग दूसरोंको सुखी देख निष्कारण उनमें फोड़तोड़ मचाकर दुःखी करदेते हैं। इसलिये अगर कोई हजार सौगन्ध खाकर भी तुझसे तेरे घरवालोंकी कुछ बुराई बतावे तो कदापि उसे सत्य मत मानना और न ऐसी घृणित बातें सुननेकी इच्छा ही रखना। किंतु उन कहने वालोंको ऐसा मुख बन्द उत्तर देना ताकि वे फिर कभी तुझे ऐसी बातें सुनानेका साहस न करें।

(४२) बेटी ! यदि तू कभी कहीं किसीसे अपने गृहकी भलाई बुराई सुनकर आवे, तो तुरत आकर अपने घरमें प्रकट कर देना ताकि उस पर विचार होकर योग्य प्रबन्ध किया जावे, क्योंकि अपने दोष अपने आपको नहीं मालूम होते। और देख, कभी भी अपने मुँहसे अपनी बड़ाई व दूसरोंकी बुराई मत करना। कितने लोग यांही चिढ़ाने चमकाने व हँसाने आदिके लिये कौतुक रूपसे भी स्त्रियोंको उनके माँ बापकी भलाई बुराई कहने लगते हैं सो तू इससे मनमें खेद मत करना, क्योंकि जिसने बेटी दी है उससे नम्र और कोई नहीं है। संसार में धैर्य (सहनशीलता) बड़ी गुणकारी वस्तु है, सदा उसका अवलम्बन करना।

(४३) बेटी ! तू तो आपही सयानी है। तूने यहाँ सब कुछ देखा व सुना है। आजसे तेरा नवीन संसारमें प्रवेश होता है, इसलिए जो २ बातें मैंने कहीं हैं अथवा तूने देखीं सुनीं हैं उनसे अब तुझे स्वानुभव करनेका समय आया है। अभीतक वे सब

कोरी कथाएँ ही थीं परन्तु अब उनका सच्चा दृश्य तुझे दृष्टि-गोचर होगा। लोग प्रायः थियेटरोंमें नाटक वगैरह देखने रुपया लगाकर जाते हैं परन्तु यह उनकी भूल है। इन्हें इन कृत्रिम भेषधारियोंके कल्पित खेलोंके देखनेसे कुछ लाभ नहीं होसकता, इसके बदले उन्हें गृहस्थाश्रमरूपी रंगभूमिमें रहकर ही संसारके सच्चे स्वरूपका अनुभव करके, सच्चे (आत्मिक-अविनाशी) सुखपर दृष्टि लगाना और इसी नरजन्मसे ही उसे प्राप्त करनेका उद्यम करना चाहिए, यही सार है।

(४४) हे बेटी! अब तू खुशीसे जा। तू आयुष्मती, पुत्रवती, सौभाग्यवती और सीता सावित्री जैसी आदर्श रमणी हो। जा, तेरे लिये सवारी तैयार है समय भी होगया है, इसलिये देरी मत कर। इस प्रकार माताने शिक्षा देकर व पुत्रीके मस्तकपर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया और पुत्री भी माताके चरण स्पर्शकर प्रेमाश्रु गिराती हुई उक्त शिक्षाओंकी मणि-माला कण्ठमें पहिनकर धीरे २ पालकीमें जा बैठी।

(४५) पश्चात् सासु अपने जमाई (दामाद) की ओर देखकर बोली—लालाजी! यह पाद प्रक्षालन करनेवाली दीन टहलिनी आपकी सेवाके लिये दी है, इसलिये आप इसके गुण-दोषों पर विचार न कर अपने बडे कुलका ही ध्यान रखकर इसका जीवन निर्वाह कीजिये। हमलोग आपकी कुछभी सेवा शुश्रूषा करनेमें समर्थ नहीं हुए, न कुछ दहेज (भेंट) ही दे सके हैं सो क्षमा कीजिए, क्योंकि आप बड़े हैं और बड़ोंके यहाँ सबका निर्वाह होसकता है।

"आप बड़े सरदार हौ, जानत हो रस रीति।
ऐसी सदा निबाहियौ, मासो घटे न प्रीति॥"

ऐसा कह सासुने जमाईको नवीन फल (श्रीफल) तथा कुछ रुपया व मुद्रा भेंट देकर विदा किया।

४६) सासुकी नम्र विनती पर जमाईने भी सासुको मिष्ट वचनोंमें सन्तोषकर कहा—'सासूजी। आपने कन्यारत्न दिया सो सब कुछ दिया है। इससे अधिक बहुमूल्य पदार्थ संसारमें और क्या हो सकता है ? जिस प्रकार वह यहां रहती थीं उसी प्रकार वहां भी उनके लिए माताजी उपस्थित हैं। आप कोई चिन्ता न करें। हमलोगोंको सदैव अपने पास ही समझिये। सासूजी! संसारमें सब प्राणी अपने २ गुण-कर्मानुसार ही सुख-दुःख बना लेते हैं। यथार्थमें जीवको सिवाय उसके गुण-दोषों (स्वकृतकर्मों) के कोई भी सुख व दुःख देनेवाला नहीं होसकता, और वे तो हमारी गृहलक्ष्मी ही हैं, तो भी मैं यथा शक्ति उनको सुखी बनानेमें कसर न रक्खूंगा। मुझे स्मरण है कि मैंने जो सप्त वचन विवाह समय आपकी प्यारी पुत्री और अपनी अर्द्धाङ्गनाको दिये थे, उनका भले प्रकार पालन करूंगा—

इस प्रकार जमाईने सासूको सम्बोधन करके उसे प्रणाम किया और पत्नीको लिवाकर ससुरालसे विदा हुआ। पश्चात् देखते २ दम्पति दृष्टिसे अदृश्य होगये। बिचारी माता व स्वजनादि वियोगाकुल हो फिर २ देखते हुए पीछे लौटे। ठीक है—"बेटी अरु गाय, जहं देवो तहँ जाय।"

माताकी शिक्षा—

बेटी ! जब सुसराले जाना, मत करना अपना मनमाना।
करना जो सो सासु सिखावे, वा जेठानी ननद बतावे ॥
जो हों घरमें जेठ जिठानी, करना उनहीकी मनमानी।
उनकी सेवा बन आवेगी, तो तू सुख सम्पति पावेगी ॥
जेठी ननद सासु जेठानी, इन सबको तू समझ सयानी।
उनकी आज्ञा पालन करना, वधू-धर्म यह मनमें धरना ॥
जितने जेठे होवें घरपर, उन्हें समझना पिता बराबर।
उनकी आज्ञा सिरपर धरना, मानो है सुखसे घर भरना ॥
जो सुभाग्यसे हो देवरानी, करना प्रेम बहिन सम जानी।
उसको उत्तम काम सिखाना, अपने कुलकी चाल बताना ॥
देवरको लखना लघु भाई, आदर करना प्रेम जनाई।
उनके दुखमें दुःख मनाना, सुखमें मिल आनन्द बढ़ाना ॥
जब तुम उनसे काम कराना, अपना बड़पन नहीं जताना।
प्रेम सहित धीरे मुसक्याकर, आज्ञा देना शील जताकर ॥
ऐसा करनेसे देवरानी, बात करेगी सब मनमानी।
देवर भी आज्ञा मानेंगे, तुमको गृहदेवी जानेंगे ॥
छोटी ननद बहिन है छोटी, उससे बात न करना खोटी।
प्रेम सहित उसको आदरना, द्वेष विरोध कभी नहिं करना ॥
यदि सुभाग्यवश तेरे घर पर, होवें कोई नौकर चाकर।
उनपर कभी न क्रोध जताना, कभी नहीं दुर्वचन सुनाना ॥
शान्त भावसे आज्ञा देना, जो कुछ कहें उसे सुन लेना।

उनकी उचित प्रार्थना सुनकर, उचित होय सो करना गुनकर ॥
समय समझ कर डाँट बताना, उनको मुँह नहिं कभी लगाना ।
उनके बच्चोंपर सुदया कर, कभी कभी करना कुछ आदर ॥
उत्सव समय उन्हें कुछ देना, आशिष वचन उन्होंके लेना ।
उनके दुखमें दया दिखाना, यों उनको निज दास बनाना ॥
रखना चतुर दास अरु दासी, नेक चलन नीके विश्वासी ।
लोभी रसिक मिजाजी तस्कर, ऐसे कभी न रखना नौकर ॥
ननद जिठानी देवरानीके, बच्चे लखना जैसे निजके ।
शुद्ध प्रेम उनपर नित करना. उत्तम शिक्षा यह मन धरना ॥
जाति विरादरि घर मन भाये, मत जाना तुम बिना बुलाये ।
यदि बुलाय भेजें आदर कर, जाना हुकम बड़ोंका लेकर ॥
पुरा पड़ोस निवासी नारी, आये आदर करना भारी ।
जाते समय प्रेमसे कहना, "आया करो" कभी तो बहना ॥
आपसमें कर कलह लड़ाई, मत करना उनकी कुबड़ाई ।
जो तू घरमें कलह करेगी, दुनियां मुझको नाम धरेगी ॥
इससे मैं तुझको सिखलाती, मत होना कुबुद्धिमें माती ।
काम वही करना दिन राती, जिसको सुन हो शीतल छाती ॥
गृह-कारज निज हाथों करना, इसमें लाज न मनमें धरना ।
घर कपड़े बालक अरु भोजन, स्वच्छ रहें यह बड़ा प्रयोजन ॥
घरको लिपवाना पुतवाना कपड़ोंको बहुधा धुलवाना ।
लड़कोंको अकसर नहलाना, भोजन अपने हाथ बनाना ॥
इतने मुख्य काम नारीके, जो नारी करती है नीके ।

वह सबको प्यारी हाती है, सब पर अधिकारी होती है ॥
बूढा बारा अथवा काई, बीमारीसे व्याकुल होई।
चित दे उसकी सेवा करना, दया धर्म यह मनमे धरना ॥
मत विचारना बुरा किसीका, तो तेरा भी हेगा नीका।
परहितमे तू चित्त लगाना, फल पावागी तब मनमाना ॥
बड़ी सीख यह उरमे धरना, सेवा पति चरणोंकी करना।
तेरा सुख उनके सुखमे है, तरे उनसे प्राण लगे हैं ॥
पतिको भरसक राजी रखना मनमें नाम उन्हींका जपना।
उनकी आज्ञा सिरपर धरना, रूखा उत्तर कभी न देना ॥
देव जिनेन्द्र दयामई, धर्मो, गुरु निर्ग्रन्थ हरें दुष्कर्मा।
श्रद्धा भक्ति सदा इन करना, चार दान दे पातक हरना ॥
कभी भूल मिथ्यात्व न सेवो, ईर्षा द्वेष त्याग तुम देवो।
बेटी दोनों कुलकी लाजा, जैसे रहे करो सो काजा ॥
नारि धमकी कुञ्जी है यह, गुण सम्पति की पूजी है यह।
यह कर्तव्य जिससे बन आवे, साई मनवाछित फल पावे ॥
यह सब बातें चित में धरना, अवहेलना इनकी न करना।
जो इनके अनुसार चलगी, सुखी रहेगी बहुत फलेगी ॥८॥

यह शिक्षा न बिसारियो, गुन बेटी चितधार।
तजो शोक जावो अबै, हर्ष सहित ससुरार ॥
या विधि शिक्षा मातने, दई सुताको सार।
कुसुमवती या बिधि चलें, मूरख देख बिसार ॥

थासे तन, मन, वचनसे, पालो निज कुल धर्म।
'दीप' लहो यश या जनम, परभव पाओ शर्म ॥११॥

"स्वास्थ्योपयोगी मानसिक संयम व उपसंहार"

बहिनो ! क्या यह तुमको मालूम है कि विवाहके पश्चात् ससुराल में जाकर व गृहस्थाश्रममें प्रवेश करनेपर तुमको अपने जीवनमें क्या-क्या करना है ? तुम किन किन बातोंकी उत्तरदाता हो ? क्योंकि प्रायः आजकलकी बहुएं ससुरालमें पहुंचते ही सासु, श्वसुर, देवर, जेठ, जिठानी, ननद तथा अपने पतिको भी अपना आज्ञाकारी बनाकर स्वच्छन्द प्रवर्तनेकी चेष्टा करती हैं। वे सबपर आज्ञा करना, मनोनुकूल अच्छा २ खाना, पहिनना और सुखचैन उड़ाना ही अपना कर्तव्य व जीवनका सार समझती हैं। वे घरमें लड़-झगड़कर वृद्ध सासु, श्वसुर व अन्य कुटुम्बियोंमें फूट उत्पन्न कर अपने पति सहित अलग रहनेमें ही भला समझती हैं। उनकी समझ है कि अब हम अपने मां बापको छोड़कर आई हैं तो पतिको क्यों उनके मां बापके साथ रहने दें ? इन सबकी सेवा कौन करे ? इत्यादि, यहां तक कि कोई २ तो अपने पतिको लेकर अपने पीहर (मां बापके घर) चली जाती है। परन्तु यह केवल उनकी भूल है, इससे उन्हें न तो सुख ही मिलता है, और न यश ही। किंतु कायरताका पोटला सिरपर पड़कर अपयश और दुःखका स्थान अवश्य बन जाती हैं। इसलिये यदि तुम्हें अपने

घरको स्वर्ग तुल्य बनाकर देवों सरीखे सुख भोगना और यश प्राप्त करना है तो माताके उपदेशको ध्यानमें रखकर नीचे लिखी कुछ शिक्षाओं पर भी ध्यान दो और सच्ची गृहिणी बनकर गृहस्थाश्रम सफल करो और सुखी बनो।

(१) बेटियो और बहिनो। ज्यों ही तुम ससुराल जाओ, त्योंही वहां अपने सब घरके लोगोंकी प्रकृति जानलो कि किसका स्वास्थ्य किस प्रकार ठीक रह सकता है. यही सबसे पहली बात तुम्हारे लिये होगी। परन्तु ध्यान रहे कि केवल शारीरिक स्वास्थ्यसे आरोग्य लाभ नहीं होता किन्तु उसका मनसे भी घनिष्ठ सम्बन्ध है अर्थात बिना मानसिक संयमके शारीरिक आरोग्य कदापि नहीं रह सकता।

(२) आरोग्य केवल औषधिसे, शुद्ध खानपानसे, स्वच्छ हवा प्रकाशादि और सुगंधित वस्त्रोंसे ही नहीं मिलता है, किन्तु नीचे लिखी बातें भी बहुत आवश्यक हैं जिनपर पूरा ध्यान रखना चाहिये।

बहिनो! वह मानसिक संयम काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मात्सर्य इन अन्तरंग ६ शत्रु समूहों पर विजय प्राप्त करनेसे प्राप्त होता है। अथवा अपनी विद्वत्ता, पूजा, कुल, जाति, रूप और धनादिके अभिमान (मद) का त्याग करनेसे, दूसरोंके गुण और सम्पत्ति आदि देखकर उनसे ईर्ष्या व द्वेष न करनेसे एवं दूसरोंका बुरा चिन्तवन और हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील व तृष्णाके त्याग करनेसे प्राप्त होता है। एवं अहिंसा (अपने समान दूसरों-

में कुशलवृत्ति का चिंतवन) सत्य—हित, मित, और प्रियभाषण अचौर्य ब्रह्मचर्य और तृष्णाके त्यागसे सुरक्षित एवं पल्लवित—वृद्धिगत होता है।

बहिनो ! इससे मानसिक और आत्मिक शान्ति प्राप्त होती है. जो कि शारीरिक आरोग्य और ऐहिक व पारलौकिक सुखोंकी जननी है। इन सबमें अधिक महत्वकी और अत्यावश्यक बात यह है कि 'मनकी शांति रखना' इसीमें सब बातें समाई हैं, इसलिये इसी सम्बन्धमें कुछ थोड़ीसी बातें नीचे लिखी जाती हैं।

(क) अपने घरमें किसीसे कभी ऊंचे स्वर व क्रोध से गर्व व मानसे व कटाक्ष करते हुए कपट भरे, कठिन, कड़ुवे वचन नहीं बोलना।

(ख) यदि तुमको कोई कटुक वचन क्रोध व मानके वश होकर कहे भी तो तुम उन्हें शांतिसे सुनकर अनसुने कर दो। क्योंकि अग्निके बुझानेके लिये पानी ही डाला जाता है न कि ईंधन। इसलिये तुम भी उस क्रोधरूपी अग्निमें क्षमा, शान्ति व सहनशीलता-रूपी पानी डालकर बुझा दो और नम्र (मिष्ट) वचनरूपी वायुमें उड़ा दो। क्योंकि वह क्रोधाग्नि उत्तरमें कटुक वचन कहने, तथा क्रोध व रीस करनेसे और भी धधकती है। यहां तक कि वह कभी २ घरका घर जला डालती है। यह बड़ी भारी आरोग्यताकी घातक है।

(ग) बहिनो ! वशीकरणका नाम तुमने सुना होगा और तुम्हारे मुंहमें इस नामसे पानी भी भर आया होगा

परन्तु तुमने सुना होगा कि लोग प्रायः ऐसा कहने लगते हैं कि न मालूम इस बहूने क्या जादू कर रक्खा है? जिससे कि सास, ससुर, जेठ, देवर, पति, ननद आदि सासरे मायके सभी इसका कहना मानते हैं। यह जितना पानी पिलाती है, सब उतना ही पानी पीते हैं, इत्यादि। सो वह वशीकरण मन्त्र, सिवाय मिष्ट भाषणके और कुछ नहीं है। कहा है—

सबके मन हर लेत हैं, तुलसी मीठे बोल।
यही मन्त्र इक जानिये, वशीकरण अनमोल॥
कागा किसको धन हरे, कोयल काको देत।
केवल मीठे वचनसे, जग अपनो कर लेत॥

(घ) बहिनो! तुम साक्षात् प्रेमकी मूर्तियाँ हो, इसलिये तुम सर्वदा प्रसन्न चित्त रहो, ताकि सब लोग तुमसे प्रसन्न रहें। स्मरण रक्खो कि सांठा (गन्ना) बोओगी तो मीठा, और नीम लगाओगी तो कड़ुआ रस पाओगी। बबूल बोनेसे कांटे ही फलते हैं। दर्पणमें जैसा मुंह करके देखो वैसा ही प्रतिबिम्ब दृष्टि पड़ेगा तात्पर्य यह है कि यदि तुम प्रसन्न रहोगी तो सब प्रसन्न रहेंगे।

(ङ) बेटियो! अदेखाई व ईर्षाभाव सर्वथा आरोग्यताके घातक हैं। जिस घरमें इनका प्रवेश हुआ कि फिर उसे शत्रुकी आवश्यकता नहीं रहती है। वहां परस्पर एक दूसरेको देखकर जलती भुनसती रहती हैं और इसी प्रकार बीमार होकर प्राणोंसे

हाथ धो बैठती हैं। इसलिये कभी भी अदेखाई ईषाभाव नहीं करके, परोदय देखकर प्रसन्न होना चाहिये।

(३) बहिनो! इस प्रकार प्रेम और सरल स्वभावसे तुम सबके साथ वर्ताव करोगी तो तुम्हारे मनकी शान्तिके साथ २ तुम्हारे शरीरकी निरोगता भी रहेगी, तुम अनेक रोगोंसे बची रहोगी। झगड़े टंटेसे ही रोग उत्पन्न होता है और फिर जीवन विषके समान दुःखरूप होजाता है।

(४) मनकी शान्ति अर्थात् आरोग्यताके लिये मुझे कई बातें कहनी हैं। उनमेंसे प्रथम स्वच्छता व सुघड़ता है। जितनी शान्ति वस्त्रालंकारोंसे नहीं होती उतनी स्वच्छता व सुघड़तासे ही होती है। इतना ही नहीं किन्तु वह अनेक रोगोंसे भी बचाती है।

(५) तुम अपना शरीर, अपने कपड़े, अपना गृह तथा गृहकी सम्पूर्ण वस्तुएं जैसे बर्तन वगैरह नित्य स्वच्छ रखना। बैठक व रसोईघर आदि स्थान नित्य स्वच्छ रखना। पहिरनेके व हाथ-मुंह पोंछनेके कपड़े जैसे रूमाल, अंगोछे, गंजी फराक, धोती आदि नित्य धोकर स्वच्छ रखना। इसके सिवाय अन्य कपड़े चादर, कोट, कुरते, आदि जो मैले हो गए हों, उनको धोबीके पास धुला लेना अथवा स्वयं धो लेना। बच्चोंको रोज नहलाना और उन्हें धोए हुए स्वच्छ कपड़े पहिराना चाहिये।

(६) घरका आंगन, मंजोटा, घिनौंची, पनाला और हौज आदि अपने सामने व आप ही स्वयं साफ करना; क्योंकि इनसे बदबू फैलकर हवाको बिगाड़ देती है, जिससे बीमारी फैल

जाती है जिस प्रकार कि दस्त न आनेसे पेट साफ न होकर बेचैनी होजाती है और स्वास्थ्य बिगड़ जाता है, उसी प्रकार घर भी साफ न होनेसे बिगड़ जाता है।

(७) घरमें न खाने पीनेकी वस्तुएँ अपने आप नित्य शुद्ध (संशोधन) करना, यह तुम्हारा मुख्य काय है; क्योंकि बाजारसे जो सामान आता है, उसमें प्रायः धूल, मिट्टी कंकर, भूसी मूसाकी लेड़ी तथा और भा ऐसी ही बहुतसी हानिकारक अपवित्र वस्तुएं मिली रहतो हैं। अथवा घरमें रखा हुआ अनाज आदि भी घुन जाता है। उसमे लट, कुन्थुआदि जीव पदा होजाते है। कीड़ी मकोडियां चढ़ जाती हैं। ऐसी दशामें बिना शोधे, वीने, दलने, पीसने, कूटने रांधने, व खानेसे तुरन्त रोग उत्पन्न हो जाता है। इसलिये जहांतक होसके बाजारू चीजें विना धोये सुखाये काममें मत लाओ।

(८) पकाया हुआ अनाज बहुत जल्दी बिगड़ने लगता है, इसलिये वासी भोजन नहीं रखना न किसीको खिलाना। नरम वस्तुयें कि जिनमें पानीका भाग अधिक होता है, जल्दी चलितरस होजाती हैं, इसलिये ऐसी वस्तुयें तुरन्त तैयार करके खाना व खिलाना चाहिए। तैयार किये हुए भोजनके पदार्थ कभी उघाड़े नहीं रहने देना चाहिये, क्योंकि मक्खी आदि जीव अपने मुंह व पांखों द्वारा अनेक अपवित्र और विषैले पदार्थ लाकर भोजनमें छोड़ देते हैं। चौकेमें सफाई रखनेसे मक्खियां वहां नहीं आवेंगी इस प्रकारसे प्रबन्ध रक्खो।

(९) रसोई करना यह तुम्हारा मुख्य काम है, इसलिये इस काममें किसी प्रकार आलस्य न करके अच्छे प्रेम और उत्साहके साथ कि जिससे तुम्हारे भोजनकी प्रशसा होवे, किया करो ऐसी रसोई बहुत स्वादिष्ट और हितकारी होती है।

(१०) किसीको जिमाते हुए भोजन बड़े प्रेम और शुद्धभावसे कि "यह भोजन सबको हितकारी हो।' परोसना, क्योंकि विना मनसे व कुभावोंसे परोसा हुआ भोजन खानेवालेको विषका काम करता है। तात्पर्य-परोसनेके समय जैसा भाव माता पुत्रके प्रति रखती है, ऐसा रखना चाहिये।

(११) भोजन तैयार करनेके सबधमें एक आवश्यक बात यह भी है कि पुरुषोंका भोजनाचार प्राय स्त्रियों ही होती हैं। ये उन्हें जैसा पवित्र, अपवित्र, स्वादिष्ट, षट्रसी, नीरस चटपटा या सादा भोजन बनाकर खिलाव जैसा ही उन्हें खाना पड़ता है और कभी कभी प्रकृति विरुद्ध कच्चा, चटपटा व निरुत्साहसे बनाया हुआ भोजन हानि भी पहुचा देता है। इसलिये सदैव ऋतु, उद्यम, प्रकृति देश और रुचिके अनुसार फेरफार करते हुए, सादा भोजन बनाना चाहिये कि जिससे शरीर आरोग्य रहे, मन पर किसी प्रकारका बुरा प्रभाव नहीं पड़ने पावे और कभी क्लेश उठानेका अवसर न आवे। मनके ऊपर भी भोजनका बहुत प्रभाव पड़ता है।

(१२) अधिक खारा खट्टा, चरपरा व मीठा भोजन छोटे-बड़े सबकी आरोग्यताको हानिकारक है। यह पाचनशक्तिको

बिगाड़ता; लोहूको तपाता, आंतोंके रसोंको बिगाड़ता, और बहुतसे चर्मरोगोंको उत्पन्न कर देता है। ऐसे भोजनसे खट्टी डकार, हिचकी, पेटमें पवनका रुकना और मरोड़ आना, शरीर व गलेमें खुजली आना, दस्त व पेशाबके स्थानमें वा पेटमें पलापनका होना, अरुचि रहना इत्यादि, ये सब रोग तुम्हारी पाकशालामेंसे ही निकलते हैं। इसलिये सादा और प्रकृति अनुसार स्वादिष्ट भोजन बनाना चाहिये।

(१३) प्रायः लोगोंमें बलात्कार खींचतान करके अधिक भोजन खिलानेकी कुचाल पड़ रही है। इससे हितके बदले वह अन्न सन्न (अजीर्ण आदि बीमारी) उत्पन्न करके उल्टा अहित कर देता है। इसलिये अधिक खींचतान नहीं करना वैसे भूखा भी नहीं रखना चाहिये; क्योंकि बहुतसे लोग संकोचवश भूखे भी रह जाते हैं इसलिये उनसे अवश्य बारम्बार पूछना चाहिए, और जिनकी प्रकृति भोजनका अन्दाज तुम्हें मालूम हो उनको आग्रह न करके विचारके साथ ही परोसना चाहिए।

(१४) बहिनो! तुम घरका भूषण और अन्नपूर्णा हो तुम्हारे सिवाय कोई लकड़ी, पत्थर, धातु व मिट्टीकी मूर्तिका नाम अन्नपूर्णा लक्ष्मी, गृहदेवी या कुलदेवी नहीं है। तुम्हारे हाथमें पुरुषोंकी जीवनडोरी है, इसलिये तुम सच्ची गृहिणी बनो। स्वयं उत्तम मार्गका अवलम्बन करती हुई रानी चेलना आदिके समान अपने पति व अन्य पुरुषोंको भी सन्मार्गी बनाओ, यही तुम्हारा मुख्य कर्तव्य है।

(१) घरमें यदि कर्मवश कोई बीमार पड जावे, तो तुम तुरन्त होशियारी, प्रेम, दया और उत्साहसे उसकी सेवा-टहल करनेमें लग जाओ। यह काम प्रायः हरजगह दवाखानों (होस्पिटल-औषधालय) में परिचारिका (नर्स) ही करती है, कारण पुरुषोंसे स्त्रियोंका स्वभाव सहज ही नम्र व दयालु होता है। इसलिये घरमें तुम्हीं परिचारिका हो। तुम्हें इस काममें निपुण होना चाहिए, और इस विषयकी पुस्तकें पढ़कर तत्सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करना तुम्हारा कर्तव्य है; क्योंकि यह काम जैसा आवश्यक है वैसा ही जोखम भरा और जवाबदारीका भी है। तुम रोगी की सेवाका पाठ मैनासुन्दरीसे सीखो। देखो, उसने अपने कोढ़ी पति राजा श्रीपालकी कैसी सेवा की थी, जिसके प्रभावसे उसका पति कामदेव समान निरोग होगया था।

(१६ बामारीके समय बहुत नरनारी व्यर्थ ही भ्रमोत्पादक बात कल्पना करके बीमारको दवा आदि उपचार नहीं करते और धूर्तों (ठगों) के फन्देमें फंसकर झाड़-फूंक (मन्त्र-जन्त्र) कराते और इस प्रकार बीमारको हाथसे खो बैठते हैं। इसलिये तुम कभी ऐसे भोले लोगोंके बहकानेमें न लगो। और न कभी पाखंडियोंमें द्रव्य गमाओ; किन्तु सदा अपने व आसपासवालोंके घरोंकी रक्षा करना तुम अपना कर्तव्य समझो।

(१७ घरमें कोई बीमार हो तो बारीकीसे उस बीमारीकी जड़ ढूंढ निकालो। प्रायः खराब हवा, अधिक शीत, अधिक उष्णता, खराब पानी, प्रकृति विरुद्ध अनुपसेव्य, अभक्ष व

अनिष्ट अपवित्र या कच्चा भोजन, मर्यादा रहित भोजन, अधिक भोजन, कुसमय व रात्रि-भोजन ये सब रोग उत्पन्न होनेके कारण हैं इसलिये इस ओर ध्यान रक्खो।

(१८) हवा, पानी उजेला और पथ्य योग्य होनेसे ही औषधि काम देती है। अन्यथा कुसंयोगसे कभी अमृतयोग्य औषधि भी विषका काम कर जाती है; इसलिये उक्त चारों बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिये। इसके अतिरिक्त एक बात और ध्यानमें रखनेकी यह है कि तुम्हें रोगीका विश्वास करके उसके पास खाने-पीनेकी वस्तु कभी न रखना चाहिये, क्योंकि वह न मालूम कब क्या उठाकर खाले और रोग बढ़ जाय; क्योंकि रोगीका चित्त डांवाडोल रहता है, इससे कभी २ वह घबराकर जानबूझके कुपथ्य कर बैठता है, इसलिये उसकी बहुत चौकसी रखनी चाहिये।

(१९) बीमारके कमरेमें मन प्रसन्न करनेवाली अच्छी २ तस्वीरें उसके सामने लटकाना चाहिये, जिससे उसका चित्त उनमें लगा रहे। और वह रोगपर पुनः २ विचार न करने पावे। क्योंकि निरन्तर रोगका विचार करते रहनेसे कभी २ रोगीका साहस घट जाता है, दवासे विश्वास उठ जाता और वह रोगको असाध्य मानकर निरन्तर चिंता चितामें भस्म होकर फिर कभी स्वास्थ्य लाभ नहीं कर सकता।

(२०) रोगीके पास बैठकर कभी कोई कायरता भय व शोकोत्पादक बात नहीं करना चाहिये, न उससे कभी यह कहना

चाहिये, कि तुम्हारा रोग असाध्य है; किन्तु सदैव उसे मधुर वचनों द्वारा सन्तोष और साहस बन्धाते रहना, क्योंकि ऐसा न करनेसे कभी रोगी घबराकर प्राण तक छोड़ देता है। इसलिये सदैव दिल बहलानेवाली उत्तम पुरुषोंकी कथाएँ, धार्मिक उपदेश, तत्वचर्चा, वैराग्य भावना, ईश्वरके गुणानुवाद, कर्म और जव-का स्वरूप और उनसे उसके छूटनेका उपाय इत्यादिकी चर्चा करते रहना चाहिये ताकि रोगीका लक्ष्य रोगकी ओर जावे ही नहीं। वेदना हटानेका यह बड़ा भारी उपाय है।

(२१ सवेरे उठकर घरके सब किवाड़ खोलकर प्रत्येक स्थानमें नवीन हवा और सूर्यका प्रकाश पहुँचाना चाहिये; क्योंकि जिस घरमें हवा और प्रकाश बराबर नहीं पहुंचाया जाता है उस घर में रहनेवाले और अधिकतर स्त्रियां प्रायः पीली पड़ जाती हैं और सदैव रोगसे पीड़ित बनी रहकर वैसही निर्बल सन्तान उत्पन्न करती है, इसलिये हवा और प्रकाश सब मकानमें पहुँचाना अत्यावश्यक है। रात्रिको ऊपरके भागमें रहनेवाली, जालीदार खिड़कियां हवाके लिये सदैव खुली रखना चाहिये ताकि सदव स्वच्छ हवा आती जाती रहे और पक्षी तथा चोर आदिका भी भय न रहे।

(..) कभी कभी गृहकी व आसपास मुहल्लाकी हवा बिगड़ जानेपर उसे कुछ समयके लिये छोड़ देना चाहिये, अथवा हवा शुद्ध करनेवाले सुगन्धितपदार्थोंसे हवन कर पवनशुद्धि करना चाहिये।

(२३) जिस प्रकार हवा आवश्यक है उसी प्रकार पानीका भी ध्यान रखना चाहिये। पानी उत्तम जलाशयसे जहां मैला आदि वस्तुएँ न पड़ती हों, वहांसे मोटे कपड़ेके दो पुर्त कर उससे छानकर लाना चाहिए और जीवानी उसी जलाशयमें पहुंचाना चाहिए। पानीका बतन भूमिसे ऊंचाई पर रखना चाहिए। पानी में जूठे बासन नहीं डुबाना चाहिये। पानीके वर्तन सदैव अन्दर से खूब खरोंचकर मांजना व धोना चाहिए। पीनेके समान नहाने-धोनेके लिये भी शुद्ध छना हुआ पानी आवश्यक है। मैले-कुचैले हाथों व अपवित्र शरीरसे पानी नहीं लेना चाहिये, और पानी छाननेका छन्ना मैला व फटा हुआ नहीं रखना चाहिये, किन्तु सफेद स्वच्छ गाढ़ेका होवे।

(२४) अधिक सोना, दिनको सोना व नियमानुसार न सोना, सवेरे सूर्योदयके पीछे बहुत समय तक सोते रहना और रात्रिको विशेष जागना भी स्वास्थ्यको हानिकारक है।

(२५) निकम्मे बैठे रहनेसे भी शरीरमें प्रमाद उत्पन्न होकर अनेक रोग उत्पन्न होकर अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। इस-लिये मानसिक व शारीरिक उभय प्रकारके रोगोंसे बचनेके लिये कभी भी निरुद्यमी नहीं रहना चाहिये। आजकल बहुतसे पुरुष अपनी स्त्रियोंसे घरका काम (कूटना, पीसना, झाड़ना, बटोरना रोटी बनाना, बच्चोंको सम्हालना इत्यादि) न कराकर उन्हें पुरुषोंके समान टेनिस, किरकिट, हाकी आदि खेल खिलाकर व्यायाम कराना चाहते हैं परन्तु यह उनकी बड़ी भूल है। इससे

घरका काम ठीक न होकर बच्चोंकी सम्हाल भी ठीक नहीं होती। घरका खर्च बढ़ जाता है और छोटे-छोटे कामोंके लिये भी पराधीन होजाना पड़ता है। इसके सिवाय स्त्रियोंकी लज्जा भी नष्ट होजाती है। इसलिये कूटना, पीसना, दलना, झाड़ना, पानी भरना, रोटी करना इत्यादि कार्य करना ही उत्तमोत्तम व्यायाम है। इससे एक पंथ दो काज होते हैं। घरका कार्य उत्तमतासे हो, द्रव्य बचे और स्वास्थ्य अच्छा रहे, समयका भी सदुपयोग होवे। इसलिये घरके कामोंसे निवृत्त होनेके बाद शिक्षाप्रद धार्मिक व नैतिक पुस्तकोंका स्वाध्याय करना चाहिये व बच्चोंको बहलाते हुए शिक्षा देनी चाहिए, ईश्वरका भजन करना चाहिए अथवा रहँटिया चलाकर सूत कातना, कपड़े सीना, बुनना आदि कला-कौशल सम्बन्धी शिक्षा लेना चाहिये और यदि अवकाश हो तो कभी-कभी अपनी सास आदि गुरानियोंके साथ बाहर खुली हवामें भी जाना चाहिये। परन्तु तो भी घरू कामोंको अपने आप करनेकी अपेक्षा और कोई भी उत्तम व्यायाम नहीं हो सकता है।

(२६) बहिनो और बेटियो! मेरा यह सब कहनेका तात्पर्य यह है कि आरोग्यता प्राप्त करनेके लिये सबसे प्रधान कारण चित्तकी प्रसन्नता है, इसलिये वे कारण जिनसे अपना व परका चित्त प्रसन्न रहे, यथासंभव मिलाते रहना चाहिये।

(२७) स्त्रियोंको ऋतु (मासिक) धर्म पालन करना अत्यावश्यक है। प्रायः बहुतसी स्त्रियां इन दिनोंमें घरके सब काम-

काज करती हैं, सिवाय रोटी पकानेके कूटना, पीसना, पानी भरना, कपडे धोना, झाड़ना, लीपना, वासन मांजना यहां तक कि किसीके घर निमन्त्रणमें जीमने जाना, गाना, बजाना, अंजन-मंजन आदि शृंगार भी करती हैं। ऐसा करना सर्वथा वर्जित है इससे सन्तान पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। देखो, बरी, पापड़ आदि अचेतन पदार्थोंकी इनकी दृष्टि मात्रसे क्या दशा होती है ? इसलिये इनको इन दिनोंमें उक्त सब कामोंसे अलग ही रहना चाहिए। अर्थात् ४ दिन तक एकान्त स्थान (किसी हवादार कोठरी) में ही बिताना चाहिये और अपने भोजनके बर्तन व ओढ़ने-बिछानेके कपड़े बिल्कुल अलग रखना चाहिये । पश्चात् पांचवें दिन स्नान करके घरका काम करना उचित है । जिस घरमें रजोधर्मकी क्रिया बराबर नहीं पलती है, उस घरमें व्रती, श्रावक व मुनि आदि सत्पात्रोंके आहारकी विधि नहीं बन सकती है। इस विषयमें अन्य श्रावकाचार व वैद्यकके ग्रंथोंमें बहुत विचार किया गया है, वहांसे देखना चाहिये। यह बात स्वास्थ्यके लिये भी बहुत आवश्यक है।

(२८) गर्भवती स्त्रियोंको उपवासादि व्रत नहीं करना चाहिये और न मनमाने खट्टे, चटपटे, कडुवे आदि पदार्थ खाना चाहिये। क्रोध, आलस्य, विकथा, कलह, मिथ्याभाषण, चोरी, कपट, मैथुन आदि निंद्यकार्य नहीं करना चाहिये । इससे गर्भस्थ बालकको बहुत कष्ट पहुँचता है और बुरा प्रभाव पड़ता है तथा अंगहीन व रोगी दुःस्वभावाली सन्तान होती है।

(२९) ऋतुकालमें गर्भाधान होनेसे भी विकल अंग व दुःस्वभाववाली असदाचारी सन्तान होती है। अतएव कमसे कम ५ दिन अवश्य ही बचा देना चाहिये।

(३०) प्रायः बहुतसी स्त्रियां जब कभी घरसे बाहर कहीं जीमन आदिके लिये अथवा मेले ठेलेमें जाती हैं तो बहुतसे वस्त्राभूषणोंसे सुसज्जित होकर (यदि घरमें न हों तो मांगकर भी पहिन) जाती हैं जो उचित नहीं हैं, परन्तु जब वे घर आती हैं तो अपने पतिके सन्मुख मैले कुचैले कपड़े पहिन कर आभूषण रहित आती हैं। इससे ही उनके पति उनसे घृणा करने लगते हैं। इसलिये स्त्रियोंका मुख्य कर्तव्य है कि जब वे कहीं बाहर जाव, तब साधारण वस्त्राभूषण पहिनकर जावें, और जब पतिदेवके सन्मुख जावें (यदि पति घर हो तो रात्रि समय) तो संपूर्ण शृंगार करके जावें, जिससे आराध्य पतिका चित्त उन्हींके पास बंध जावे और अन्यत्र न जाने पावे। शृंगार वास्तवमें पतिहीके लिये होता है, न कि औरोंको दिखानेके लिये।

(३१) यदि पति विदेशमें हो, तो भी स्त्रियोंको शृंगार नहीं करना चाहिये। तथा घरसे बाहर अत्यन्त आवश्यकता होनेपर भी बिना किसी विश्वस्त गुरुजनको साथ लिये कदापि न जाना चाहिये।

३२) अज्ञानतावश बहुतसी पुत्रियां अपने गुरुजनों (माता, पिता, मामा, बड़ा भाई, काका, बड़ी भाभी, मौसी, फुआ, फूफा, काकी आदि) से अपने पैर पुजवाती हैं यह उनकी बड़ी भूल है।

इसलिये इन्हे चाहिये कि अपने गुरुजनोंसे चाहे वे पितापक्षके होवें चाहे श्वसुर (पति) पक्षके हों, सबके स्वय पाव पूजें (पावा ढोक करे) ।

(३१) अन्तिम निवेदन य ी है कि गृहस्थाश्रम एक बड़ा भारी वृक्ष है । इसलिये इसकी छायामें आनेवाले व इसका आश्रय लेनेवाले सब जीवोंका यह हितकारी व मनावाछित फलदाता होना चाहिये । तात्पर्य यह है कि परोपकार, दान, अतिथिसेवा देवार्चन पठनपाठनादि कार्योंसे गृहस्थाकी शोभा होती है जैसाकि निम्नलिखित श्लोकसे विदित होता है, इसलिये उसपर ध्यान देना चा हये —

सानदं सदन सुताश्च सुधिय कान्ताऽमृतं भाषिणी ।
इच्छा ज्ञानधन स्वयोषि त रतिश्चाज्ञापरा सेवका ॥
आ त॰य जिनपूजन प्रतिदिन मिष्टान्नपानं गृहे
साधो सगमुपासते हि सतत धन्यो गृहस्थाश्रम ॥

अर्थात्—जिस घरमे नित्य आनन्दका वास हा (सब प्रसन्न चित्त हों) पुत्र बुद्धिमान हों स्त्री मिष्टभाषिणी हो, ज्ञान ही जहा धन हो पुरुष अपनी स्त्रीपर प्रेम करनेवाला हो, सेवक आज्ञाकारी हो, जहा अतिथियोंका सत्कार (दान) होता हो, जिसमें जिन भगवानका पूजन होता हो, जहाँ मिष्टान्न (स्वादिष्ट शुद्ध) भोजन बनता हो, और जहा साधुओंका समागम रहता हो, वह घर (गृ स्थ श्रम) धन्य है ।

प्रिय बन्धुओ और बहिनो तथा बेटियो । कहाँ हैं आज वे

माताएं जो अपनी बेटियोंको उक्त प्रकार शिक्षण देती थीं ? हाय ! आज इस आर्यावर्तमें द्विज वर्णोंमें भी ऐसी महिलारत्नोंका एक प्रकारसे अभाव सा ही देखनेमें आता है। कहाँ गई सीता, द्रौपदी, अञ्जना, मैना व मनोरमा ? हाय भारतभूमि ! आज तू ऐसी सतियों व रामचन्द्र, हरिश्चन्द्र, विक्रम जैसे नररत्नों व उमास्वामी, समन्तभद्र अकलङ्क आदि धर्मप्रचारकोंको खोकर ही गारत हो रही हैं।

हे भारतके सभ्य नरनारियो ! जागो ! जागो देखो, एक पहिये से रथ नहीं चलेगा, इसलिये स्थान स्थानपर पुत्र और पुत्रियोंकी पाठशालाएँ खालो आश्रम खालो, रीति नीति व सद्धर्म प्रचारकी शिक्षाका घर-घरमें प्रचार करो, ताकि ऐहिक सुखोंकी प्राप्ति हो, और पारलौकिक सुखोंके निकट भी पहुंच सको। इस समय हमको पुरुषों जैसे सदाचार व्यापार आदिकी शिक्षा देना अभीष्ट है; उसी प्रकार स्त्रियोंमें भी कुल व्यवहार गृहस्थाश्रम सम्बन्धी सब प्रकार शिक्षा देना आवश्यक है। उन्नति या अवनतिका एक प्रधान कारण स्त्रियोंको समझना चाहिये।

❀ ✱ ❀

वीरसेवामन्दिरके प्रकाशन

१ आप्तपरीक्षा—स्वोपज्ञटीका और अनुवाद सहित ८)

२ बनारसीनाममाला—हिन्दी शब्दकोष, शब्दानुक्रम ।)

३ श्रीपुरपार्श्वनाथस्तोत्र—हिन्दी अनुवादादि सहित ॥।)

४ अनित्य भावना—हिन्दी पद्यानुवाद और भावार्थ सहित ।)

५ उमास्वामी श्रावकाचार—परीक्षा ऐतिहासिक प्रस्तावना सहित ।)

६ प्रभाचन्द्रका तत्वार्थ सूत्र—अनुवाद तथा व्याख्या सहित ।)

७ सत्साधुस्मरणमंगलपाठ—श्रीवर्द्धमान और उनके बादके २१ महान् आचार्योंके १३७ पुण्य स्मरणोंका महत्त्वका संग्रह हिंदी अनुवाद सहित ॥)

८ अध्यात्मकमल मार्तण्ड—हिन्दी अनुवादादि सहित १॥)

९ शासन-चतुस्त्रिंशिका—(तीर्थ परिचय) हिन्दी अनुवादादि सहित ॥।)

१० विवाहसमुद्देश—विवाहका मार्मिक और तात्त्विक विवेचन, उसके विरोधी विधिविधानों एवं विचार-प्रवृत्तियोंसे उत्पन्न हुई कठिन और जटिल समस्याओंको सुलझाता हुआ। ॥)

११ न्यायदीपिका—(महत्त्वका नया संस्करण)—संस्कृत टिप्पणी हिन्दी अनुवाद, विस्तृत प्रस्तावना और अनेक उपयोगी परिशिष्टोंसे अलंकृत सजिल्द ५)

१२ पुरातन जैन वाक्यसूची—(जैन प्राकृत पद्यानुक्रमणी अनेक उपयोगी परिशिष्टोंके साथ ६४ मूल ग्रन्थों और ग्रंथकारोंके परिचयको लिये हुए विस्तृत प्रस्तावनासे अलंकृत सजिल्द १५)

१३ स्वयम्भूस्तोत्र—समन्तभद्र भारतीका प्रथम ग्रन्थ, विशिष्ट हिन्दी अनुवाद, छन्द परिचय और महत्वकी प्रस्तावना सहित १)

१४ जैन ग्रन्थप्रशस्ति संग्रह—संस्कृत प्राकृतके कोई १५० अप्रकाशित ग्रन्थोंकी प्रशस्तियोंका मंगलाचरण सहित अपूर्व संग्रह, उपयोगी परिशिष्टों तथा अंग्रेजी-हिन्दी प्रस्तावनाओंसे युक्त ४)

सस्ती ग्रन्थमालाके प्रकाशन

१ रत्नकरण्डश्रावकाचार सजिल्द लगभग ८०० पृष्ठ
(मूल समन्तभद्राचार्य, टीका पं० सदासुखदासजी — ३)

२ मोक्षमार्गप्रकाशक सजिल्द लगभग ५०० पृष्ठ (पं० टोडरमल जी, लेखक की स्वहस्तलिखित प्रतिसे सशोधित — २।)

३ जैन महिला शिक्षासग्रह पृष्ठ २४० — १)

४ सुखका झलक पृष्ठ १६० पूज्य वर्णीजी के प्रवचनोंका सुन्दर सकलन) — ॥=)

५ श्रावकधर्मसग्रह पृष्ठ २४० प० दरयावसिंह सोधिया श्रावकोपयोगी पुस्तक — १)

६ सरल जैनधर्म पृष्ठ ११२ (बालकोपयोगी पुस्तक — ।=)

७ छहढाला पृष्ठ १०० प० दौलतरामजी कृत — ।)

८ पद्मपुराण सजिल्द बडा साइज पृष्ठ ८०० (मूल रविषेणाचार्य, प० दौलतराम जी कृत भाषा — ६।)

१५)

इन ८ ग्रन्थोंके पूरे सेटकी लागत (मूल्य १५) रुपया है। परन्तु जो सज्जन पूरा सेट लेना चाहें उन्हे १०) रुपया मे दिया जावेगा, और जो सज्जन पद्मपुराण न लेना चाहें उन्हे सिर्फ ५) रुपया मे दिया जावेगा। किन्तु पोस्टेज खर्च इससे अलग होगा।

मैनेजर—

सस्ती ग्रन्थ माला, वीर सेवा मन्दिर ७/३३ दरियागंज, देहली।